04 - एक दिन, दो घर

05 - भारत में कला विद्यालय और समय से द्वंद्व

06 - छीनी नहीं जा सकती है बंगाल से उसकी पहचान

07 - फिल्मों में 'राम' का चेहरा और विवाद

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 03 मई, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 210, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

व्यस्तता

फोटो: गिरीश शर्मा

सुप्रभात

सूख गया है

तालाब का कंठ

उसके पास खड़े पेड़ पौधे उसकी

ओर झुक गए हैं उसको जिलाए

रखने के लिए

हवा कर रहे हैं

उनके पत्ते झरते हैं

उसकी तपती देह पर

अचानक उसकी छाती में हिलोर

उठती है

एक औरत घड़ा लेकर

गीत गाती आ रही है

उसको पानी पिलाने के लिए।

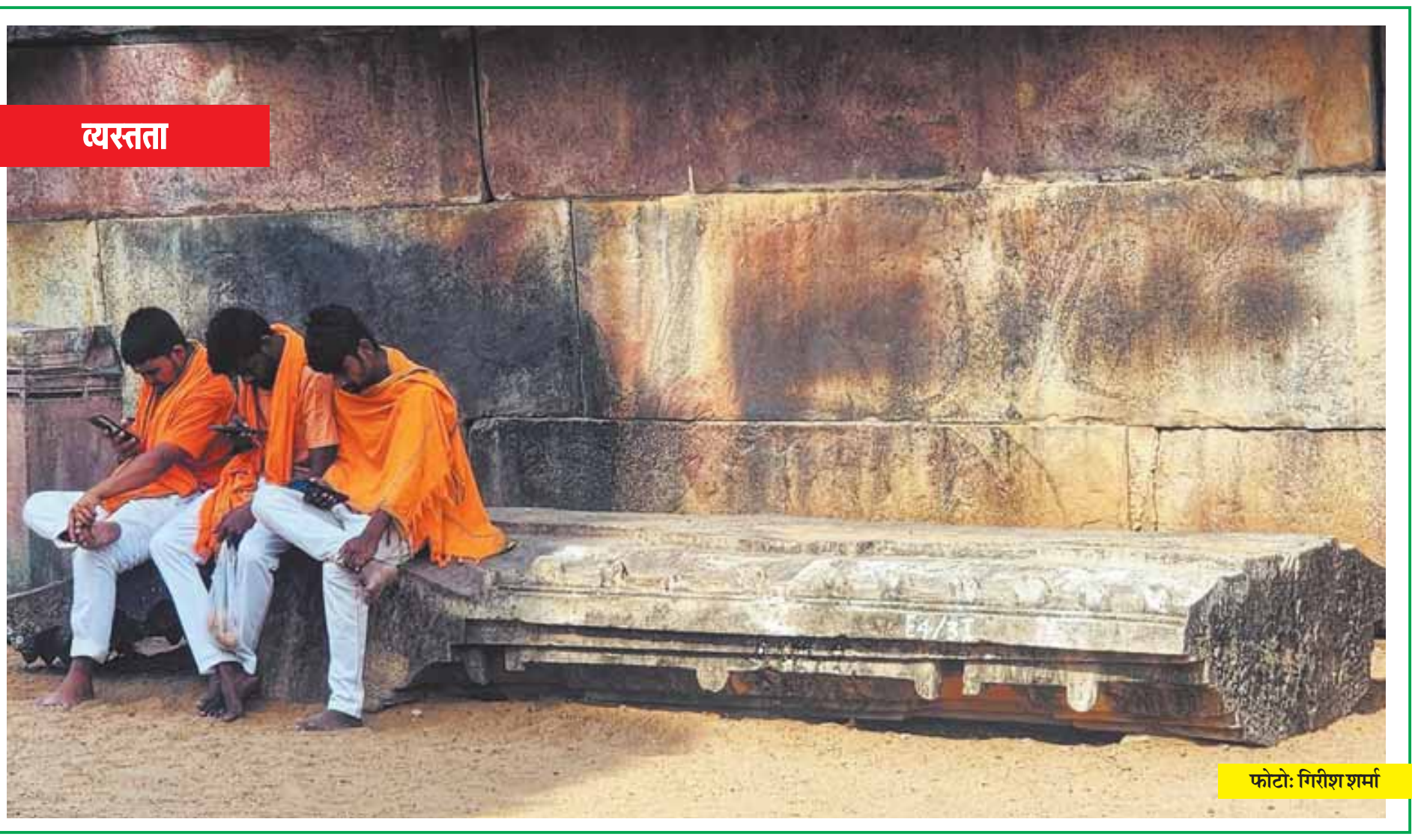

- विजय राही

देश को जल्द ही मिलेंगी हाइपरसोनिक मिसाइलें

● सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइलों से दोगुनी ज्यादा होगी रफ्तार

कोई डिफेंस सिस्टम नहीं रोक पाएगा, डीआरडीओ ऐक्टिव

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने युद्धों की बदलती रणनीति को देखते हुए अत्याधुनिक 'हाइपरसोनिक' मिसाइल तकनीक पर काम तेज कर दिया है। डीआरडीओ प्रमुख समीर वी. कामत ने एक कार्यक्रम में बताया है कि देश जल्द 'हाइपरसोनिक ग्लाइड मिसाइल' और 'हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल' से लैस होगा। इनकी रफ्तार सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइल से दोगुनी होगी। इसकी खासियतों की वजह से दुनिया का कोई डिफेंस सिस्टम इन्हें रोक नहीं पाएगा।

डीआरडीओ प्रमुख के अनुसार, ग्लाइड मिसाइल का पहला परीक्षण जल्द संभव है। स्क्रैमजेट इंजन पर आधारित क्रूज मिसाइल को लेकर भी बड़ी कामयाबी मिली है। हाल ही में स्क्रैमजेट प्रोपल्शन का 1,000 सेकंड से ज्यादा समय तक परीक्षण सफल रहा है। औपचारिक मंजूरी मिलने के 5 साल में इस मिसाइल को बेड़े में शामिल किया जाएगा।

चीन-रूस इस तकनीक में आगे

रूस के पास 'जिरकॉन' और 'किंजल' हाइपरसोनिक मिसाइलें हैं। चीन के पास 'डीएफ-जेडएफ' है, जो तैनात की जा चुकी हैं। वहीं, अमेरिका इस तकनीक में थोड़ा पीछ रह गया है। अमेरिका के पास टॉमहॉक तकनीक की 'सुपरसोनिक' मिसाइलें हैं। लेकिन हाल के सालों में हाइपरसोनिक प्रोजेक्ट्स एआरआरडब्ल्यू असफल रहे हैं।

अग्नि-6-सरकार की हरी झंडी मिलते ही काम शुरू

डीआरडीओ प्रमुख ने स्पष्ट किया कि अग्नि-6 मिसाइल कार्यक्रम के लिए तकनीकी रूप से टीम पूरी तरह तैयार है। जैसे ही सरकार से हरी झंडी मिलेगी, हम इस पर काम शुरू कर देंगे। यह अग्नि सीरीज की सबसे आधुनिक 'इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल' होगी। माना जा रहा है कि इसकी मारक क्षमता 10,000 से 12,000 किलोमीटर तक हो सकती है। यह मिसाइल एक साथ कई परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम होगी, जिससे यह एक साथ कई लक्ष्यों को निशाना बना सकेगी।

पर्यावरण अनुकूल निर्माण को प्रोत्साहित करना आवश्यक

प्रकृति अनुकूल स्थापत्य हमारे वास्तु का है आधार: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रकृति अनुकूल स्थापत्य हमारे वास्तु का आधार है। वर्तमान समय की बड़ी चुनौती यह है कि हम कंक्रीट के बढ़ते जंगलों और सिमटते प्राकृतिक संसाधनों के बीच खड़े हैं। पर्यावरण अनुकूल निर्माण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम उस परंपरा के उत्तराधिकारी हैं जिन्होंने स्वस्थ नगर नियोजन के साथ जल संरक्षण के लिए विशाल इकोलॉजिकल सिस्टम बनाये। विद्वान, वास्तुकार राजा भोज द्वारा विकसित भोपाल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। सौभाग्य का विषय है कि सस्टेनेबल फ्यूचर इनोवेशंस इन ग्रीन बिल्डिंग प्रैक्टिसेस जैसे विषय पर भोपाल में राष्ट्रीय सेमिनार हो रहा है। प्रदेश के ऐतिहासिक स्थल मांडव के जल प्रबंधन और नगर नियोजन को देखते हुए वहां भी इस प्रकार के आयोजन होने चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को ग्रीन बिल्डिंग तकनीक पर अखिल भारतीय सेमिनार और इंडियन बिल्डिंग कांग्रेस की 113 गवर्निंग कॉउंसिल मीटिंग के शुभारंभ सत्र को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। लोक निर्माण विभाग तथा इंडियन बिल्डिंग कांग्रेस, कार्यक्रम के आयोजक हैं।

पी.डब्ल्यू.डी. की स्मारिका, न्यूज लेटर और आईबीसी की बिल्ट इन्वायरमेंट पत्रिका का विमोचन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव का लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने शॉल-श्रीफल और स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम वंदे-मातरम के गान के साथ आरंभ हुआ। इस अवसर पर आईबीसी इनोग्रल सॉन्ग और लोक निर्माण विभाग की परियोजना क्रियान्वयन इकाई की गतिविधियों पर लघु फिल्म की प्रस्तुति हुई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोक निर्माण विभाग की स्मारिका, न्यूज लेटर और आईबीसी की बिल्ट इन्वायरमेंट पत्रिका का विमोचन किया। उनकी उपस्थिति में आईआईटी इंदौर और लोक निर्माण विभाग के बीच निर्माण तकनीक पर केंद्रित एमओयू का आदान-प्रदान किया गया। दूसरा एमओयू लोक निर्माण विभाग तथा गृहा संस्था के साथ किया गया।

हम प्रकृति से सीखें और उसके साथ आगे बढ़ें

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि राजा भोज ने भोज पत्रों पर लेख और निर्माण कार्यों के माध्यम से हमें प्राचीन भारतीय निर्माण परंपरा की अद्भुत सौगात दी है। राजा भोज ने प्रकृति के साथ प्रगति?की बात समरांगण सूत्रधार में स्पष्ट की थी। हमारे ग्रंथों में कहा गया है 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो शरीर में है वही ब्रह्मांड में है। ग्रीन बिल्डिंग, पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-आकाश तत्वों के समावेश से हमारे घरों को उसी ब्रह्मंडीय संतुलन में वापस लाने की एक प्रक्रिया है। हमारे प्राचीन ग्रंथ यह मानते हैं कि एक भवन में इन सब तत्वों का समावेश आवश्यक है।

सस्टेनेबल फ्यूचर केवल विचार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है : मंत्री सिंह

लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में लोक निर्माण विभाग प्रदेश के बेहतर भविष्य के लिए नवाचारों के साथ अधोसंरचना विकास को गति प्रदान कर रहा है। प्रदेश में टिकाऊ निर्माण के लिए भारतीय प्राचीन निर्माण तकनीक पर हम आगे बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वैदिक घड़ी को सराहा है। इस घड़ी के निर्माण का श्रेय मुख्यमंत्री डॉ. यादव को जाता है। प्रदेश में बनने वाले सभी भवन अब ग्रीन बिल्डिंग तकनीक पर बनाए जा रहे हैं। लोक निर्माण विभाग ने अपने प्रशिक्षण कैलेंडर में ग्रीन बिल्डिंग तकनीक को शामिल किया है। प्रदेश में हाईवे और फ्लाईओवर्स को रेन वॉटर हार्वेस्टिंग तकनीक के साथ तैयार किया जा रहा है। मंत्री श्री सिंह ने विशेषज्ञों से आह्वान किया कि मध्यप्रदेश की विविध भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कम लागत वाली ग्रीन बिल्डिंग तकनीकों का विकास किया जाए, जिससे आम नागरिक भी इनका लाभ प्राप्त कर सकें।

देशभर में करोड़ों मोबाइल पर एक साथ आया अलर्ट मैसेज

● सायरन की आवाज सुनाई दी, सरकार ने इमरजेंसी अलर्ट सिस्टम की टेस्टिंग की

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में शनिवार सुबह 11.45 बजे कई मोबाइल फोन पर एकसाथ सायरन की आवाज सुनाई देने लगी। स्क्रीन पर हिंदी-अंग्रेजी में एक मैसेज था। सायरन बंद हुआ तो मोबाइल पर मैसेज पढ़कर भी सुनाया गया। इससे कई लोग परेशान हुए, तो कई कन्फ्यूज। हालांकि सरकार ने कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है। यह मैसेज राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, यानी एनडीएएम ने भेजा था, जो इमरजेंसी मोबाइल अलर्ट ट्रायल का हिस्सा है।

सरकार ने पहले ही बताया था-मैसेज से घबराएं नहीं

सरकार ने दो दिन पहले ही मैसेज भेजकर लोगों से अपील की थी कि टेस्टिंग वाला मैसेज मिलने पर घबराएं नहीं। शनिवार का मैसेज केवल इमरजेंसी के हालात में चेतावनी देने वाले सिस्टम की जांच के लिए भेजा गया था। इमरजेंसी की स्थिति में लोगों को रियल टाइम अलर्ट देने के लिए सरकारी संस्था सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ टेलीमेटिक्स ने इंटीग्रेटेड अलर्ट सिस्टम को विकसित किया है।

पुणे में बच्ची से रेप और हत्या के बाद भारी बवाल

● सड़कों पर उतरे लोग, पुलिस चौकी को घेरा, फांसी की सजा की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पुणे जिले के एक गांव में 65 साल के बुजुर्ग ने 4 साल की बच्ची के साथ पहले रेप किया और फिर उसकी हत्या कर दी। मामले को लेकर गुस्साए लोग सड़कों पर उतर आए और जमकर विरोध प्रदर्शन किया। पुलिस चौकी का घेराव करके लोगों ने आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई और मौत की सजा की मांग की है। इसको लेकर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार गुट) की सांसद सुप्रिया सुले ने लोगों से संयम बनाए रखने का आग्रह किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस मामले में कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वहीं, महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख ने गिरफ्तार आरोपी के लिए मौत की सजा की मांग की। सुले ने इस घटना को अमानवीय करार देते हुए मानवता को कलंकित करने वाली घटना बताया। एनसीपी सांसद ने यह भी कहा कि उन्होंने पुणे ग्रामीण के पुलिस अधीक्षक से बात की है और आश्वासन दिया गया कि मामले पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उन्होंने लिखा, मैंने नास्त्रापुर में अमानवीय घटना के संबंध में पुणे ग्रामीण के पुलिस अधीक्षक से बात की है, जिसने मानवता को कलंकित किया है। उन्होंने इस जघन्य अपराध को अंजाम देने वाले दरिंदे के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

● **अपराधी को कड़ी से कड़ी सजा मिले और पीड़िता को न्याय** – उन्होंने आगे कहा, मेरा सभी नागरिकों से विनम्र निवेदन है कि हम सभी की सामूहित इच्छा है कि अपराधी को कड़ी से कड़ी सजा मिले और पीड़िता को न्याय मिले। पुलिस प्रशासन ने इस मामले में हम सभी के आक्रामक रुख को ध्यान में रखा है। कृपया हम सभी इस मामले में संयम बरतें। इस मामले में दोषी पक्ष के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस घटना को बेहद शर्मनाक बताते हुए देशमुख ने एक्स पर कहा कि महाराष्ट्र दिवस के अवसर पर ऐसी शर्मनाक घटना होना राज्य को शोभा नहीं देता। उन्होंने मांग की कि इस मामले की सुनवाई फास्ट-ट्रैक अदालत में की जाए और आरोपी को फांसी हो।

आज मुख्यमंत्री करेंगे इन्दौर-पीथमपुर इकोनॉमिक कॉरिडोर के प्रथम चरण का भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 3 मई को इन्दौर में इस परियोजना के प्रथम चरण का भूमि-पूजन करेंगे। यह पहल प्रदेश में अधोसंरचना, उद्योग और शहरी विकास को एकीकृत रूप में आगे बढ़ाने की रणनीति को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है। मध्यप्रदेश को सुदृढ़ औद्योगिक आधार और आदर्श निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित करने की दिशा में इन्दौर-पीथमपुर इकोनॉमिक कॉरिडोर महत्वपूर्ण साबित होगा। कार्यक्रम में शॉर्ट फिल्म के माध्यम से कॉरिडोर के स्वरूप, संभावनाओं और क्षेत्रीय प्रभावों को दिखाया जाएगा। यह कॉरिडोर इन्दौर एयरपोर्ट के समीप स्थित सुपर कॉरिडोर को पीथमपुर निवेश क्षेत्र से जोड़ते हुए एक सुव्यवस्थित औद्योगिक धुरी के रूप में विकसित किया जा रहा है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 03 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ के कांकेर में आईईडी ब्लास्ट

● डीआरजी के तीन जवान हो गए शहीद, एक घायल

नई दिल्ली (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कांकेर से बड़ी खबर सामने आ रही है। जहां आईईडी धमाके में डीआरजी के 3 जवान बलिदान हो गए, जबकि एक जवान घायल है। पुलिस ने बताया कि सुरक्षा बल के जवान थाना छोटेबेठिया अंतर्गत कांकेर-नारायणपुर जिले के सीमा क्षेत्र में डी-माइनिंग, एरिया डॉमिनेशन व सर्च ऑपरेशन के लिए टीम रवाना हुए थे। जहां पहले से बिछा कर रखी गई बारूदी सुरंग हटाने के

दौरान दुर्घटनावश आईईडी में विस्फोट हो गया। धमाका इतना तेज था कि जवानों को भागने का मौका नहीं मिला। हादसे में घायल जवानों का तुरंत रेस्क्यू किया गया, लेकिन गंभीर रूप से घायल होने के कारण तीन जवानों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं एक घायल जवान का उपचार जारी है।

विस्फोट की चपेट में आने से कांकेर डीआरजी के चार सदस्य घायल हो गए। इनमें से इंस्पेक्टर सुखराम वट्टी, कांस्टेबल कृष्णा कोमरा, कांस्टेबल संजय गढपाले विस्फोटस्थल पर ही बलिदान हो गए। घायल कांस्टेबल परमानंद कोमरा को बेहतर उपचार के लिए जरूरी सुविधा दी जा रही है।

सैकड़ों आईईडी नष्ट कर चुके हैं सुरक्षाकर्मी- बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक सुंदरराज पट्टिलिंगम ने बताया कि पिछले कुछ महीनों में आत्मसमर्पित माओवादी कैडरों ने छिपाए गए आईईडी की जानकारी दी है। सुरक्षा बल लगातार उन्हें निष्क्रिय करने में लगे हुए हैं। शनिवार को कांकेर जिला पुलिस दल आईईडी को निष्क्रिय कर रहा था, तभी उसमें विस्फोट हो गया। तीन पुलिस बल के सदस्यों की घटनास्थल पर भी मौत हो गई जबकि एक पुलिस बल का सदस्य गंभीर रूप से घायल हो गया।

मध्य प्रदेश में शासन व्यवस्था पूरी तरह विफल, केंद्र सरकार करे हस्तक्षेप : जीतू पटवारी

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने प्रदेश में लगातार हो रहे बड़े हादसों, सामूहिक मौतों, किसानों की बदहाली, बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार तथा प्रशासनिक अव्यवस्था को लेकर भारतीय जनता पार्टी सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में शासन व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है और अब केंद्र सरकार को तत्काल हस्तक्षेप करना चाहिए।

पटवारी ने कहा कि प्रदेश में लगातार ऐसी घटनाएं सामने आ रही हैं, जिनमें सामूहिक रूप से लोगों की जान जा रही है। यह केवल हादसे नहीं, बल्कि सरकार की लापरवाही से हो रही मौतें हैं। राजनीतिक जिम्मेदारी पूरी तरह शून्य हो चुकी है। उन्होंने कहा कि वे इस गंभीर स्थिति को लेकर महामहिम राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को पत्र लिख रहे हैं, ताकि मध्य प्रदेश की विफल शासन व्यवस्था पर केंद्र सरकार संज्ञान ले।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में पानी तक सुरक्षित नहीं है, जहरीले पानी से लोगों की जान जा रही है। दवाइयों की लापरवाही से 26 बच्चों की मौत होना अत्यंत दुखद और शर्मनाक है। एनजीटी की आपत्तियों के बावजूद क्रूज संचालन किया गया, जिसकी लापरवाही से 9 लोगों की जान गई। बरगी डैम से जब शव निकाले जा रहे थे, उस समय मुख्यमंत्री राजभवन में लोक नृत्य देखने में व्यस्त थे। यह संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है।

इन्वेस्ट इंडिया के आंकड़ों में मध्यप्रदेश रोजगार सृजन में देश का अग्रणी राज्य

भोपाल (नप्र)। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग की राष्ट्रीय निवेश प्रोत्साहन एवं सुविधा एजेंसी इन्वेस्ट इंडिया द्वारा जारी ताजा निवेश आंकड़ों में मध्यप्रदेश रोजगार सृजन के मामले में देश में अग्रणी राज्य के रूप में उभरा है। यह जानकारी भारत सरकार द्वारा जारी आधिकारिक जानकारी में सामने आई है, जो देश में निवेश के बढ़ते दायरे और राज्यों की भूमिका को रेखांकित करती है। राष्ट्रीय रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से घोषित किया गया है कि रोजगार सृजन में मध्यप्रदेश समूचे देश में आंध्र प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना और महाराष्ट्र को पीछे छोड़कर शीर्ष स्थान पर रहा है। यह उपलब्धि राज्य में विकसित हो रहे निवेश अनुकूल वातावरण, अधोसंरचना विस्तार और उद्योगोन्मुख नीतियों का परिणाम मानी जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में वर्ष-2025 को म.प्र. में रोजगार और उद्योग वर्ष घोषित किया गया। मध्यप्रदेश में निवेश संवर्धन को प्राथमिकता दी गई है। देश और विदेश में आयोजित इन्वेस्टर मीट, रोड-शो और संवाद कार्यक्रमों के माध्यम से निवेशकों से सीधा जुड़ाव स्थापित किया गया है। साथ ही रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव की श्रृंखला के माध्यम से प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार सुनिश्चित किया गया है। इन्वेस्ट इंडिया के ये आंकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के सकल प्रयासों से मध्यप्रदेश न केवल निवेश आकर्षित करने में सक्षम है, बल्कि उसे प्रभावी रूप से रोजगार सृजन में भी परिवर्तित कर रहा है।

किस अधिकारी से काउंटिंग कराए, यह ईसी का अधिकार

● सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी, टीएमसी को लगा तगड़ा झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव के दौरान ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से सियासी लड़ाई लड़ रही थी। दो चरणों में वोटिंग खत्म होने के बाद अब टीएमसी की लड़ाई चुनाव आयोग से शुरू हो चुकी है। ममता की पार्टी ने वोटों की गिनती के लिए सुपरवाइजर और सहायक के तौर पर केंद्र सरकार और अन्य कर्मचारियों की तैनाती को लेकर ऐतराज जताया है। इसके लिए कानूनी लड़ाई भी लड़ रही है। कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका खारिज होने के बाद इस मामले पर अब सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई है।

सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को सुनवाई के दौरान यह स्पष्ट किया कि चुनाव आयोग के पास इस बात का विशेषाधिकार है कि मतगणना के लिए किन अधिकारियों का चयन करता है। जस्टिस बागची ने कहा, यह विकल्प खुला है कि गिनती सुपरवाइजर और गिनती सहायक केंद्र सरकार के हो सकते हैं या राज्य सरकार के। इसलिए जब यह विकल्प खुला है तो हम यह नहीं मान सकते कि यह अधिसूचना नियमों के विपरीत है।

एससी की सख्ती के बाद टीएमसी का यू टर्न

सुप्रीम कोर्ट की इन टिप्पणियों के बाद टीएमसी ने अपने रुख में यू-टर्न लेते हुए चुनाव आयोग के सर्कुलर को सख्ती से लागू करने की मांग की। इसके जवाब में आयोग ने अदालत को आश्वासन दिया कि दिशानिर्देशों का ठीक से पालन किया जा रहा है। आपको बता दें कि इस याचिका पर सुनवाई के लिए जस्टिस पामिदिघंतम नरसिम्हा और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की एक विशेष पीठ का गठन किया गया है। सुप्रीम कोर्ट में टीएमसी की पैरवी वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल कर रहे हैं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के सामने चार मुख्य आपत्तियां रखी हैं। उन्होंने दलील दी कि तैनाती के संबंध में जिला चुनाव अधिकारियों को 13 अप्रैल को नोटिस जारी किया गया था, लेकिन पार्टी को इसकी जानकारी 29 अप्रैल को ही मिली।

हिंद महासागर में स्थिरता के लिए बन गया प्लान

● भारत-म्यांमार ने मिलाया हाथ, मिलकर करेंगे निगहबानी

चार दिवसीय दौरे पर नेवी चीफ एडमिरल दिनेश त्रिपाठी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी 2 मई से 5 मई तक म्यांमार के चार दिवसीय आधिकारिक दौरे पर हैं। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य भारत और म्यांमार के बीच समुद्री सहयोग और रक्षा संबंधों को और मजबूत करना है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, इस यात्रा के दौरान नौसेना प्रमुख म्यांमार के शीर्ष सैन्य और रक्षा नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय बैठकें करेंगे। इनमें म्यांमार सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ जनरल ये विन ऊ, रक्षा मंत्री जनरल यू हतुन आंग और म्यांमार नौसेना के प्रमुख एडमिरल ह्तेइन विन शामिल हैं। इन बैठकों में दोनों देशों के बीच चल रहे समुद्री सहयोग की समीक्षा की जाएगी।

दोनों देशों के बीच होते रहते हैं नौसेना के अभ्यास- भारत और म्यांमार की नौसेनाएं नियमित रूप से कई माध्यमों से सहयोग करती रही हैं। इनमें डिफेंस कोऑपरेशन मीटिंग, स्टाफ टॉक्स, प्रशिक्षण आदान-प्रदान और ऑपरेशनल गतिविधियां शामिल हैं। दोनों देशों के बीच इंडिया-म्यांमार नेवल एक्सरसाइज (आईएमएनईएक्स) और इंडो-म्यांमार कोऑर्डिनेटेड पेट्रोल (आईएमसीओआर) जैसे अभ्यास भी होते रहे हैं। इसके अलावा पोर्ट विजिट और हाइड्रोग्राफिक सर्वे भी सहयोग का हिस्सा हैं। म्यांमार ने कई अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में साथ दिया है।

क्रूज को डूबते देख 25 फीट ऊंचाई से कूद गया मजदूर रमजान

4 लोगों की सुरक्षित बचाया, डूब रहे लोगों के लिए बना देवदूत

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के जबलपुर में गुरुवार को बरगी डैम हादसे में अभी तक 9 लोगों की मौत हो गई। राहत बचाव कार्य जारी है। हादसे की जानकारी मिलते ही सबसे पहले एक मजदूर ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया था। रेस्क्यू टीम के पहुंचने से पहले ही पुल निर्माण के कार्य में लगे रहमान ने कई लोगों की जिंदगी बचाई थी। अपनी जान जोखिम में डालकर उसने यह अभियान चलाया था।

पुल निर्माण में लगे मजदूर ने बचाई जान- दरअसल, बरगी बांध में जिस स्थान पर क्रूज हादसा हुआ उसके कुछ ही दूर पर पुल का निर्माण कार्य जारी था। पुल निर्माण कार्य में लगे मजदूरों ने क्रूज को डूबते हुए देखा था। इसी दौरान वहां मौजूद एक मजदूर ने अपने जान की परवाह किए

बिना और बिना किसी तरह के संसाधन लोगों की जान बचाने के लिए पानी में कूद गया था।

रमजान ने देखा क्रूज डूब रहा है- पश्चिम बंगाल के रहने वाले रमजान ने बताया कि उसने देखा कि क्रूज पानी में डूब रहा है। उसने लोग को बचाने के लिए तत्काल रस्सी लेकर बांध में छलांग लगा दी। उसने रस्सी लेकर लगभग 25 फीट की ऊंचाई से छलांग लगाई। उसके बाद उसने 6 व्यक्तियों को बाहर निकाला। जिसमें से चार व्यक्ति सुरक्षित थे और दो की मौत हो गई थी।

वहीं, मौके पर मौजूद बिंद्र कुमार यादव ने बताया कि हम पश्चिमी चंपारण के रहने वाले हैं। यहां पर लगभग 35 मजदूर काम कर रहे थे। बांध में क्रूज को अनियंत्रित होता देख उसने पायलट को रूकने की आवाज लगाई थी।

देवदूत बने ये 35 मजदूर, बिना किसी ट्रेनिंग के पानी में कूदे और बचा लाए 12 लोग

बरगी बांध में जब शुक्रवार को चीख-पुकार मची थी और क्रूज लहरों में समा रहा था, तब वहां पास ही 'जल जीवन मिशन' के तहत पुल का काम कर रहे करीब 35 मजदूरों ने अपनी जान की परवाह नहीं की। जैसे ही उन्होंने क्रूज को डगमगाते देखा, उन्होंने अपने औजार फेंक दिए और प्रोफेशनल रेस्क्यू टीम के आने का इंतजार किए बिना बांध में कूद गए।

बंगाल के रमजान की जांबाजी

इन नायकों में पश्चिम बंगाल के 22 साल के रमजान की कहानी सबसे रोमांचक है। रमजान ने बताया, मैंने नाव को डूबते देखा तो एक पल भी नहीं सोचा। उन्होंने अपने शरीर पर एक रस्सी बांधी और करीब 25 फीट ऊंची चट्टान से उफनते पानी में छलांग लगा दी। रमजान अकेले 6 लोगों को किनारे तक खींच लाए, जिनमें से 4 की जान बच गई।

डॉ. जवाहर कर्नावट लंदन में हुए सम्मानित

लंदन। यू.के. में पिछले 25 वर्षों से भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत सुप्रसिद्ध संस्था 'वातायन' द्वारा हाउस आफ लॉर्ड्स, लंदन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह में भोपाल के प्रखर लेखक एवं वक्ता डॉ. जवाहर कर्नावट को वातायन शिखर सम्मान ब्रिटिश संसद के लार्ड उदय नागाराजु ने प्रदान किया। इसके साथ ही वर्ष 2025 का वातायन शिखर सम्मान सुश्री सुलेखा चोफरा तथा साहित्य सम्मान ब्रिटेन की लेखिका डॉ.अचला शर्मा तथा शैल अग्रवाल जी को प्रदान किया गया। प्रारंभ में वातायन की संयोजक एवं सुप्रसिद्ध लेखिका दिव्या माथुर ने लॉर्ड नागराजु तथा भारतीय दूतावास की प्रथम सचिव डॉक्टर सलोनी सहाय का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन यूके हिंदी समिति के संस्थापक श्री पद्मेश गुप्त ने किया। इस

अवसर पर आईसेक्ट प्रकाशन द्वारा प्रकाशित डॉ. अरुण अजीतसरिया द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रवासी साहित्यकार दिव्या माथुर' तथा रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के प्रवासी भारतीय साहित्य शोध केंद्र द्वारा डॉ. वंदना मुकेश के संपादन में प्रकाशित 'ब्रिटेन की चयनित रचनाएं' पुस्तक का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम में डॉ. कर्नावट ने लार्ड उदय नागराजु को विश्व रंग की पुस्तिका, श्री पद्मेश गुप्त को 'विश्व में हिंदी' पुस्तक भेंट की। आभार प्रदर्शन वातायन की अध्यक्ष श्रीमती मीरा गौतम ने किया।

उप मुख्यमंत्री ने किया प्राकृतिक खेती का निरीक्षण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने आज हरिहर धाम स्थित अपने निजी खेत का भ्रमण कर वहां अपनाई जा रही प्राकृतिक खेती की प्रगति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने खेत में इस्तेमाल हो रहे प्राकृतिक खाद और जीवामृत के निर्माण व प्रयोग की प्रक्रिया का बारीकी से अवलोकन किया। श्री शुक्ल ने मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और जल संरक्षण के लिए अपनाए गए विशेष उपायों की सराहना करते हुए कहा कि पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए पारंपरिक कृषि पद्धतियों की ओर लौटना अनिवार्य है।

निरीक्षण के दौरान उप मुख्यमंत्री ने उपस्थित सहायकों और कृषि विशेषज्ञों को रसायन मुक्त खेती की तकनीकों को और अधिक प्रभावी बनाने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खेती में रसायनों का न्यूनतम उपयोग न केवल लागत कम करता है, बल्कि भूमि की उपजाऊ शक्ति को भी दीर्घकालिक लाभ पहुँचाता है। श्री शुक्ल ने प्राकृतिक कृषि को आधुनिक समय की मांग बताते हुए इसे जन-आंदोलन के रूप में प्रसारित करने की बात कही, ताकि आने वाली पीढ़ियों को शुद्ध आहार और सुरक्षित वातावरण मिल सके।

चुनाव खत्म होते ही नए मिशन पर बीजेपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। चार राज्यों में विधानसभा चुनाव खत्म होने के बाद अब भले ही सबको इंतजार नतीजों का है। इस बीच भारतीय जनता पार्टी नए मिशन पर जुट गई है। केंद्र की सत्ताधारी पार्टी अब राजनीतिक गतिविधियों के अगले फेज में संगठनात्मक फेरबदल पर आगे बढ़ रही है। इसके साथ ही शासन से जुड़े बदलाव भी फोकस में हैं। सबसे पहले बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की नई टीम को लेकर विचार-विमर्श चल रहा है।

ऐसी चर्चा है कि मौजूदा टीम के दो-तीन महासचिवों के भी नई टीम में बने रहने की उम्मीद है। हालांकि, नई टीम में ज्यादा फोकस युवा चेहरों पर किया जाएगा। ऐसा इसलिए क्योंकि पार्टी के अध्यक्ष नितिन नवीन खुद करीब 45 साल के हैं। नितिन नवीन की नई टीम चुनने को लेकर हो रही देरी का पता इसी से चलता है कि पार्टी सोच-समझकर कदम उठा रही है, ताकि वह अपनी संगठनात्मक संरचना को चुनौतियों के हिसाब से ढाल सके।

संजय गांधी अस्पताल के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग में मरीजों को मिल रही हैं अत्याधुनिक सुविधाएं

उप मुख्यमंत्री ने स्थापित अत्याधुनिक मशीनों का लिया जायजा

भोपाल। विंध्य क्षेत्र के सबसे बड़े चिकित्सा केंद्र, संजय गांधी अस्पताल के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग ने चिकित्सा क्षेत्र में एक नई और उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। हाल ही में स्थापित अत्याधुनिक मशीनों की सहायता से विभाग ने एक माह से भी कम

समय में 61 से अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण प्रक्रियाओं को सफलतापूर्वक संपन्न किया है। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने स्वयं विभाग का निरीक्षण कर इन उपलब्धियों और स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने उन्नत ईआरसीपी, एंडोस्कोपिक अल्ट्रासाउंड, कोलैन्जियोस्कोपी और लिथोट्रिप्सी जैसी मशीनों की कार्यप्रणाली का अवलोकन किया और विभाग की दक्षता की सराहना की।

बंगाल में पुनर्मतदान के बीच हिंसा, जमकर बवाल

● बीजेपी और टीएमसी कार्यकर्ता भिड़े, पुलिस ने भांजी लाठियां

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में दो विधानसभा सीटों के 15 बूथ पर पुनर्मतदान के बीच फाल्टा में हिंसा की खबरें हैं। जानकारी के मुताबिक यहां टीएमसी और बीजेपी के कार्यकर्ता आपस में भिड़ गए। इसके बाद लोगों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को लाठियां भांजनी पड़ी। आपको बता दें कि फाल्टा सीट पर दोबारा वोटिंग नहीं करवाई जा रही है। दरअसल दक्षिण 24 परगान के फाल्टा में बीजेपी समर्थकों का कहना है कि उन्हें टीएमसी के लोगों से लगातार धमकियां मिल रही हैं और 4 मई को वोटों की गिनती के दौरान हिंसा की आशंका है। इसी को लेकर वे प्रदर्शन कर रहे थे। इसी दौरान टीएमसी के कार्यकर्ता भी निकल गए और इस प्रदर्शन का विरोध करने लगे। इसपर बीजेपी और टीएमसी के कार्यकर्ताओं में हाथापाई हो गई। रिपोर्ट के मुताबिक पहले से ही स्थिति को तनावपूर्ण देखते हुए इस इलाके में सीआरपीएफ और आरएएफ की तैनाती की गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक इस प्रदर्शन में महिलाएं भी बड़ी संख्या में शामिल थीं। एक स्थानीय महिला ने कहा कि टीएमसी के इसराफिल चौधरी ने धमकी दी कि अगर वे जीत जाएंगे तो उनके घर जला देंगे और खूनी खेल होगा। महिला ने कहा कि उन्होंने टीएमसी को वोट दिया है और इसके बाद भी उन्हें धमकाया जा रहा है। बता दें कि आज यानी शनिवार को मगराहाट पश्चिम और डायमंड हार्बर के 15 बूथों पर दोबारा मतदान हुआ है।

पर्यवेक्षकों से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर मतदान

निर्वाचन आयोग के एक अधिकारी ने बताया कि पुनर्मतदान का आदेश दोनों विधानसभा क्षेत्रों के निर्वाचन अधिकारियों और पर्यवेक्षकों से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर दिया गया। मगराहाट पश्चिम सीट पर तृणमूल कांग्रेस के मोहम्मद समीम अहमद मोल्ला का मुकाबला भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी गौर सुंदर घोष से है, जबकि कांग्रेस के अब्दुल मजीद हलदर और इंडियन सेक्युलर फ्रंट (आईएसएफ) के अब्दुल अजीज अल हसन भी मैदान में हैं। डायमंड हार्बर सीट पर तृणमूल के पन्ना लाल हलदर, भाजपा के दीपक कुमार हलदर को चुनौती दे रहे हैं। कांग्रेस के गौतम भट्टाचार्य और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के समर नाइया समेत कई अन्य प्रत्याशी भी इस सीट पर किस्मत आजमा रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आरोप लगाया कि डायमंड हार्बर लोकसभा क्षेत्र की इन दोनों विधानसभा सीट के कुछ मतदान केंद्रों पर बड़े पैमाने पर चुनावी धांधली हुई थी। डायमंड हार्बर लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी करते हैं। निर्वाचन आयोग ने आरोपों की जमीनी स्तर पर जांच के लिए अपने विशेष पर्यवेक्षक सुब्रत गुप्ता को नियुक्त किया था।

राजा रघुवंशी हत्याकांड केस में नया मोड़ सोनम की जमानत को चुनौती की तैयारी

इंदौर। चर्चित ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी हत्याकांड में कानूनी घटनाक्रम तेजी से बदल रहा है। मुख्य आरोपी सोनम को निचली अदालत से मिली जमानत के बाद अब शिलॉन्ग पुलिस ने इस आदेश को चुनौती देने की तैयारी शुरू कर दी है। पुलिस जल्द ही मेघालय उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर जमानत निरस्त कराने का प्रयास करेगी। पुलिस का मानना है कि सोनम इस पूरे हत्याकांड की मुख्य साजिशकर्ता है। जांच अधिकारियों के अनुसार उसकी रिहाई से मामले के गवाहों पर दबाव बनने की आशंका बढ़ गई है। पुलिस को आशंका है कि वह बाहर रहकर साक्ष्यों को प्रभावित कर सकती है, जिससे जांच की निष्पक्षता पर असर पड़ सकता है। शिलांग के पुलिस अधीक्षक विवेक सियेम ने कहा है कि पुलिस पूरी तरह से विधिक प्रक्रिया का पालन कर रही है और कानून के दायरे में रहते हुए आगे की कार्रवाई करेगी। उन्होंने यह भी स्पष्ट

शिलांग पुलिस हाई कोर्ट जाएगी, प्रेमी राज कुशवाहा को राहत नहीं मिली

किया कि अदालत ने अपने अधिकारों का उपयोग करते हुए जमानत दी है, लेकिन पुलिस अब उसी आदेश के आधार बिंदुओं को लेकर उच्च न्यायालय में अपनी बात मजबूती से रखेगी। सूत्रों के अनुसार पुलिस अब उन सभी तथ्यों और साक्ष्यों को व्यवस्थित कर रही है, जिनके आधार पर यह साबित किया जा सके कि सोनम को जमानत देना उचित नहीं था। इसके लिए जांच से जुड़े पहलुओं को और मजबूत करने की रणनीति बनाई जा रही है। हालांकि इस पूरे मामले पर सरकारी पक्ष के अधिवक्ता केशव गौतम ने कोई टिप्पणी करने से इनकार किया है।

जमानत के बाद निगरानी में सोनम

जमानत मिलने के बाद सोनम को शिलॉन्ग में ही एक सुरक्षित स्थान पर रखा गया है। अदालत की शर्तों के अनुसार वह बिना अनुमति शहर नहीं छोड़ सकती। इस बीच यह जानकारी भी सामने आई है कि वह शिलॉन्ग से बाहर जाने के लिए अदालत में अलग से अर्जी लगा सकती है। इसके लिए वह अपनी सुरक्षा को खतरा होने का आधार बना सकती है। बताया जा रहा है कि उसके वकील इस दिशा में तैयारी कर रहे हैं।

राज की जमानत याचिका खारिज

इस मामले में सोनम के करीबी और सह-आरोपी राज कुशवाहा को अदालत से राहत नहीं मिली है। उसकी जमानत याचिका को शिलॉन्ग की अदालत ने खारिज कर दिया है। बचाव पक्ष की ओर से यह तर्क दिया गया था कि विचाराधीन मामलों में आरोपियों को लंबे समय तक जेल में रखना उनके अधिकारों का हनन है और एक वर्ष से अधिक समय जेल में बिताने के आधार पर जमानत दी जानी चाहिए। अदालत ने मामले की गंभीरता और उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए राज को जमानत देने से इनकार कर दिया। इस निर्णय के बाद अन्य आरोपियों के लिए भी राहत की संभावना कम होती दिखाई दे रही है। सरकारी अधिवक्ता केशव गौतम ने कहा कि राज कुशवाहा की जमानत किन कारणों से खारिज की गई है, इसका स्पष्ट विवरण आदेश की प्रति मिलने के बाद ही सामने आएगा। फिलहाल आदेश की प्रति का इंतजार किया जा रहा है।

माँ ने बेटे के खिलाफ चोरी की शिकायत की

इंदौर। विजय नगर इलाके में एक बुजुर्ग महिला ने अपने ही बेटे पर घर से नकदी और जेवर चोरी करने का आरोप लगाया। न्यू शीतल नगर में रहने वाली लक्ष्मीबाई (65) ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई कि 28 अप्रैल की शाम वह एक शादी समारोह में गई थीं। वापस लौटने पर घर का गेट खुला मिला और अलमारी की चाबी भी लगी हुई थी। जांच करने पर करीब 65 हजार रुपए नकद, सोने-चांदी के आभूषण और बेटी रेणुका व उसके बच्चों के जरूरी दस्तावेज गायब मिले। महिला ने आरोप लगाया कि उसका बेटा जितेंद्र खोजे ही घर का ताला तोड़कर यह सामान ले गया। घटना के समय घर में उसका दूसरा बेटा भी मौजूद था। पुलिस के मुताबिक आरोपी जितेंद्र का एक शादीशुदा महिला से प्रेम प्रसंग चल रहा है। इसी के चलते वह पहले भी घर में चोरी जैसी हरकत कर चुका है। बेटे की इन हरकतों से परेशान होकर मां ने गुरुवार को उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

राजेंद्र नगर में छात्रों के लैपटॉप चोरी

इंदौर। राजेंद्र नगर इलाके में बदमाशों ने एक फ्लैट को निशाना बनाया। उज्ज्वल सरैया और उसका दोस्त कुणाल नेगी, जो बीटेक के छात्र हैं, किराए के फ्लैट में रहते हैं। रात 3 बजे तक पढ़ाई करने के बाद सुबह जल्दबाजी में दरवाजा खुला रह गया। इसी दौरान चोर फ्लैट में घुसे और दोनों के लैपटॉप चोरी कर ले गए।

सड़क हादसों में 2 की मौत, पुलिस जांच

इंदौर। गुरुवार रात अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों में दो युवकों की मौत हो गई। पहली घटना आजाद नगर थाना क्षेत्र के नेमावर रोड की है। गीता नगर निवासी 25 वर्षीय जुनेद और उसके भाई अनस शादी समारोह में जा रहे थे, तभी उनकी बाइक डिवाइडर से टकराई। इसके बाद पीछे से आ रही आयशर ने जुनेद को अपनी चपेट में ले लिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। अनस को गंभीर चोटें आई हैं और उनका इलाज चल रहा है। दूसरी घटना में तिलक नगर क्षेत्र में रहने वाले 30 वर्षीय यशवंत, जो वीडियो गेम पार्लर चलाते थे, ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। 10 दिन पहले वे एक्टिवा से कहीं जा रहे थे, तभी बाइक सवार ने टक्कर मारकर घायल कर दिया था। सिर में गंभीर चोट आने पर निजी अस्पताल में दाखिल किया था। इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। यशवंत के परिवार में पत्नी, बेटा और बेटी हैं। दोनों मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है।

दोस्त का पता नहीं बताया तो चाकू मारा

इंदौर। विजयनगर थाना क्षेत्र में युवक पर उसके दोस्त का पता न बताने के कारण चाकू से हमला किया गया। फरियादी कुलदीप लश्करी निवासी बड़ी भमोरी ने बताया कि वह जूते की दुकान पर काम करता है। बुधवार को आरोपी सार्थक ने मेरे दोस्त शिवर का पता पूछा। मेरे द्वारा जानकारी नहीं देने पर सार्थक ने मारपीट की। जाते-जाते आरोपियों ने आसपास के लोगों को धमकी दी कि पुलिस उनका कुछ नहीं कर सकती। उधर, राजेंद्र नगर में बाइक टक्कर के बाद बदला लेने के इरादे से दो युवकों पर हमला किया गया। हमले में सुनील चौहान और विशाल को चोट आई। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

चेकिंग में पकड़ाया चेन स्नेचर

इंदौर। अपराधों पर नियंत्रण के लिए पुलिस लगातार चेकिंग अभियान चला रही है। इसी क्रम में द्वारकापुरी पुलिस पंजाब बेकरी के पास अंकल गली घुम रही थी। तभी पता चला कि 30 अप्रैल को बुजुर्ग महिला तफरीह करने अन्नपूर्णा मंदिर तरफ जा रही थी। इसी दौरान बाइक सवार बदमाश चेन झपटकर ले गया। तत्काल पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे में आए फुटेज के आधार पर आरोपी रोशन सिंह सिकलीकर निवासी आकाश नगर और उसके दो नाबालिग साथियों को पकड़ा। आरोपियों ने नशे की लत पूरी करने वारदात करना कबूला।

स्मार्ट ऐप 'प्रखर' और 'पुलिस सेतु' शुरू

इंदौर। स्मार्ट पुलिसिंग को और अधिक प्रभावी बनाने दो नई तकनीकी पहल की गई है। प्रखर और पुलिस सेतु ऐप का लोकार्पण पुलिस कमिश्नर संतोष सिंह ने किया। इन ऐप का उद्देश्य पुलिसिंग को और अधिक स्मार्ट, पारदर्शी और आमजन की सुविधाओं के अनुरूप बनाना है। सीसीटीवी कैमरों से अपराधियों की पहचान और ट्रैकिंग मिनटों में की जा सकेगी। अपराधियों की पहचान और उनके गतिविधियों की ट्रैकिंग को और प्रभावी बनाएगा। पुलिस सेतु ऐप किसी भी घटना-दुर्घटना की स्थिति में त्वरित संपर्क की सुविधा प्रदान करेगा। ऐप में संबंधित थाना क्षेत्र और तैनात पुलिसकर्मियों से संपर्क आसान होगा। पुलिस और नागरिकों के बीच समन्वय को मजबूत किया जाएगा। पुलिस कमिश्नर ने कहा कि आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल पुलिसिंग को अधिक स्मार्ट और जिम्मेदार बनाएगा, जिससे न केवल अपराध नियंत्रण में मदद मिलेगी, बल्कि बेहतर सेवाएं भी मिलेंगी।

5 बदमाश जिला बदर, 11 देंगे थाना हाजिरी

इंदौर। शहर में बढ़ते अपराधों पर अंकुश लगाने पुलिस लगातार बदमाशों पर कड़ी कार्रवाई कर रही है। इसी क्रम में 5 बदमाशों को जिला बदर और 11 को थाना हाजिरी के आदेश जारी किए हैं। पुलिस ने शोभित पिता सुरेश शर्मा निवासी स्कीम नंबर 114 पार्ट 2 को एक साल, अनिल पिता कैलाश चौधरी निवासी संत नगर को 6 माह, शैलेन्द्र उर्फ बाबा पिता नारायण वागले निवासी भावना नगर को 3 माह, रोहित उर्फ बच्चा पिता पूनम सिलावट निवासी नई बस्ती चितावद को 3 माह तथा युवराज पिता योगेन्द्र रघुवंशी निवासी स्नेहलतागंज को 3 माह के लिए जिला बदर किया है। जबकि, जितेंद्र उर्फ जीतू पिता सुरेश कछवाह निवासी स्कीम नंबर 78 को एक साल, सन्नी पिता जगदीश जारवाल निवासी एमओजी लाइन को एक साल, सुमित उर्फ लाला पिता धीरज वर्मा निवासी जबरन कॉलोनी को एक साल, रणजीत उर्फ रंजीत पिता राजेंद्र चौहान निवासी भाट मोहल्ला को एक साल, नवीन उर्फ जादूगर पिता राजू लश्करी निवासी मुराई मोहल्ला को 6 माह, विकास उर्फ विशाल उर्फ गोलू उर्फ गजक पिता बाबूलाल यादव निवासी परदेशीपुरा को 6 माह, अज्जू उर्फ अजय पिता कालीचरण उर्फ लक्ष्मीनारायण निवासी कुलकर्णी भट्ठा को 6 माह, संदीप उर्फ कालू पिता रमेश इंगले निवासी भीम नगर को 6 माह, महेश पिता कमल उर्फ विजय अंजले निवासी न्यू प्रकाश नगर झोपड़पट्टी 6 माह, विजय पिता कनक सिंह अंजले निवासी राहुल गांधी नगर को छह माह तथा कमल पिता गजराज खिंची निवासी राहुल गांधीनगर को 6 माह तक थाने में हाजिरी देना होगी।

लारेंस गिरोह के अपराध तंत्र में दोहरी निगरानी, अपने गुर्गों पर कड़ी नजर

इंदौर। लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के सक्रिय सदस्य हैरी बॉक्सर की कार्यप्रणाली को लेकर हाल ही में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। पुलिस की पूछताछ में यह स्पष्ट हुआ है कि गिरोह का संचालन बेहद योजनाबद्ध और संगठित तरीके से किया जाता था। हैरी बॉक्सर अपने ही साथियों पर पूरी तरह भरोसा नहीं करता, इसलिए किसी भी वारदात को अंजाम देने से पहले दोहरी निगरानी की व्यवस्था रखी जाती थी।

क्राइम ब्रांच की गिरफ्त में आए राजपाल चंद्रावत ने खुलासा किया कि जब भी किसी व्यक्ति या स्थान की जानकारी जुटाने के लिए गुर्गों को भेजा जाता था, तो उनके पीछे भी अलग से हथियारबंद बदमाश तैनात किए जाते थे। इनका काम यह सुनिश्चित करना होता था कि कोई भी व्यक्ति गलती न करे या किसी तरह की जानकारी बाहर न जाए। इसी डर और दबाव के चलते कई गुर्गों ने बाद में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करना ही बेहतर समझा।

रंगदारी, गोपनीयता और साजिशों से खौफ, बड़े कारोबारियों पर नजर

गोपनीय संपर्क और तकनीक

गिरोह के सदस्य आपसी संपर्क बनाए रखने के लिए ऐसे संचार माध्यमों का उपयोग करते थे, जिससे उनकी बातचीत को आसानी से पकड़ा न जा सके। इससे वे लंबे समय तक पुलिस की नजरों से बचते रहे और अपनी गतिविधियां संचालित करते रहे। राजपाल चंद्रावत ने पूछताछ में यह भी स्वीकार किया है कि बायो-कॉटन कारोबारी दिलीप सिंह राठौर के घर हुई फायरिंग की घटना में उसकी भूमिका थी। उसने बताया कि 50 लाख के लेनदेन विवाद की जानकारी उसने गिरोह तक पहुंचाई थी, जिसके बाद राठौर को 10 करोड़ रुपये की फिरौती के लिए धमकी भरा कॉल किया गया। इस मामले में पुलिस ने देवास से राजपाल के करीबी सहयोगी सुमेर सिंह सोलंकी को भी हिरासत में लिया है और उससे पूछताछ की जा रही है।

रंगदारी का जाल, विदेश तक पहुंच

जांच में यह भी सामने आया है कि गिरोह ने शहर के एक बड़े बिल्डर से करीब पांच करोड़ रुपए की रंगदारी वसूली थी। इस रकम को सीधे लेने के बजाय गुप्त माध्यमों से विदेश भेजा गया, जहां से यह रकम हैरी बॉक्सर तक पहुंचाई गई। भय के कारण संबंधित बिल्डर ने अब तक इस मामले में पुलिस के सामने कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई है, जिससे गिरोह का दबदबा और स्पष्ट होता है।

राजपाल ने बताया कि जेल में रहते हुए भी उसने अपने संपर्कों के जरिए गतिविधियां जारी रखीं। देवास के कुछ बदमाशों को एक बड़े बिल्डर की निगरानी के लिए लगाया गया था। गिरोह का अगला निशाना रेसकोर्स रोड क्षेत्र में रहने वाला बिल्डर विवेक दम्मानी था। इस काम के लिए जीतनगर निवासी सोनू उर्फ रितेश को जिम्मेदारी दी गई थी। योजना यह थी कि जैसे ही संकेत मिले, तुरंत फायरिंग कर वारदात को अंजाम दिया जाए।

राष्ट्रीय स्तर तक नेटवर्क

राजपाल चंद्रावत और योगेश भाटी का नाम पहले भी कई बड़े मामलों में सामने आ चुका है। इनमें पंजाब पुलिस के खुफिया मुख्यालय पर हुए रॉकेट हमले जैसी गंभीर घटनाएं शामिल हैं। इस मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने भी दोनों से पूछताछ की थी, जिससे गिरोह के नेटवर्क का दायरा राष्ट्रीय स्तर तक फैला होने की पुष्टि होती है।

साधारण जीवन से अपराध तक

राजपाल चंद्रावत का अतीत भी चौंकाने वाला है। वह रतलाम जिले के हथनारा गांव का निवासी है। कभी एक स्थानीय नेता के यहां वाहन चालक के रूप में काम करता था। बाद में उसने एक विद्यालय भी संचालित किया, लेकिन आर्थिक तंगी के चलते वर्ष 2021 में उसे बंद करना पड़ा। इसके बाद वह धीरे-धीरे अपराध की दुनिया में उतर गया और लारेंस गिरोह से जुड़कर संगठित अपराध का हिस्सा बन गया।

राजस्थान से लाई 1.29 करोड़ की ब्राउन शुगर बरामद, दो गिरफ्तार

ड्रग्स तस्करी पर बड़ी कार्रवाई, 70 पुड़िया में थी जब्त ड्रग

इंदौर। पुलिस ने नशे के कारोबार के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए बाणगंगा थाना क्षेत्र में दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से करीब 129 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद की गई है, जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत लगभग 1 करोड़ 29 लाख रुपए आंकी गई है। डीसीपी राकेश व्यास के अनुसार पकड़े गए आरोपियों की पहचान शिवम सोनी और अभिषेक सिंह तोमर के रूप में हुई है। पुलिस ने उनके पास से ब्राउन शुगर की करीब 70 पुड़िया जब्त की हैं, जिन्हें बेचने की तैयारी की जा रही थी। प्रारंभिक पूछताछ में खुलासा हुआ है कि आरोपी राजस्थान से मादक पदार्थ लाकर इंदौर और आसपास के इलाकों में सप्लाई करने की योजना बना रहे थे। पुलिस को आशंका है कि यह मामला किसी बड़े संगठित ड्रग्स नेटवर्क से जुड़ा हो सकता है। फिलहाल पुलिस आरोपियों से गहन पूछताछ कर रही है और इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश में जुटी हुई है।

बिना नंबर की बाइक पर दिखा

रात्रि गश्त के दौरान पुलिस जब एमआर- 4 रेलवे क्रॉसिंग क्षेत्र में संदिग्धों की चेकिंग कर रही थी, तभी युवक बिना नंबर प्लेट की एक्टिवा से आता दिखाई दिया। वह पुलिस को देखकर भागने का प्रयास करने लगा, लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर पकड़ लिया। पकड़े गए आरोपी का नाम शिवम उर्फ सिन्नी पिता राजू सोनी निवासी महेश यादव नगर है। आरोपी के कब्जे से पुड़िया एवं प्लास्टिक पैकेटों में पैक मादक पदार्थ, इलेक्ट्रॉनिक तौल एवं सीलिंग मशीन जब्त की है। पूछताछ के बाद उसके साथी अभिषेक सिंह पिता मनोहर सिंह तोमर निवासी न्यू गोविंद कालोनी को भी गिरफ्तार किया है। आरोपी शिवम पर बाणगंगा में एनडीपीएस के चार, अभिषेक पर बाणगंगा में दो, लसूड़िया, एरोड्रम में एक-एक केस दर्ज है।

कनाड़िया के तत्कालीन एसडीएम बड़कुल को शो कॉज नोटिस जारी

बिना अनुमति नक्शा सुधार आदेश दिया, 7 दिन में जवाब मांगा

इंदौर। प्रशासनिक नियमों की अनदेखी का एक गंभीर मामला सामने आया है, जिसमें कनाड़िया के तत्कालीन एसडीएम ओमनारायण बड़कुल पर पद के दुरुपयोग और लापरवाही के आरोप लगे हैं। कलेक्टर शिवम वर्मा ने इस प्रकरण को गंभीर मानते हुए संबंधित अधिकारी को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया है और पूरे मामले की जांच के निर्देश दिए हैं। यह मामला ग्राम अरंडिया, तहसील कनाड़िया की भूमि से जुड़ा है, जिसमें सर्वे नंबर 208/2/1/2/1 और 208/2/1/2/2 के नक्शा सुधार का प्रश्न उठाया गया था। इस प्रकरण की शुरुआत अधिवक्ता अतुल यादव की शिकायत से हुई, जिसके बाद प्रशासन द्वारा जांच कराई गई। जांच में यह स्पष्ट हुआ कि नक्शा सुधार जैसे मामलों में नियमानुसार कलेक्टर की अनुमति आवश्यक होती है, लेकिन इसके बावजूद बिना सक्षम स्वीकृति के अंतिम आदेश जारी कर दिया गया।

कलेक्टर की अनुमति नहीं ली – जांच के दौरान एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी सामने आया कि एसडीएम बड़कुल ने अपने पूर्व आदेश में स्वयं यह उल्लेख किया था कि कलेक्टर की अनुमति अनिवार्य है। इसके बावजूद बाद की प्रक्रिया में उसी नियम का पालन नहीं किया गया। इस विरोधाभासी कार्यप्रणाली को प्रशासन ने गंभीरता से लिया है और इसे

स्वेच्छाचारिता तथा घोर लापरवाही की श्रेणी में रखा है। प्रशासनिक जांच में यह भी पाया गया कि इस प्रकरण में मध्यप्रदेश भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 115 और 116 का उल्लंघन हुआ है। साथ ही, इस कृत्य को मध्यप्रदेश सिविल सेवा आचरण नियम 1965 के विरुद्ध आचरण माना गया है, जो कि शासकीय सेवा में कदाचार की श्रेणी में आता है।

संतोषजनक जवाब मांगा – कलेक्टर द्वारा जारी सूचना पत्र में स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि संबंधित अधिकारी सात दिनों के भीतर अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत करें। यदि जवाब संतोषजनक नहीं पाया गया, तो आगे अनुशासनात्मक कार्यवाही की संभावना भी बनी हुई है। यह प्रकरण प्रशासनिक तंत्र में नियमों के पालन की अनिवार्यता को रेखांकित करता है। साथ ही यह भी संकेत देता है कि उच्च अधिकारी अब ऐसे मामलों में लापरवाही को लेकर सख्त रुख अपना रहे हैं, ताकि शासन व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही बनी रहे।

तेज रफ्तार कार का कहर, बस स्टॉप तोड़कर थाने में घुसी, 4 युवक फरार

पलासिया चौराहे पर देर रात हादसा, सो रहा व्यक्ति बाल-बाल बचा

इंदौर। पलासिया चौराहे पर गुरुवार देर रात एक तेज रफ्तार कार ने जमकर उत्पात मचाया। सफेद रंग की वरना कार इतनी तेज गति में थी कि उसने सबसे पहले स्मार्ट सिटी के बस प्रतीक्षालय को जोरदार टक्कर मारी और उसे पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। इसके बाद भी कार नहीं रुकी और सीधे पलासिया थाने की सीमा दीवार तोड़ते हुए अंदर जा घुसी। इस घटना से इलाके में हड़कंप मच गया। हादसे के समय बस प्रतीक्षालय के पास एक व्यक्ति सो रहा था। गनीमत रही कि वह कार की चपेट में आने से बच गया, अन्यथा बड़ा नुकसान हो सकता था। टक्कर इतनी जोरदार थी कि प्रतीक्षालय का ढांचा मलबे में बदल गया और आसपास अफरा-तफरी की स्थिति बन गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कार में चार युवक सवार थे। जैसे ही वाहन थाने के अंदर जाकर क्षतिग्रस्त हुआ, चारों युवक तुरंत बाहर निकले और मौके से भाग गए। घटना के बाद पुलिस ने तत्काल वाहन को अपने कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। वाहन के दस्तावेजों की जांच में पता चला कि यह कार रतलाम जिले के पिपलोदा निवासी महेश सुथार के नाम पर दर्ज है।

घटना रात 2 से 2.30 बजे के बीच

पलासिया थाना प्रभारी सुरेंद्र सिंह रघुवंशी के अनुसार यह घटना रात लगभग 2 से 2:30 बजे के बीच हुई। कार साकेत की ओर से तेज गति से आई थी और रास्ते में फुटपाथ तथा लोहे की रेलिंग को नुकसान पहुंचाते हुए थाने की दीवार तोड़कर अंदर पहुंच गई। वाहन को भी काफी क्षति पहुंची है। प्रारंभिक जानकारी में सामने आया है कि कार में सवार चारों युवकों को गंभीर चोट नहीं आई है। पुलिस आस-पास लगे निगरानी यंत्रों की सहायता से आरोपियों की पहचान करने में जुटी है और वाहन मालिक से भी संपर्क किया गया है।

मेट्रो स्टेशन के लिए हटेंगी चौदह दुकानें, मिलेगी वैकल्पिक दुकान

इंदौर। मेट्रो रेल परियोजना के तहत छोटा गणपति भूमिगत स्टेशन के निर्माण कार्य में तेजी लाने के लिए एक महत्वपूर्ण फैसला लिया गया है। नगर निगम के स्वामित्व वाली 14 दुकानों को हटाया जाएगा, जो इस स्टेशन के निर्माण में बाधा बन रही थीं। अधिकारियों ने बताया कि इन दुकानों के कारण परियोजना में अपेक्षित गति नहीं आ पा रही थी। मेट्रो परियोजना प्रदेश की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक है। छोटा गणपति स्टेशन शहर के व्यस्ततम क्षेत्रों में से एक है, और यहां भूमिगत स्टेशन का निर्माण कार्य तेजी से जारी है। यह दुकानें कई वर्षों से यहां संचालित हो रही थीं और इनके हटने से निर्माण गतिविधियों को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया जा सकेगा।

यहां मेट्रो के भूमिगत स्टेशन का निर्माण कार्य तेजी से जारी

वैकल्पिक व्यवस्था

नगर निगम और मेट्रो अधिकारियों ने प्रभावित दुकानदारों के हितों को ध्यान में रखते हुए उन्हें वैकल्पिक स्थान उपलब्ध कराने का प्रस्ताव रखा है। दुकानदारों से चर्चा कर उनकी सहमति से यह व्यवस्था की जाएगी, ताकि उनका व्यवसाय प्रभावित न हो। प्रशासन का प्रयास है कि विस्थापन के कारण दुकानदारों को किसी प्रकार की आर्थिक हानि न हो और उन्हें जल्द से जल्द नई जगह पर स्थापित किया जा सके। इस संबंध में जल्द ही अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

परियोजना की वर्तमान स्थिति

इंदौर मेट्रो परियोजना का कार्य तेजी से जारी है, और शहर में विभिन्न स्थानों पर एलिवेटेड और भूमिगत दोनों तरह के स्टेशन बनाए जा रहे हैं। कई हिस्सों में सिविल वर्क पूरा हो चुका है, और ट्रैक बिछाने तथा विद्युतीकरण का काम भी प्रगति पर है। इस परियोजना का उद्देश्य शहर में यातायात को सुगम बनाना और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना है। छोटा गणपति स्टेशन जैसे प्रमुख बिंदुओं पर काम पूरा होना परियोजना के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि, यह एक घनी आबादी वाले क्षेत्र को जोड़ेगा। अधिकारियों को उम्मीद है कि इस कदम से निर्माण कार्य की गति में तेजी आएगी और परियोजना निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरी हो सकेगी।

कहानी

रमेश कुमार 'रिपु'

एक दिल,दो घर

रायपुर के छोटापारा मोहल्ले की गलियों भले ही संकरी थी मगर यहाँ रहने वाले लोगों के दिल अक्सर खुले रहते थे। इसी मोहल्ले में आमने-सामने दो मकान थे। एक मैं रहते थे आनंद तिवारी और दूसरे में रमजान अली।

दोनों की दोस्ती पूरे मोहल्ले में मिसाल मानी जाती थी। दोनों के धर्म अलग थे,पर रिश्ते में कोई दूरी नहीं थी। सुबह की चाय कभी रमजान अली के घर होती तो शाम की गपशप आनंद तिवारी के बरामदे में। ईद पर रमजान अली के घर से कटोरा भर सेवइयां आनंद तिवारी के घर पहुँच जाता, और होली पर तिवारी जी की पत्नी अपने हाथ की गुजिया रमजान के बच्चों के लिए भेजना नहीं भूलती।

मगर इस दोस्ती के बीच एक अजीब विडंबना थी। दोनों के बच्चे एक-दूसरे से अक्सर उलझ पड़ते थे। धर्म और रीति-रिवाजों को लेकर उनकी छोटी-छोटी तकरारें कई बार बड़े झगड़े में बदल जाती थी। रमजान अली का बेटा जावेद और आनंद तिवारी का बेटा समीर छोटी-छोटी बातों पर भिड़ जाते।

तुम लोग काफ़िर हो हमारे त्योहारों में मत आया करो।÷

जावेद ताने देता।

समीर भी पीछे नहीं रहता तो तुम लोग हमारी होली में क्यों नहीं आते?

एक दिन मोहल्ले की नाली से बहकर मुर्गे की हड्डी आनंद तिवारी के घर के सामने आकर अटक गई। यह देखते ही समीर तिवारी भड़क उठा।

ये जानबूझकर किया है। वह चिल्लाया।

उधर से जावेद भी आ गया।

हमने कुछ नहीं किया, उसने जवाब दिया।

समीर ने गुस्से में कहा कूड़ेदान में फेंक सकते थे, मगर नाली में फेंका ताकि हमारे घर के सामने आए। जानबूझकर किया है।

बात बढ़ते. बढ़ते दोनों में धक्का मुक्की तक पहुंच गई। मौहल्ले वालों को बीच बचाव करना पड़ा। दोनों घरों के बड़े लोग यह सब देखकर सिर हिलाते रहते। मोहल्ले के लोग कई बार इन बच्चों की लड़ाई से परेशान हो जाते।

एक दिन चाय पीते हुए आनंद तिवारी ने कहा समक्षा में नहीं आता रमजान, हमने तो कभी धर्म को दीवार नहीं बनने दिया।

रमजान अली ने मुस्कुराते हुए कहा समय बदल गया है दोस्त, अब लोग पहले धर्म देखते हैं, इंसान बाद में। समय लगेगा दोस्त, एक दिन इन्हें भी समझ आएगा।÷

रमजान अली और आनंद तिवारी की दोस्ती इतनी गहरी कैसे बनी यह बाल मोहल्ले में बहुत कम लोग जानते थे। क्यों कि यह कहानी कई साल पुरानी थी।

कई साल पहले की बात है रात का समय था। छोटापारा की उस रात में अचानक आग उत्तर आई थी। मोहल्ले में अफरा-तफरी मच गई थी। दुकानें बंद हो गई थी, गलियों में डर का माहौल था। गलियों में भागते लोगों की आवाजें, दूर जलते टायरों का धुआँ और बंद दरवाजों के पीछे सहमी साँसें सब कुछ एक साथ थर्रा रहा था। अफरा- तफरी मच गई थी। हवा में डर और अफवाहें तैर रही थीं। दंगा हो गया दंगा हो गया। किसी ने चिल्लाकर कहा। छोटापारा का माहौल एकदम बदल गया। जो मोहल्ला शाम तक हँसी-मजाक से भरा रहता था,अब वहाँ सन्नाटा था। और उसी भयभीत रात में एक घर के भीतर एक और संघर्ष शुरू हो चुका था, ज़िंदगी और मौत के बीच। रमजान अली के घर से दर्द भरी कराह सुनाई दे रही थी। फरीदा की प्रसव पीड़ा बढ़ती जा रही थी और बाहर पूरा मोहल्ला आग और अफवाहों से घिरा हुआ था।

रमजान अली के घर के अंदर घबराहट मची हुई थी। उनकी पत्नी फरीदा दर्द से कराहते हुए कहा, रमजान लगता है समय आ गया है।

रमजान अली घबरा गए। फरीदा गर्भवती थी और उसे अस्पताल ले जाना जरूरी था। लेकिन बाहर दंगे की वजह से कोई वाहन नहीं मिल रहा था। रमजान अली दरवाज़े पर खड़े होकर परेशान नज़र से सड़क की ओर देख रहे थे। तभी गली में एक टैक्सी की हेडलाइट दिखाई दी। टैक्सी आकर उनके घर के सामने रुकी। ड्राइवर सीट से आनंद तिवारी उतरे।

उतरते ही उन्होंने पूछा,क्या हुआ रमजान इतनी घबराहट क्यों है?

रमजान अली ने कहा फरीदा को दर्द शुरू हो गया है, मगर बाहर हालात देख रहे हो। आनंद तिवारी ने बिना एक पल गंवाए कहा, चलो, जल्दी भाभी को लेकर आओ।

रमजान अली चौंक गए।

अरे बाहर दंगा है।

आनंद तिवारी ने मुस्कुराकर कहा रमजान भाई, दंगे मजहब के नाम पर होते हैं, मगर बच्चे हमेशा इंसानियत के घर में ही जन्म लेते हैं। दंगा इंसानों ने किया है, इंसानियत ने नहीं।

कुछ ही मिनट में फरीदा को टैक्सी में बैठाया गया। टैक्सी सुनसान सड़कों से होते हुए अस्पताल की ओर दौड़ पड़ी। अस्पताल पहुंचते ही डॉक्टरों ने तुरंत फरीदा को ऑपरेशन थिएटर में ले लिया।

कुछ देर बाद डॉक्टर बाहर आए।

मरीज का बहुत खून बह गया है, तुरंत ब्लड चाहिए।

रमजान अली के चेहरे का रंग उड़ गया। तभी पीछे से आनंद तिवारी की आवाज़ आई, डॉक्टर साहब मेरा ब्लड टेस्ट कर लीजिए।

रमजान अली ने उन्हें देखा। आनंद तिवारी ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, भाई जान, अगर मेरा खून फरीदा भाभी को लग सकता है तो ले लीजिए, यह मत सोचिए कि यह किसी हिंदू का खून है। खून का रंग पूछकर नसें नहीं चलती रमजान भाई यह बस दिल से दिल तक रास्ता बना लेता है।

रमजान अली कुछ क्षण तक उन्हें देखते रहे। फिर मन ही मन सोचा में इसे हिंदू समझता था यह तो इंसानियत से भी ऊँचा निकला।

कुछ देर बाद आनंद तिवारी का खून फरीदा को चढ़ाया गया। और उसी रात फरीदा ने एक बेटे को जन्म दिया। रमजान अली ने बच्चे को गोद में लेकर कहा, इसका नाम जावेद होगा।÷

उस रात के बाद शाम ढलते ही छोटापारा की गली में एक छोटा सा दृश्य रोज बनता था। आनंद तिवारी और रमजान अली दरवाजे पर चारपाई डालकर बैठते और चाय के दो कपों के साथ दिनभर की बात करते। मोहल्ले वाले मजाक में कहते इन दोनों की दोस्ती चाय से भी ज्यादा गरम है।

धीरे-धीरे रमजान अली और आनंद तिवारी के बीच एक ऐसा रिश्ता बन गया था जो खून से भी गहरा था। साल गुजरते गए। दोनों परिवार पड़ोसी की तरह नहीं,रिश्तेदारों की तरह रहने लगे। लेकिन अजीब बात यह थी कि उनकी दोस्ती जितनी गहरी थी, उनके बच्चों की नोक-झोंक उतनी ही ज्यादा थी।

कुछ दिनों बाद रमजान अली अस्पताल गए और अंगदान का फॉर्म भर आए। दिल,किडनी, लीवर और आँखे सब दान करने की सहमति दे दी। घर में सबने विरोध किया। लेकिन रमजान अली हँसकर बोले मरने के बाद शरीर तो मिट्टी हो जाता है, अगर किसी की जिंदगी बच जाए तो क्या बुरा है?

उस शाम उन्होंने मजाक में आनंद तिवारी से कहा, अगर कभी तुझे दिल की जरूरत पड़े तो मेरा दिल ले लेना।

दोनों दोस्त देर तक हँसते रहे। उन्हें क्या पता था कि एक दिन यही मजाक सच बन जाएगा। कुछ समय बाद एक सड़क दुर्घटना में रमजान अली की मौत हो गई। पूरा मोहल्ला शोक में डूब गया। आनंद तिवारी जैसे अंदर से टूट गए थे। लेकिन नियति ने अभी एक और मोड़ तैयार कर रखा था। कुछ ही दिनों बाद आनंद तिवारी को दिल का गंभीर दौरा पड़ा।

डॉक्टरों ने कहा इनकी जान बचाने के लिए हार्ट ट्रांसप्लांट करना पड़ेगा।

जब डोनर की सूची देखी गई तो एक नाम सामने आया रमजान अली।

यह सुनकर आनंद तिवारी की आँखें भर आई। उन्हें अपने दोस्त की वह हँसी मजाक वाली बात याद आ गई अगर कभी तुझे दिल की जरूरत पड़ी तो मेरा दिल ले लेना।÷ लेकिन असली मुश्किल अभी बाकी थी। रमजान अली के बेटे जावेद ने साफ़ मना कर दिया।

मैं नहीं चाहता कि मेरे अब्बा का दिल आनंद तिवारी को दिया जाए।

डॉक्टरों ने समझाने की कोशिश की। तुम्हारे पिता ने स्वयं अंगदान की सहमति दी थी।

जावेद ने कठोर स्वर में कहा जो भी हो, मैं यह नहीं होने दूंगा।

यह खबर मोहल्ले में आग की तरह फैल गई। कुछ लोग जावेद का समर्थन कर रहे थे ठीक कर रहा है. अपने बाप का दिल किसी हिन्दू को क्यों दे? कोई रिश्तेदार होता या फिर अपनी बिरादरी का होता अथवा जान पहचान का तो बात कुछ और थी।

कुछ लोग कह रहे थे,अरे यह तो उनके आखिर पिता की आखिर इच्छा थी।

तनाव बढ़ता जा रहा था। उधर अस्पताल में आनंद तिवारी की हालत बिगड़ती जा रही थी।एक दिन समीर तिवारी गुस्से में जावेद के घर पहुंच गया।

तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? उसने ऊँची आवाज़ में कहा।

जावेद भी भड़क गया।

क्यों कर रहा है? क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे अब्बा का दिल तुम्हारे घर में धड़के...

समीर ने कहा तुम्हें तो गर्व होना चाहिए।

जावेद की आँखै लाल हो गई। गर्व? तुम्हें पता है, मेरे अब्बा को कबाब कितना पसंद समीर चुप रहा।

जावेद आगे बोला और तुम लोग क्या खिलाओगे? खिचड़ी। वो भी ईद के दिन।÷

उसकी आवाज़ भरी गई।

उनका दिल यही कहेगा, मुझे किस शरीर में लगा दिया मेरी सारी ख्वाहिशों का जनाज़ा निकाल दिया।

यह सुनकर वहाँ खड़े सभी लोग चुप हो गए। तभी आनंद तिवारी की बेटी नेहा आगे आई।उसने शांत स्वर में कहा जावेद भाई आप एक बात क्यों नहीं सोचते?

सबकी नजरें उसकी ओर उठ गई।

नेहा ने कहा, आपके अब्बा का दिल किसी हिन्दू के सीने में नहीं लगेगा।

वह थोड़ी देर रुकी।

बल्कि एक हिन्दुस्तानी के सीने में लगेगा।

कमरे में सन्नाटा छा गया।नेहा की आवाज़ फिर गूँजी, क्या आप हिन्दुस्तानी नहीं हैं..?

तभी फरीदा धीरे से बोली, जावेद तुम्हें एक बात बतानी है।

फिर उन्होंने दंगे वाली रात की पूरी कहानी सुनाई। कैसे आनंद तिवारी उन्हें अस्पताल ले गए थे और कैसे उन्होंने अपना खून देकर उनकी जान बचाई थी। फिर उन्होंने कहा, अगर आनंद तिवारी उस दिन मुझे खून नहीं देते, तो शायद में भी नहीं बचती, और तुम भी इस दुनिया में नहीं होते।

जावेद की आँखों से आँसू बहने लगे। उसे पहली बार अपने अब्बा और आनंद तिवारी की दोस्ती का असली राज समझ आया। उसे अपने अब्बा की बातें याद आने लगी इंसानियत सबसे बड़ा मजहब है।

कुछ देर बाद उसने धीमी आवाज़ में कहा, अगर मेरे अब्बा का दिल किसी को जिंदगी दे सकता है तो उसे रोकने वाला में कौन होता हूँ..?

डॉक्टरों को तुरंत खबर दी गई। ऑपरेशन की तैयारी शुरू हो गई। कई घंटे चले उस कठिन ऑपरेशन के बाद आखिरकार डॉक्टर बाहर आ कर कहा,÷ऑपरेशन सफल रहा।

कुछ दिनों बाद आनंद तिवारी अस्पताल से बाहर आए। जावेद उनके सामने खड़ा था। दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। फिर आनंद तिवारी ने जावेद को गले लगा लिया। उनकी आँखों में आँसू थे। धीरे से बोले ÷तुम्हारे अब्बा जब भी शाम को आते थे, कहते थे, चलो आनंद, एक कप चाय हो जाए। अब लगता है, मेरे सीने में धड़कता यह दिल हर शाम वही बात दोहरा रहा है। रमजान फिर से मेरे साथ बैठकर चाय पीना चाहता है। जावेद मुस्कुरा पड़ा।

उस दिन दोनों धर्मों की बहसें खत्म हो गई, क्योंकि एक दिल दो घरों के बीच धड़क रहा था। छोटापारा मोहल्ले ने एक सच्चाई फिर से समझी, धर्म अलग हो सकते हैं, रिवाज अलग हो सकते हैं,लेकिन दिल की धड़कन सिर्फ एक भाषा समझती है, इंसानियत की। और सच यही है, आखिर दिल है हिन्दुस्तानी।

व्यंग्य

दिल की हसरत झालमुड़ी खाने की

सुरेश सौरभ
लेखक व्यंग्यकार हैं।

उस दिन बाजार से सब्जी लेकर लौट रहा था। तभी मेरी नज़र सामने झालमुड़ी की एक दुकान पर पड़ी। जी ललचा गया। जल्दी-जल्दी दुकान के करीब आया।अपनी जेबें टटोलीं। दस का सिक्का बरामद हुआ। दुकानदार की ओर दस का सिक्का बढ़ाते हुए बोला-दस की झालमुड़ी देना भाई। झालमुड़ी वाला ऊपर से नीचे तक मुझे अजीब दृष्टि से देखने लगा। मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मैं अजायबघर में लाया गया विलुप्त होती प्रजाति का कोई जीव हूँ। वह कर्कश आवाज में बोला-किस दुनिया में रहते हो जी। इतना बरेली में

झुमका नहीं गिरा होगा, जितना झमाझम रुपया गिरा है। दस रुपये में झालमुड़ी सपने में खा सकते हो महाशय, हकीकत में कभी नहीं। हमारे यहाँ शुरुआत ही 50 रुपये से होती है।

कई प्रकार की झालमुड़ी देखकर ललचा रही अपनी सारी इंद्रियों को समेट कर मैं विनीत भाव से बोला-बड़े-बड़े लोग तो दस-दस रुपये में खा रहे हैं। आप सोशल मीडिया में देखते नहीं क्या?

मुझे न रील देखने का शौक है, न रील बनवाने की आदतें दिमाग में डाउनलोड करके रखी हैं। हाथी के दांत देखें हैं न... अब किनारे हटो फालतू में न जाने कहां-कहां से भेजा फ्राई करने लोग चले आते हैं।

मैंने भारी मन से सिक्का वापिस जेब में डाला। अपनी ललचाई जीभ को समझाते हुए कहा-तू इतनी महंगी झालमुड़ी खा कर क्या करेगी। चल किसी चुनावी पार्टी के कार्यालय में, वहाँ एक से बढ़कर एक आइटम खाने को मुफ्त में मिलेंगे, तब मेरी जुबान ने संतोष कर लिया। मैं बुझे दिल से दुकान के आगे बढ़ रहा था, पर मेरा मन अब चुनावी दावतों की ओर बेतहाशा भागा जा रहा था।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पं. कैलाशचंद्र पंत- सरलमना का सफ़रनामा

व्यक्तित्व

विजय जोशी
पूर्व ग्रुप महाप्रबंधक, भेल

जो भी पुरूष निऱ्पाप, निष्कलंक, निडर है
उसे प्रणाम. कलियुग में वही हमारा ईश्वर है

भाषा केवल संप्रेषण का ही माध्यम ही नहीं, अपितु सभ्यता, संस्कृति एवं विरासत की वाहिनी है, बशर्ते इस बात के मर्म, धर्म को आत्मसात करते हुए हम इसे निजी जीवन में भी सार्थक कर सकें। बकलम भारतेंदु हरिश्चंद्र - निज भाषा उन्नति अहै निज उन्नति को मूल। यह हुई पहली बात।

दूसरी यह कि आजादी तुरंत पश्चात के स्वार्थ समाहित राजनैतिक नेतृत्व ने इस पहलू का तिरस्कार कर मैकाले का शिष्यत्व स्वीकारते हुए हिंदी हित को ताक पर रख दिया।

इस सबके बावजूद भी यदि हिंदी उभर कर निखर सकी तो इसका श्रेय इस बात को जाता है कि यह कभी राज्याश्रित नहीं रही। भक्तिकाल के कवियों और संतों के माध्यम से यह जन जन की शिराओं में समाहित हो गई। स्वाधीनता उपरांत यह दायित्व निभाया तत्कालीन रचनाधर्मी संस्कारित पीढ़ी ने जिनकी समर्पित सेवा के परिप्रेक्ष्य में ही हिंदी प्रतिष्ठित हो सकी।

इस संदर्भ में जो प्रमुख नाम उभरते हैं उनमें शीर्ष पर हैं कैलाशचंद्र पंत। एक निर्मल, निऱ्पाप मुखाकृति। सहज, सरल, सादगीयुक्त। कहीं कोई छल या रहस्य नहीं। अनूठा व्यक्तित्व। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा या स्वार्थ से सर्वथा परे। वही जिसकी कल्पना स्वयं राम ने की ः

निर्मल मन जन सो मोहि पावा
मोहि कपट छल छिद्र न भावा

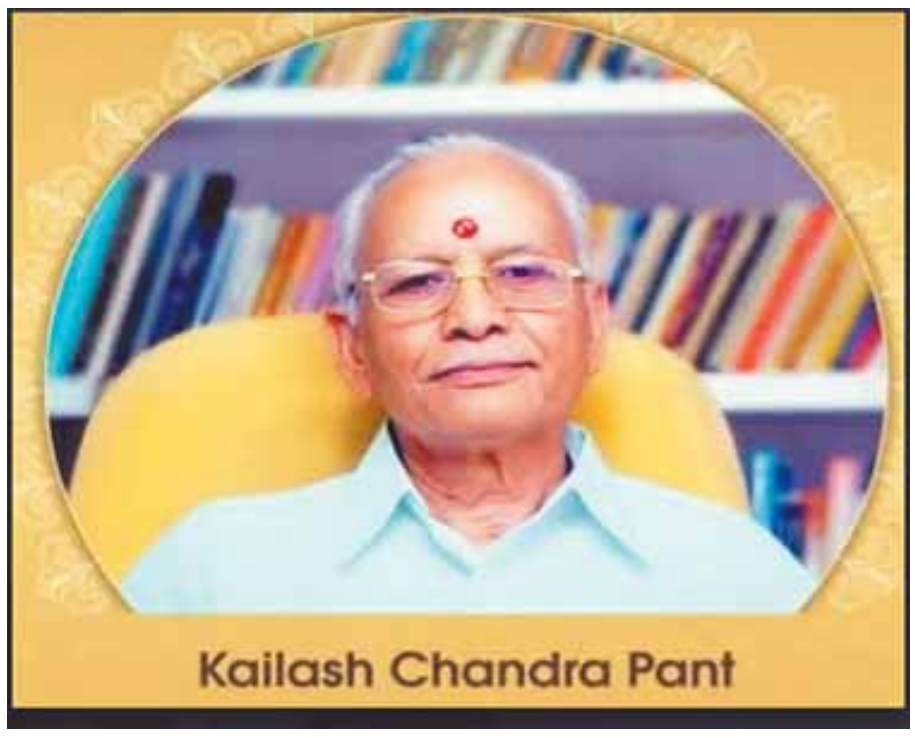

मैं साठ के दशक में शासन प्रशासन द्वारा हिंदी की उपेक्षा का चश्मदीद गवाह रहा हूं। एक छोटे से भवन में स्थापित तत्कालीन हिंदी भवन प्रमुख नेत्र सुख वंचित बैजनाथ दुबेजी की व्यथा का प्रत्यक्षदर्शी। तब हिंदी दिवस भी मनाया जाता था भेल सभागार में।

और फिर पदार्पण हुआ एक सेवाभावी समर्पित युवा शख्सियत श्री कैलाशचंद्र पंत का, जिन्होंने बहैसियत मंत्री संचालक, म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हिंदी भवन से जुड़ते हुए हिंदी के पौधे को अपने निष्काम कर्मी प्रयत्नों से सींचते हुए न केवल पुष्पित पल्लवित किया अपितु संपूर्ण समाज को वटवृक्ष की शीतल छांह प्रदान करते हुए साहित्यकारों को प्रतिभा निखार मंच की सुविधा।

एक कहावत है कि रोम वाज़ नॉट बिल्ट इन ए डे अर्थात रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था। हिंदी भवन के वर्तमान स्वरूप के संदर्भ में यह स्वयंसिद्ध है, जिसकी सुदृढ़ नींव में समाहित है दादा पंत का स्वेद उर्फ़ खून पसीना।

दुनिया में वही शख्स है तारीफ़ के काबिल
जिस शख्स ने हालात का मुख मोड़ दिया हो

जहां तक वर्षों से निरंतर प्रवाहमान प्रतिष्ठित आयोजनों की बात है तो उसकी एक लंबी फेहरिस्त है पावस व्याख्यानमाला, समाजसेवी एवं हिंदीतर भाषी हिंदी सेवा सम्मान, वरिष्ठ विमर्श, होली, दिवाली उत्सव सहित मासिक साहित्यिक पत्रिका अक्षरा आदि।

हाल ही में आपने आयु के 90 वर्ष पूर्ण होने पर अपना दायित्व अनासक्त भाव से अगली पीढ़ी के युवा व्यक्तित्व को सौंपा है, जो इस दौर की कुर्सी प्रेमी जमात के लिये बहुत बड़ा संदेश है। पद्मश्री जैसे अनेकानेक पुरस्कारों से आपको सम्मानित किया गया है। इन सद्प्रयासों से सम्मान की महिमा में भी श्रीवृद्धि ही हुई है।

दादा पंतजी का चार दशक से भी अधिक का मेरे प्रति अग्रज समान स्नेह मेरी अनमोल निधि है। आपका साथ गहन पीड़ा के क्षणों में पूरी शिद्दत एवं श्रद्धा के साथ की गई प्रार्थना के समान रहा है, जो इन पलों में भी मैं मन ही मन दोहरा रहा हूं। कुल मिलाकर आपके संदर्भ में बतर्ज रामचरित मानस-

काम क्रोध मद मान न मोहा
लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया
तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया

फिल्म समीक्षा

बार-बार दिशा बदलने से दुर्दशा को प्राप्त हुई 'डकैत'

आदित्य दुबे
लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

फिल्म की कहानी हरिदास (अदिवी शेष) की है, जो तेरह साल जेल में बिताने के बाद बाहर निकलने वाला है। उसके दिमाग में बस एक ही विचार है कि जैसे भी हो पैसे जुटाऊँ और विदेश मैं बस जाऊँ। लेकिन, उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा और अधूरा अध्याय जूलियट (मृणाल ठाकुर) का भी तो है जिसे वह अपने जेल जाने की वजह मानता है। जब दोनों वर्षों बाद आमने-सामने आते हैं, तो मामला सिर्फ प्यार का नहीं रहता। यहा जरूरत, गुस्सा और मजबूरी तीनों साथ खड़े नजर आते हैं। कहानी में लॉकडाउन का बैकड्रॉप भी है, जहां अस्पतालों में अफरा-तफरी का माहौल है। इसी दौरान हरिदास को पता चलता है कि एक अस्पताल के अन्दर भारी मात्रा में काला पैसा घूम रहा है, जिसे अस्पताल का मालिक (प्रकाश राज) सम्भाल रहा है। इधर जूलियट अपने किसी करीबी के इलाज के लिए एक करोड़ रुपये जुटाने में लगी है और हरिदास इस मौके को एक प्लान में बदल देता है। कहानी में कई मौके आते हैं जहाँ यह बहुत सलीके की फिल्म बन सकती थी, लेकिन फिल्म बार-बार दिशा बदलती है और इससे उसकाअसर कमजोर हो जाता है।

फिल्म का जेनर चाहे जो हो सनी देओल का फिल्म के नाम से जुड़ा संदीदा जॉइण्डर (विशेषण) है - प्रेम कथा । विभाजन की त्रासदी पर जब गदर बनी तो फिल्म का नाम लिखा गया गदर - एक प्रेमकथा , भारत- पाकिस्तान की पृष्ठभूमि में एक जासूसी फिल्म बनी - - द हीरो उसके साथ भी जोड़ा गया - ए लव स्टोरी ऑफ स्पॉय । इसी तर्ज पर इस माह दस तारीख को प्रदर्शित फिल्म - डकैत को लिखा गया - डकैत ः एक प्रेमकथा । जातिवाद का उलझाव , जेल से फरारी , पुराना प्यार, एक करोड़ की डकैती और ढेर सारे जोड़- तोड़ इस सबको समेट कर जो जमावट -

डकैत -एक प्रेमकथा में की गई है वो ऊपरी तौर पर जितनी मनभावन लगती है उतनी ही उलझाव से भरी भी है । फिल्म के निर्माता की नीयत तो अच्छी है, लेकिन उसे फिल्माने में एकाधिक चूक ने सब कुछ गड़बड़ा दिया । फिल्म की शुरुआत आपको बाँधती है, लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उस पर पकड़ ढीली पड़ती जाती है और दर्शक सोचने लगता है कि आखिर फिल्म का मंतव्य क्या है ?

फिल्म की कहानी हरिदास (अदिवी शेष) की है, जो तेरह साल जेल में बिताने के बाद बाहर निकलने वाला है। उसके दिमाग में बस एक ही विचार है कि जैसे भी हो पैसे जुटाऊँ और विदेश मैं बस जाऊँ । लेकिन, उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा और अधूरा अध्याय जूलियट (मृणाल ठाकुर) का भी तो है जिसे वह अपने जेल जाने की वजह मानता है। जब दोनों वर्षों बाद आमने-सामने आते हैं, तो मामला सिर्फ प्यार का नहीं रहता। यहा जरूरत, गुस्सा और मजबूरी तीनों साथ खड़े नजर आते हैं। कहानी में लॉकडाउन का बैकड्रॉप भी है, जहां अस्पतालों में अफरा-तफरी का माहौल है।

इसी दौरान हरिदास को पता चलता है कि एक अस्पताल के अन्दर भारी मात्रा में काला पैसा घूम रहा है, जिसे अस्पताल का मालिक (प्रकाश राज) सम्भाल रहा है। इधर जूलियट अपने किसी करीबी के इलाज के लिए एक करोड़ रुपये जुटाने में लगी है और हरिदास इस मौके को एक प्लान में बदल देता है। कहानी में कई मौके आते हैं जहाँ यह बहुत सलीके की फिल्म बन सकती थी, लेकिन फिल्म बार-बार दिशा बदलती है और इससे उसकाअसर कमजोर हो जाता है।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है जुलियट की भूमिका में मृणाल ठाकुर इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत हैं। उनका चरित्र सिर्फ रोने या मजबूरी दिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उस चरित्र चित्रण में एक मज़बूती है । जुलियट ही चरम पर इस फिल्म को सम्भाल लेती है ।अदिवी शेष की भूमिका भी प्रभावशाली है ।उन्होंने एंग्री मैन वाला अंदाज अच्छे से निभाया है । लेकिन बीच में उनके अभिनय के झोल खान जाने से उनका दर्शकों से जुड़ाव टूट जाता है ।अनुराग कश्यप स्क्रीन पर आते ही ध्यान खींचते हैं। भले ही भूमिका छोटी हो। अतुल कुलकर्णी अपने अनुभव से चरित्र में वजन लाते हैं। प्रकाश राज एक भ्रष्ट अस्पताल मालिक की भूमिका में दिखते हैं, लेकिन उनका ट्रैक और ज्यादा मजबूत हो सकता था।

निर्देशक शनील देव अपनी सोच को परदे पर उतारने में बड़े ऊहापोह में नज़र आये । फिल्म कभी एक्शन थ्रिलर लगती है, कभी इमोशनल ड्रामा और कभी लव स्टोरी, लेकिन इनमें से कोई भी ट्रैक पूरी मजबूती से नहीं उभर पाता है । इस वजह से फिल्म की पहचान साफ नहीं बनती। पटकथा ने फिल्म को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया है। पहला हाफ धीमा है और कई सीन बिना असर के गुजर जाते हैं। दूसरे हाफ में खासकर आखिरी तीस मिनट में फिल्म थोड़ी पकड़ बनाती है और यहाँ कुछ सीन सच में अच्छे लगते हैं। लेकिन पूरी फिल्म को संभालने के लिए यह काफी नहीं है।फिल्म का बैकग्राउंड म्यूजिक काफी अच्छा है और कई दृश्यों को बेहतर बना देता है। सिनेमैटोग्राफी फिल्म को एक अच्छा सहारा देती है। गाने ठीक हैं, लेकिन थिएटर से बाहर निकलते ही याद नहीं रहते।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

भारत में कला विद्यालय और समय से द्वंद्व

पहले भारत गांवों में बसता था, भारत को देखने समझने के लिए गांवों को नजदीक से देखने समझने की आवश्यकता होती थी। भारतीय लोग हमेशा से शांति पसंद लोग थे। अपने खुशियों में खुश तथा दूसरों के दुःखों में साथ खड़े होने वाले लोग थे। भारतीय कभी किसी का अनभल नहीं चाहते थे पर दुर्भाग्य ही कह सकते हैं कि हमारे शान्तिप्रियता को बाहरी लोगों द्वारा कमजोरी समझा गया और हमेशा कोई न कोई भारतीय भूमि पर गिद्धों की भांति नजर गड़ाते हुए आ ही जाते थे। मुगलों के बाद अंग्रेजी सत्ता भी ऐसे ही आई थी। लोगों की जरूरतें सीमित थी। खाना, पीना मस्त रहना और जी तोड़ मेहनत करना हर भारतीयों का यही फंडा था। सभी की जरूरतें गांवों में ही पूरी हो जाती थी फलतः शहर पनपना तो चाहता था पर गांवों के खुशहाल जीवन के बदौलत पनप नहीं पाता था। लोग अपने पारंपरिक कार्यों को ही आगे बढ़ाते हुए खुश थे। कम से कम गुलामी से तो मुक्त थे। छोटों और बड़ों को मान-सम्मान मिलता था। मनुष्यता सभी के जेहन में थी। खेती-बाड़ी और पशुपालन का अच्छा सामंजस्य रहता था पर बाहरी आक्रमणकारियों से भारत हमेशा ही परेशान रहा। स्कॉटलैंड के जेम्स मिल, जो अर्थशास्त्री और राजनीतिक दार्शनिक थे, को लगता था कि पूरे एशिया का सामाजिक ताना-बाना सभ्यता के मामले में यूरोप से बहुत पीछे है। मिल के नजर में पूरे भारत पर ब्रिटिश शासन इस लिए जरूरी था ताकि भारत सभ्यता के राह पर आगे बढ़ सके। लोग अपने को श्रेष्ठ समझने के दंभ से बाहर कब आएंगे? तब भी नहीं आए थे। सीमित सोच को वैश्विक स्तर पर विस्तारित करने के पीछे की मानसिकता आज से नहीं अपितु हमेशा से ही रही है। दूसरा उदाहरण जेम्स रेनेल का है जिनका काम ब्रिटिश शासन में भारत का मानचित्र तैयार करना था, जिनके मानचित्र के आवरण पर बने एक कृति में विद्वान ब्राह्मणों द्वारा ब्रिटेनिया जो ब्रिटिश सत्ता की द्योतक थी, को हिंदुओं की पवित्र पुस्तकें भेंट दी जा रही है और जिसके बारे में जिक्र है कि भारतीय लोग स्वेच्छा से प्राचीन पवित्र ग्रंथ ब्रिटेनिया को सौंप कर उनसे यहां आने का आग्रह कर रहे हैं ताकि हमारे संस्कृति और पवित्र ग्रंथों की रक्षा की जा सके। खुद को महान दर्शाने हेतु कहां तक गिरा जा सकता है, यहां आसानी से देखा जा सकता था। ऐसे ही समीक्षक और इतिहासकार को पढ़कर हम भारतीय भी गर्व की अनुभूति करते हैं। दौर बीता और नील की खेती सहित और भी व्यापारिक खेती जिसे भारत से बाहर भेजा जाता था, जिसमें भारतीयों का खून पसीना बहता था का विरोध भी शुरू हुआ, खेती ना करने का प्रण भी लिया जाने लगा जबकि उधर से आये दिन नये कानून बन रहे होते थे जिसमें धर्म परिवर्तन कर इसाई बनने वालों को तमाम रियायतें बख्शी जा रही थी, अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु तमाम प्रयोग किए जा रहे थे। भारतीय संस्कृति और संस्कारों पर भी लगातार प्रहार किए जा रहे थे। कुछ महीनों और वर्षों के अध्ययन के बाद संस्कृत के ग्रन्थों को यूरोपीय ग्रन्थों से हीन बताया जाने लगा था। भारतीय रचनात्मकता को हीनता की दृष्टि से देखा जाने लगा था। भारतीय रचनाकारों को अंधविश्वासों से भरा माना जाने लगा था। ऐसे समय में शिक्षा के साथ ही कला पर भी यूरोपीय प्रभाव लाने हेतु कार्य किया जाने लगा था जबकि भारतीय कलाकारों में कुछ को छोड़कर अधिकतर ने इन सभी के दवाब में आकर पहले ही अपने क्षेत्र बदल लिए थे।

ब्रिटिश शासकों को ये यकीन हो गया था कि भारतीय लोग शांत स्वभाव के साथ ही हुनरमंद भी हैं यदि इन्हें प्रशिक्षित कर दिया जाए तो ये बहुत कुछ नया कर सकते हैं और इनके हुनर को यूरोप के बाजार में आसानी से भुनाया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स लंदन के सिद्धांतों पर भारत में कुछ कला विद्यालय खोले गए जिनमें मद्रास का नाम सर्वोपरि है। मद्रास, कलकत्ता, बंबई, लाहौर कला विद्यालय के बाद और भी विद्यालय खुले जिनका जिक्र क्रमशः होगा। कला विद्यालयों के खोलने का मुख्य प्रयोजन उस समय चित्र, मूर्ति के साथ ही ड्राइंग, अलंकृत मृदभांड, काष्ठ कला, धातुओं की कला आदि पर भी कार्य करना था। मद्रास कला विद्यालय के पीछे सारा श्रेय अलेक्जेंडर हंटर को जाता है जिन्होंने चिकित्सा के साथ ही कला में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया था। 1 मई 1850 को एक निजी संस्थान के रूप में मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना हंटर ने ही की थी। मद्रास कला विद्यालय में कला में रूचि रखने वाले बच्चों को दाखिला दिया जाता था जहाँ

कला, शिल्प के साथ ही दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं को और भी परिष्कृत कर सौंदर्यबोध के साथ प्रदर्शित करना सिखाया जाता था। मिट्टी के बर्तनों में भी कई प्रकार के प्रयोग किए जाते रहे थे। अपने हुनर को और भी परिष्कृत रूप से प्रस्तुत करने का बढ़िया माध्यम बन गया था मद्रास कला विद्यालय। शुरुआत में पारंपरिक कलाकारों और उनके धातु, फर्नीचर आदि के कार्य भी होते रहे थे। हंटर अपने वेतन और बेची गई पेंटिंग्स के माध्यम से हर महीने विद्यालय को सहयोग भी करते रहे थे। 1851 में उपयोगी कला का विभाग भी स्थापित हो गया। 1852 में ये विद्यालय सरकार के अधीन हो गया और इसका नाम बदलकर गवर्नमेंट स्कूल ऑफ इंडस्ट्रियल आर्ट्स कर दिया गया फिलहाल उस विद्यालय को गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स के नाम से जाना जाता है। 1884 से लगभग एक दशक तक ई.वी. हैवेल यहां के अधीक्षक पद पर कार्य किए जो आगे चलकर कलकत्ता विद्यालय चले गये और अवनींद्रनाथ टैगोर के साथ मिलकर कला के बड़े क्रान्तिकारी कदम उठाने में अहम भूमिका निभाई। (संलग्न कृति अवनीन्द्रनाथ टैगोर की भारत माता है) देवी प्रसाद रॉय चौधरी 1928 में मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट के उप प्राचार्य बनाए गए उन्हें 1929 में भारतीय मूल का पहला प्राचार्य बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। कला विद्यार्थियों में अधिकांश शौकिया और उच्च वर्ग से थे जिन्हें भारतीय कला के बारे में कुछ खास जानकारी नहीं थी और जो अपने शिक्षकों की भांति ही विदेशी पद्धति पर कार्य करना चाहते थे। अधिकतर छात्र विदेशी पद्धति को खुद में आत्मसात कर लिए थे जिनको जगने में काफी समय लग गया या कह सकते हैं कि अवनीन्द्रनाथ और हैवेल के क्रांतिकारी कदम के बाद की जागरूकता ने ही इन सभी को भी प्रभावित किया।

मद्रास के बाद और भी कला विद्यालय खोले गए जिनमें अगला नंबर कलकत्ता कला विद्यालय का था। कलकत्ता कला विद्यालय भी शुरू में निजी विद्यालय के रूप में ही रहा जिसकी स्थापना 16 अगस्त 1854 को गरनाहाटा चितपुर में हुआ था। तीन महीने बाद विद्यालय को मुट्ठी लाल सील के इमारत में स्थानांतरित कर दिया गया। 1859 में गैरिक कला विद्यालय से प्रधानाध्यापक के रूप में जुड़े। करीब पांच वर्ष बाद ये विद्यालय सरकार के अधीन हो गया जिसके बाद 29 जून 1864 को हेनरी होवर लोके को यहां का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। लोके यहां के शिक्षा व्यवस्था और पाठ्यक्रम पर लगातार काम करते रहे पर दुर्भाग्य कहा जा सकता है कि विदेशी असर से बाहर का मामला नहीं बन पा रहा था। विद्यालय की जगह भी बदलती रही। बाद में सहायक प्रधानाध्यापक का पद भी सृजित हुआ और 1848 में जन्में कलाकार ओलिंटो. गिलहार्डी को जनवरी 1886 में नियुक्त किया गया। जुलाई 1896 में प्रधानाचार्य के रूप में अर्नेस्ट बिनफिल्ड हैवेल की नियुक्ति हुई। हैवेल भारतीय कला के प्रति पहले से ही सम्मान की दृष्टि रखते थे। मद्रास के पाठ्यक्रम से वे पहले से ही दुखी थे यहां भी वही देखकर अब उनके मन में कुछ विशेष करने का जज्बा जाग उठा। उनका मानना था कि भारतीय छात्रों को पाश्चात्य प्रभाव से इतर अपने भारतीय कला का ही अध्ययन करना चाहिए और उसी मार्ग पर अनुसंधान करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। भारतीय कला की थाती इतनी विशद है कि थाह पाना मुश्किल है फिर क्यों न हम अपने पर ही ध्यान दें। हालांकि उन पर भारतीय छात्रों और कला पारखियों द्वारा अपनी शैली को न सिखाने का भी आरोप लगा पर इन सभी से अलग वो अपने कार्य में लगे रहे और भारतीय कला के विकास पर लगातार जोर देते रहे। हैवेल ने गैलरी में लगे चित्रों को बदलकर भारतीयता का जामा पहना दिया और भारतीय छात्रों में भारतीय कला थाती को लेकर आत्मविश्वास बढ़ाते रहे फलतः अजंता सहित और भी भारतीय कला की अनुकृति पर काम होने लगा। 'भारतीय चित्र वीथि' स्थापित करने का श्रेय भी उन्हीं को है। जागरूकता फैलाने हेतु उन्होंने भारतीय कला के आदर्श, भारतीय कला में हिमालय सहित कई महत्वपूर्ण किताबें और आलेख भी लिखे। छात्रों को भारतीय कला से परिचय कराने में उनकी सहायता अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने की, जिनके साथ ने ई. बी. हैवेल को बहुत बल दिया। अर्नेस्ट बिनफील्ड हैवेल 1905 तक वहां प्रिंसिपल के पद पर रहे। अवनीन्द्रनाथ इस कला विद्यालय में बहुत समय तक उप-प्रधानाचार्य के पद पर रहे। पर्सी ब्राउन जिनके कला की शिक्षा रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स से हुई और जो इसके पहले लाहौर के मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्रिंसिपल भी रह चुके थे अब कलकत्ता विद्यालय के प्रिंसिपल बने। ब्राउन की पहचान कला इतिहासकार के रूप में भी रही है। अवनीन्द्रनाथ के शिष्यों की पूरी एक फेहरिस्त तैयार हो गई जो आने वाले समय में भारतीय कला को बहुत प्रभावित करने वाले थे। प्रिंट मेंकिंग के अध्ययन हेतु विदेश जाने वाले पहले भारतीय कलाकार मुकुल चंद्र डे को 1928 में कलकत्ता कला विद्यालय के पहले भारतीय स्थाई प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त होने का भी श्रेय प्राप्त है।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

जिम्मेदारी भी है पत्रकारिता की स्वतंत्रता

भारत में प्रेस को सदैव लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की संज्ञा दी जाती रही है क्योंकि लोकतंत्र की मजबूती में इसकी बेहद महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यही कारण है कि स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र के लिए प्रेस की स्वतंत्रता को बहुत अहम माना गया है लेकिन विड़म्बना है कि विगत कुछ वर्षों से यहां भी प्रेस स्वतंत्रता के मामले में लगातार कमी देखी जा रही है। इसीलिए प्रतिवर्ष 3 मई को 'विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस' मनाया जाता है। कलम को तलवार से भी ज्यादा ताकतवर और तलवार की धार से भी ज्यादा प्रभावी इसीलिए माना गया है क्योंकि इसी की सजगता के कारण न केवल भारत में बल्कि अनेक देशों में पिछले कुछ दशकों के भीतर बड़े-बड़े घोटालों का पर्दाफाश हो सका, जिसके चलते बड़े-बड़े उद्योगपतियों, नेताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गजों को एक ही झटके में अर्श से फर्श पर आना पड़ा। यही कारण हैं कि समय-समय पर कलम रूपी इस हथियार को भोथरा बनाने या तोड़ने के कुचक्र होते रहे हैं और विभिन्न अवसरों पर न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में सच की कीमत कुछ पत्रकारों को अपनी जान देकर भी चुकानी पड़ती है। पिछले दशकों में प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में स्थितियां काफी बदल गई हैं। आज दुनियाभर में पत्रकारों पर राजनीतिक, अपराधिक और आतंकी समूहों का सर्वाधिक खतरा है और भारत भी इस मामले में अछूता नहीं है। विड़म्बना है कि दुनियाभर के न्यूज रूम्स में सरकारी तथा निजी समूहों के कारण भय और तनाव में वृद्धि हुई है। पेरिस स्थित 'रिपोर्टर्स सैन्स फ्रंटियर्स' (आरएसएफ) अथवा 'रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स' नामक संस्था द्वारा हर साल अपनी वार्षिक रिपोर्ट में प्रेस की स्वतंत्रता को लेकर जो तथ्य प्रस्तुत किए जाते रहे हैं, वे सदैव चौंकाने वाले होते हैं। हालांकि यह अलग बात है कि कुछ देश इस रिपोर्ट में जारी किए जाने वाले आंकड़ों को पूर्वाग्रह से प्रेरित बताकर खारिज भी करते रहे हैं। 'रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स' एक ऐसा गैर-लाभकारी संगठन है, जो विश्वभर के पत्रकारों पर हमलों का दस्तावेजीकरण करने और मुकाबला करने के लिए कार्यरत है और प्रतिवर्ष 'वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स' अर्थात 'विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक' नामक रिपोर्ट पेश करता है। 'विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2019' में उसने भारत सहित विभिन्न देशों में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति की विवेचना करते हुए स्पष्ट किया था कि किस प्रकार विश्वभर में पत्रकारों के खिलाफ घृणा हिंसा में बदल गई है, जिससे दुनियाभर में पत्रकारों में डर बढ़ा है। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2026 के अनुसार, 180 देशों की सूची में भारत 157वें स्थान पर खिसक गया है जबकि 2025 में भारत 151वें स्थान पर था यानी एक वर्ष में छह स्थानों की गिरावट दर्ज की गई है। इससे पूर्व 2024 में भारत 159वें, 2023 में 161वें और 2022 में 150वें पायदान पर खड़ा था। यह रिपोर्ट प्रेस स्वतंत्रता के लिए भारत की रैंकिंग में लगातार गिरावट का संकेत देती है। रिपोर्ट के मुताबिक पत्रकारों के साथ व्यवहार के लिए 'संतोषजनक' माने जाने वाले देशों की संख्या बढ़ रही है लेकिन ऐसी संख्या भी कम नहीं है, जहां स्थिति 'बहुत गंभीर' है। रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स द्वारा जारी दुनियाभर के

देशों की प्रेस फ्रीडम रैंकिंग में भारत जहां 2024 में 2023 के मुकाबले दो पायदान ऊपर चढ़ा, वहीं 2023 में 2022 के मुकाबले 11 पायदान नीचे गिरा था और 2022 में भी 2021 की रैंकिंग के मुकाबले 8 स्थान नीचे फिसला था। 2021 की रैंकिंग में भारत का स्थान 142वां था। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2026 की सूची में नॉर्वे शीर्ष पर है। भारत के लोकतंत्र को तो दुनिया का सबसे सफल और बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है, वहीं अगर नार्वे जैसा छोटा सा देश प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में लगातार शीर्ष स्थान पर विराजमान है और चीन को छोड़कर भारत के लगभग सभी पड़ोसी देश भी बेहतर स्थिति में है तो यह स्थिति भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश के लिए सही स्थिति नहीं है। ऐसे में हमें गंभीरता से मंथन करने की जरूरत है कि हम इस मामले में वर्ष दर वर्ष क्यों फिसल रहे हैं? प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में यह गिरावट स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत नहीं है।

प्रेस की स्वतंत्रता में कमी आने का सीधा और स्पष्ट संकेत यही है कि लोकतंत्र की मूल भावना में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो अधिकार निहित है, उसमें धीरे-धीरे कमी आ रही है। समाज में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान रहा है, इसीलिए इसे लोकतंत्र का चौथा मजबूत स्तंभ माना गया है लेकिन पिछले कुछ वर्षों से जिस प्रकार खासकर इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा बगैर किसी जानकारी को जांचे-परखे केवल अपनी टीआरपी बढ़ाने के लिए झूठ का बवंडर तैयार किया जाता है, उसे देखकर कई बार तो ऐसा प्रतीत होता है मानो टीवी चैनल पर समाचार या कोई न्यूज कार्यक्रम नहीं बल्कि कोई मसालेदार राजनीतिक फिल्म चल रही हो। इसका सबसे बड़ा नुकसान यही हो रहा है कि लोगों का विश्वास मीडिया पर निरंतर कम हो रहा है और लोगों का आकर्षण सोशल मीडिया की ओर बढ़ रहा है, जहां पहले से ही फेक न्यूज बहुत बड़ी समस्या मौजूद है तथा एआई इस समस्या को और ज्यादा बढ़ाने में बड़ा योगदान दे रही है। भारतीय संविधान में प्रेस को अलग से स्वतंत्रता प्रदान नहीं की गई है बल्कि उसकी स्वतंत्रता भी नागरिकों की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता में ही निहित है और देश की एकता तथा अखण्डता खतरे में पड़ने की स्थिति में इस स्वतंत्रता को बाधित भी किया जा सकता है किन्तु ऐसी कोई स्थिति निर्मित नहीं होने पर भी देश में पत्रकारिता का चुनौतीपूर्ण बनते जाना लोकतंत्र के हित में कदापि नहीं है बल्कि यह स्पष्ट रूप से कुछ शक्तियों द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था के चौथे स्तंभ को ध्वस्त करने का ही प्रयास माना जाता है। कल्पना की जा सकती है कि प्रेस की स्वतंत्रता अगर इसी प्रकार सवालों के घेरे में रही तो पत्रकार कैसे पारदर्शिता के साथ अपने कार्य को अंजाम देते रहेंगे? प्रेस की स्वतंत्रता को बाधित करने के प्रयासों के चलते कैसे सच को उजागर कर उसे निष्पक्ष तरीके से जनता तक पहुंचाया जाना संभव होगा? देश में प्रेस की स्वतंत्रता बरकरार रहे, इसके लिए किसी मीडिया संस्थान से जुड़े पत्रकार हों या स्वतंत्र पत्रकार, उनकी सुरक्षा को लेकर कड़े कानून बनाए जाने की सख्त दरकार है ताकि बगैर किसी दबाव या भय के पत्रकार अपना कर्तव्य बखूबी निभाते रहें। हालांकि यह भी बेहद जरूरी है कि लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ 'प्रेस' को भी अपनी सीमाओं और मर्यादाओं का ध्यान रखते हुए अपनी स्वतंत्रता का सही इस्तेमाल करना चाहिए।

बंगाल और राजनीति

नीतीश मिश्र

लेखक पत्रकार हैं

उमा कहउ मैं अनुभव अपना

भारतीय राजनीति पिछले एक दशक से लोकतंत्र की अपनी नैतिकता की गर्भनाल से छत -विक्षत होकर भीष्म की तरह अपने मरणासन्न अवस्था में आकर फिरसे पुनर्जन्म लेने के लिए अमादा होने का कोई अवसर खोना नहीं चाहती हैं! लेकिन यह भारतीय राजनीति का दुर्भाग्य कहिये की इसे महात्मा गाँधी या जयप्रकाश नारायण जैसा कोई व्यक्तित्व नहीं मिल पा रहा हैं जो कि सात दशक से राजनीति पर जमी हुई काई को साफ करके दिल्ली में राजनीति का शंखनाद कर सके । बाजार में आवारा पूंजी के बढ़ते हस्तक्षेप के चलते आज राजनीति की हालत उस गरीब की लुगायी जैसी हो गयी है कि जब जिसका मन करें उसे वह उस दिशा में हाँकने में कामयाब हो जा रहा हैं । जिसकी क़ीमत दिल्ली को छोड़कर समूचे हिंदुस्तान को इन दिनों चुकानी पड़ रही हैं । राजनीति के फलसफे को लेकर दिल्ली का अपना कोई मौलिक मनोविज्ञान नहीं हैं द्य देश के विभिन्न हिस्सों से राजनीति का रसायन लेकर अपने तानाशाही का स्केच बनाकर हिन्दुस्तान की मौलिक सभ्यता पर केवल अपने अपने दम्भ की हंसी बिखेरती है । यह हंसी दिल्ली की कोई आज की इजाद की हुई हंसी नहीं हैं बल्कि पांच हज़ार साल पुरानी हंसी हैं । इस हंसी का कथानक दिल्ली तब लिख रही थी, जब हस्तिनापुर की सभा में द्रोपती का भरी सभा में चीरहरण हो रहा था, और सभा में बैठे सभी महारथी उस चीरहरण की घटना को बहुत ही आसानी से रोक सकते थे द्य लेकिन भरी सभा में कोई भी महारथी अपने स्थान से उठना उचित नहीं समझा । उसी समय दिल्ली अपने नियति का इतिहास लिख चुकी थी । नियति के आगे दिल्ली कभी अपना एक कदम आगे नहीं बढ़ाएगी।

पिछले दिनों पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव में देश का सबसे ज्यादा ध्यान बंगाल में हुए विधानसभा चुनाव को लेकर हैं । बंगाल के चुनाव को लेकर बीजेपी जिस तरह से मैदान में मैराथन चक्रव्यूह को रचने में महारथ हांसिल की उससे साफ प्रतीत होता हैं कि यह चुनावी चक्रव्यूह कोई सामान्य चक्रव्यूह न होकर महाभारत के उस चक्रव्यूह की याद दिलाता है जिसकी रचना स्वयं द्रोणाचार्य ने की थी द्य श्यामा प्रसाद मुखर्जी और भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी के सपनों को धरातल पर उतारने के लिए इस चुनावी चक्रव्यूह में ममता बनर्जी को शह -मात देने के लिए गृहमंत्री अमित शाह और सुनील बंसल ने बंगाल में भगवा परचम फहराने के लिए लम्बे समय से इस चक्रव्यूह को रचकर खुले तौर पर ममता बनर्जी को युद्ध के लिए न्योता दिए हो द्य ममता बनर्जी आंदोलन और संघर्ष की तपती धूप में अपना पसीना बहाकर बंगाल में वामपंथ के किले को तोड़कर अपनी परिपक्कवता का परिचय एक दशक पहले ही दे चुकी थी द्य राजनीति के बदलते परिदृश्य के चलते आज ममता के लिए चुनावी वैत्रणी से पार पाना पहले जितना आसान नहीं रह गया है । बंगाल में तृणमूल कांग्रेस से दो -चार हाथ करने के लिए बीजेपी वर्ष 2021के विधानसभा चुनाव से ही अपनी तैयारी को मुक़म्मल रूप देने के लिए तैयारी जोरों -शोरों से शुरू कर दी थी । यही वज़ह है कि पिछले विधानसभा चुनाव में बंगाल में जिस तरह से हिंसा की घटनाएं बड़े पैमाने पर सामने आयी थी,जिसका लाभ बीजेपी के बनिसप्त तृणमूल कांग्रेस को ज्यादा मिला था । लेकिन इस बार केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती और चुनाव आयोग के कड़े एक्शन मोड के अलावा एसआईआर के चलते विधानसभा चुनाव में चुनावी हिंसा लेशमात्र भी सुनने को नहीं मिला । भारतीय जनता पार्टी बंगाल में अपनी सरकार बनाने के लिए चुनावी चौपड़ में अपने सभी प्यादों को मैदान में उतार दी थी । यहाँ तक की मीडिया भी बीजेपी के लिए पक्ष के पहाड़ की भूमिका में पुरे चुनाव के दौरान मैदान में कमान संभाली रही । उधर बीजेपी की अक्षय सेना के सामने ममता बनर्जी स्त्री अस्मिता को परिभाषित करने के लिए अपनी सत्ता पुनः बचाने की क़वायद में दिन -रात जुटी रही और एकला चलो की राह पर ममता बनर्जी बंगाल को भगवा से बचाने के लिए लगातार अपील करती हुई नज़र आयी । 2026के विधानसभा चुनाव में ममता के लिए और तृणमूल कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी राहत की बात यह रही कि इस चुनाव में ममता को अपने उत्तराधिकारी के रूप में सयानी घोष मिल गयी ।

महाभारत या हम्मूराबी विधि संहिता की माने तो एक सयाने राजा में छः गुण का होना अनिवार्य हैं । इन छः गुणों का शास्त्रों में स्पष्ट तौर पर उल्लेख मिलता हैं द्य एक राजा में पहला गुण सामने वाले से या पड़ोसी से संधि करने का गुण होना चाहिए । दूसरा विग्रह, यान,आसन, पांचवा गुण शत्रु के सामने अपनी पूरी ताकत एक बार में कभी प्रगट नहीं करना चाहिए और छठवा गुण समाश्रय का होना चाहिए । तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमों ममता बनर्जी भले ही एक दशक से बंगाल की कमान संभालने में सफल रही हों लेकिन उनमे अभी इन छः गुणों का सख्त अभाव है । यही वजह है कि वह इस चुनाव में विपक्ष को जोड़ने में पूरी तरह से कामयाब नहीं हो पायी । यही कारण है कि 2021के विधानसभा चुनाव में ममता घायल होकर भी आत्मविश्वास से पूरी तरह लबरेज थी द्य लेकिन इस चुनाव में उनके चेहरे पर पहले जैसा आत्मविश्वास पूरे चुनाव के दौरान देखने को नहीं मिला द्य उम्र के पड़ाव के चलते उनका आत्मविश्वास थका हुआ हो,लेकिन उनके इस आत्मविश्वास की कमी की भरपायी सयानी घोष करने में पूरी तरह से कामयाब रही। सयानी घोष बांग्ला फिल्मों में नायिका की भूमिका निभा चुकी है। उन्हें इस बात का अच्छे से इल्म है कि चुनावी सभा में पब्लिक का ध्यान अपनी तरफ कैसे आकर्षित किया जाता है? उनकी कला का लाभ इस बार बड़े पैमाने पर तृणमूल कांग्रेस को मिलने जा रहा है इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है ।

भाजपा द्वारा 'कांग्रेस मुक्त का नारा ' का नारा बीजेपी के दीवालियेपन का केवल नमूना मात्र हैं क्योंकि कांग्रेस की अपनी समरसता की अपनी मौलिक विचारधारा है। कांग्रेस पार्टी कोई एक दिन में निर्मित नहीं हुई द्य एक लम्बे संघर्ष और आंदोलन से उपजी पार्टी हैद्य यह अलग बात है कि इन दिनों कांग्रेस के पास मास लीडर्स की कमी है जिसका खामियाजा पार्टी को उठाना पड़ रहा है , लेकिन इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कांग्रेस अपनी चेतना के साथ एक बार फिरसे अपनी जड़ों की और लौटना शुरू कर दी है । बीजेपी हिंदुत्व का अजपा जाप करके भले ही सत्ता हथियाने में सफल हो जा रही हो लेकिन बीजेपी के पास अपना कोई आर्थिक मॉडल ऐसा नहीं है जिससे वह समावेशी विकास की आधारशिला रख सकें । बीजेपी, कांग्रेस के ही आर्थिक मॉडल पर काम करके विकास का हाथी दाँत दिखाने में मशगुल है । बीजेपी की नीतियों की शिकार कांग्रेस के अलावा क्षेत्रीय पार्टियां भी बड़े पैमाने पर हुई हैं , लेकिन इसकी क़ीमत सबसे ज्यादा कांग्रेस को चुकानी पड़ी । कांग्रेस के विरोध के चलते ही क्षेत्रीय पार्टियां अपनी अस्मिता को बचाने में सफल रही , लेकिन क्षेत्रीय पार्टियों के पास कोई विचारधारा नहीं होने के चलते आज उन्हें मुंह के बल गिरते हुए साफ तौर पर देखा जा सकता हैं , लेकिन कांग्रेस जब भी सत्ता में रही हमेशा विपक्ष को मजबूत करने की क़वायद में जुटी रही । ऐतिहासिक रूप से विपक्ष भी कांग्रेस की इस क़वायद का कायल है । यह बात उन दिनों की है जब सन 1962में देश में लोकसभा का चुनाव चल रहा था । देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू फूलपुर से लोकसभा सीट से चुनाव मैदान में थे और उनके सामने दिग्गज नेता राममनोहर लोहिया चुनाव मैदान में थे । लोहिया को कई लोगों ने सलाह दिया की आप फूलपुर सीट छोड़कर कहीं और से चुनाव लड़ लीजिए द्य आपकी जीत पक्की है , लेकिन लोहिया अपने समर्थकों की एक नहीं सुने द्य उन दिनों लोहिया,पंडित नेहरू को लेकर यह तंज कसते थे कि पंडित नेहरू का एक दिन का खर्चा पच्चीस हज़ार रूपये है । नेहरू के चुनावी प्रचार में गाड़ियों का काफिला चलता था,जबकि लोहिया अपना चुनाव प्रचार तांगे से करते थे।नेहरू को जब इस बात की जानकारी लगी तो उन्होंने लोहिया के चुनाव प्रचार के लिए 25 हजार रूपये और एक जीप भेजवाई । लोहिया ने जीप लौटा दिया लेकिन 25 हजार रूपये चुनाव प्रचार में खर्च हो गए , लेकिन अब इस तरह की बाते केवल मिथक बनकर रह गयी है ।

एग्जिटपोल बंगाल में भले ही भाजपा की जीत सुनिश्चित करने में लगा हुआ हो,लेकिन एग्जिटपोल कई बार गलत भी साबित हुआ हैं । ममता बनर्जी बंगाल में 35फीसदी वोट के साथ चुनाव में शुरुवात कर रही है । वहीं बीजेपी को जीरो से शुरुवात करना है । पश्चिम बंगाल में 65विधानसभा की ऐसी सीट है जहाँ अल्पसंख्यक वर्ग सबसे बड़ा डिसाइड फैक्टर हैं । इन सीटों पर बीजेपी का खाता खुलना किसी दिवास्वप्न से कम नहीं हैं ।बंगाल में बीजेपी जिस आक्रमकता के साथ चुनाव लड़ी है उसको देखकर यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि बीजेपी इस बार सरकार बनाने में सफल हो जाए । अगर किसी कारणवश बीजेपी अगर सरकार बनाने में चूक जाती है तो कुछ महीनों के अंदर ही लोट्स अभियान के जरिये तृणमूल कांग्रेस की सरकार को अस्थिर भी कर सकती है । इसका उदाहरण बीजेपी बहुत पहले ही मध्यप्रदेश में पेश कर चुकी है ।

बंगाल में ममता की सरकार बने या बीजेपी की लेकिन राष्ट्रीय राजनीति के परिदृश्य में अरविन्द केजरीवाल और ममता बनर्जी की एक बार पुनः वापसी होने से कोई नहीं रोक सकता ,, क्योंकि दोनों नेताओं की राजनीति कांग्रेस और बीजेपी के विरोध से ही शुरू हुई हैं द्य ममता जहाँ सिंगूर परियोजना का विरोध करके अपने व्यक्तित्व का लोहा मनवाने में सफल रही वहीं अरविन्द केजरीवाल अन्ना आंदोलन के जरिये अपनी राजनीति चमकाने में सफल साबित हुए । अगर ममता बनर्जी बंगाल में सरकार बनाने में सफल होती है तब ऐसे में अरविन्द केजरीवाल ममता के कंधे पर सवार होकर राष्ट्रीय राजनीति के फलक पर कोई नया फार्मूला इजाद करते हुए नज़र आएंगेद्य ममता और केजरीवाल की ग्राउंड फील्डिंग बहुत तगड़ी हैं । अपन अगर क्रिकेट मैच की बात करें तो मैच वहीं टीम जीतती है जो सबसे ज्यादा कैच पकड़ती है या जिस टीम की फील्डिंग बेहतरीन होती है ।भाजपा इन दिनों जिस तरह से चुनावी पिच पर बैटिंग कर रही है उससे साफ तौर पर प्रतीत होता है कि एक गलत शाट्स अगर भाजपा खेलती है तो अरविन्द और ममता कैच पकड़ने में कोई देरी नहीं करेंगे । खैर राजनीति में कुछ भी सम्भव है, लेकिन ममता और अरविन्द के संघर्ष को देखकर यह कहना मौजू लगता हैं कि भले ही बीजेपी दोनों को पराजित कर दे लेकिन दोनों खुद को कभी लज्जित महसूस नहीं होने देंगे ।रही बात सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव की तो वह भले ही देश की तीसरी पार्टी का चेहरा बनने में बाज़ी मार लिए हो लेकिन राष्ट्रीय परिदृश्य की राजनीति से अभी बहुत दूर है , क्योंकि मुलायम सिंह यादव राजनीति के प्यादों को अपनी जेब में रखकर घूमते थे जबकि अखिलेश यादव स्वयं राजनीति के प्यादों की जेब में बैठकर राजनीति करने में मशगुल है । यही वजह है पिछले एक दशक से अखिलेश यूपी में कोई अल्पसंख्यक वर्ग का कोई बड़ा चेहरा नहीं खड़ा कर पाए जबकि कांग्रेस ने इमरान प्रतापगढ़ी और इमरान मसूद को खड़ा करने में बाज़ी मार ली।

पुनर्जागरण की धरती

डॉ. गरिमा संजय दुबे
लेखक साहित्यकार हैं।

छीनी नहीं जा सकती है बंगाल से उसकी पहचान

बंगाल, अविभाजित बंगाल, एक ऐसा प्रतिनिधि, प्रगतिशील रचनात्मक प्रदेश जिसके योगदान की सूची बनाने चले तो एक पूरी पुस्तक भर जाएगी, एक ही प्रदेश में हर क्षेत्र के बौद्धिकों का ऐसा जमघट कही और नहीं। बंगाल की समृद्ध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विरासत जिसने उसे भारत की शान में कसा एक बहुमूल्य हीरा बना दिया था, आज़ादी के बाद वह मलिन हो गया। द लैंड ऑफ रेनेसां, पुनर्जागरण की भूमि जहां से समाज सुधार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय अस्मिता, युवा ओज और आध्यात्मिक शिखर के स्वर फूटे वह बंगाल नष्ट भ्रष्ट हुआ कुछ ऐसे कि अब देखने पर लगता है कि क्या यह वही बंगाल है जहां शरतचंद्र, राजा राम मोहन राय, बंकिम चन्द्र चटर्जी, टैगोर, अशापूर्णा देवी, विवेकानंद, सुभाष, और हमारे निमाई रामकृष्ण परमहंस, लाहड़ी महोदय, परमानंद, सत्यजीत रे और अनगिनत नाम ढूंढ लीजिए, नई पीढ़ी जो नहीं जानती वह देख ले, बहुत स्वाभाविक है चकित होना, न जाने किसकी दृष्टि लगी जो ऐसा प्रभाव हुआ कि अत्यधिक गरीबी और भ्रम का शिकार हुआ। सबसे समृद्ध व्यक्ति पर ही नज़र लगती है, ऐसा ही कुछ हुआ बंगाल के साथ।

अपनी सम्पूर्ण आधुनिकता में, प्रगतिशीलता में भी बंगाल ने अपनी सांस्कृतिक विरासत का दामन नहीं छोड़ा था, छोड़ना भी नहीं चाहिए, किंतु जब कोई अपनी जड़ें छोड़ने लगता है, किसी विमर्श, किसी विचार के प्रभाव में तो वह त्रिशंकु की भांति हो जाता है। यह नियति केवल बंगाल की नहीं आधुनिक भारत में हर कहीं व्याप्त रही। आधुनिकता के साथ अपनी संस्कृति को बचाए रखने के लिए भारत को जितना संघर्ष करना पड़ा है वह ज्ञात इतिहास है। संस्कृति रक्षण के प्रश्न भारत के साथ सदा रहे, वह लड़ता ही रहा अपने अस्तित्व के लिए, अपनी संस्कृति के लिए।

किसी भी राष्ट्र की एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान होती है, उसे नष्ट करने को आधुनिकता या प्रगतिशीलता कहना गलत परिभाषा है। सांस्कृतिक पहचान नष्ट करते हुए, आधुनिक होने का दावा करते हुए भी पैंतीस वर्ष के शासन में सभी आधुनिक विकास के रास्ते बंद होते गए। ट्रेड यूनियन, हड़ताल और सब कारखाने, मिलों को बंद करके शोषण को समाप्त करने के प्रयास ने कैसा विनाश रचा यह देखना ही तो बंगाल हो आएं। शोषण तो समाप्त नहीं हुआ मजदूर, गरीब समाप्त हो गए, आज भी हाथ रिक्शा चलता है वहां, जहां ट्राम सबसे पहले पहुंची वह बंगाल हाथ रिक्शा की तरह रेंगता रहा, जबकि उसे मेट्रो की तरह दौड़ना और जेट की तरह उड़ना था।

अमीर व्यापारियों के शोषण से बचने को हड़ताल को बढ़ावा, क्रांति का भुलावा देकर मजदूरों को कारखानों से, काम से विलग कर, मोहल्ला क्लब में राजनीतिक चर्चाओं में शामिल किया गया, व्यापारी तो अपना धन लेकर पलायन कर गए, बेचारे मजदूर रह गए हड़ताल करते, कैरम खेलते, चर्चा करते, जिन्होंने शोषण से मुक्ति का मार्ग दिखाने का वादा किया था उन्होंने मजदूरों को कारखानों से बाहर तो निकाल दिया लेकिन उसके बाद क्या, उनका जीवन, उनके जीवन के प्रश्न, उनके जीवन की समस्याओं के हल में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, नारों से न पेट भरना था न जीवन चलना था यह दुष्चक्र चलता रहा पूरे पैंतीस बरस, बंगाल बर्बाद हो गया, लाखों मजदूरों और उनके परिवारों ने अपना जीवन समाप्त कर लिया। वे गरीबी में बिन रोटी, बिना काम के क्रांति के भ्रामक गीत गाते गाते मर गए, कोई उनकी लाश पर रोने वाला न था। जो विचार सरणी समस्या पर प्रकाश डालने को अपना सिद्धांत मानती है क्या उस उस समस्या का समाधान देना उसका काम नहीं है? केवल समस्या बताने से समस्या हल नहीं होती विकल्प देने से होती है, बिना रोजगार के, बिना विकल्प के मर गए समाप्त हो गए लाखों मजदूर, यह एक ऐसा वैचारिक शोषण था जिसे कोई समझ न सका और जब समझा तब तक विनाश हो चुका था।

प्रश्न यह है कि क्या शोषण को इस तरह समाप्त किया जा सकता है? या संवाद से समाप्त किया जा सकता है, मजदूर हारे, मरे, न काम था, न क्रांति उनका शोषण समाप्त कर पाई, यही बात ठीक यही प्रक्रिया नक्सल वादी मूवमेंट का आधार बनती है।

हालत यह है कि बहुत पहले किसी अंग्रेजी पत्रिका में लेख पढ़ा था कि बंगाल केवल बुजुर्गों का स्टेट है वहां युवा नहीं हैं, सब बाहर गए क्योंकि कोई इंडस्ट्री लगने नहीं दी गई, कोई विकास होने नहीं दिया गया और हड़ताल, हड़ताल हड़ताल से कोई वहां जाना नहीं चाहता।

कुछ उम्मीद के साथ ममता सरकार आई, कम्युनिस्ट पार्टी को पछाड़ कर, लेकिन थोड़े बहुत सुधार के अलावा वही स्थिति और तुष्टिकरण ने इसमें आग में घी का काम किया। सीमावर्ती राज्य होने से बंगाल की जटिलताएं और भी बढ़ जाती हैं, तब केवल वह बंगाल का विषय न होकर राष्ट्रीय सुरक्षा और सांस्कृतिक अस्तित्व का प्रश्न बन जाता है।

यह वह पक्ष है जिसका कोई विपक्ष नहीं हो सकता, बंगाल से संवेदना रखने वाले वाले इस तथ्य को कैसे नकारेंगे, ममता जीवट वाली महिला हैं, बदल सकती थीं बंगाल का भाग्य, अब भी बदल सकती हैं किंतु...

संसाधन सबमें बराबर बंटे यह बहुत आदर्श सिद्धांत है किंतु संसाधनों को बांटने के पहले संसाधनों का सृजन तो करना होगा न, पूंजी सबमें बराबर बंटे किंतु बिना पूंजी के सृजन के क्या पूंजी का वितरण संभव है ?

पूंजी के, संसाधन के सृजन के सभी रास्ते बंद कर हम गरीबी, बेरोजगारी हटाना चाहते हैं, क्या यह संभव है?

एक विचार सरणी कहती है हमें अंधेरों की और देखना होगा, बिल्कुल ठीक है, केवल उजाले की तरफ देखना तो आधी अधूरी दृष्टि होगी, किंतु क्या उजालों से मुंह मोड़कर अंधेरा मिटाया जा सकेगा?

क्या सुख से मुंह मोड़कर दुःख दूर किया जा सकता है?

क्या समृद्धि से मुंह मोड़कर विपन्नता को हराया जा सकता है?

क्या भरे पेट से मुंह मोड़कर भूख को पराजित किया जा सकता है, क्या स्वयं भूखे रहकर किसी की भूख मिटाई जा सकेगी, नहीं खुद भी भोजन के जतन करने होंगें और उन उजालों को, उस सुख को, उस समृद्धि को, उस भोजन की थाली को

उन जगहों पर बांटना होगा जहां अंधेरा है, विपन्नता है, दुःख है, भूख है।

यही कल्याणकारी राज्य की अवधारणा है न, यही समाजवाद का मानवता वादी सिद्धांत।

कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में क्या पूंजी के सृजन का विरोध है कहीं?

समाजवादी विचार में संसाधनों के सृजन की, विकास के अवसरों के विरोध की धारणा है कहीं?

नहीं वहां विरोध है भेद का, शोषण का, किंतु किसी व्यक्ति को कोई बीमारी हो जाए तो कुशल चिकित्सक उस व्यक्ति को ज़हर देकर मार नहीं देता, उसके रोग का इलाज करता है। वैसे ही संसार की हर व्यवस्था में कुछ विसंगतियां होती हैं, रोग होते हैं, उसका इलाज होना चाहिए न कि वह व्यवस्था ही समाप्त कर दी जाए।

जहां शोषण है, अन्याय है वहां से उनके खात्मे को बात हो न कि उन सभी व्यापार, कारखानों, संस्थाओं के विनाश की। विकास की अवधारणा में आ रहे लालच, शोषण, पर्यावरण के खतरों को कम करके विकास को मानव उन्मुखी होने के साथ साथ पर्यावरण हितैषी होने पर बात हो न कि विकास की अवधारणा को ही समाप्त कर दिया जाए।

उसी विकास से बने आधुनिक संसाधनों का हम उपभोग करते हैं, सुविधाजनक जीवन के लिए उन्हें उपयोग करते हैं, निजीकरण पूंजी वाद का विरोध करने वाले परिवारों के बच्चे उन्हीं पूंजीवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में बड़े पदों पर हैं, किंतु हम गरीब मजदूरों के लिए उसी पूंजी, विकास की उस अवधारणा का विरोध करते हैं। बात केवल बंगाल की नहीं यह सिद्धांत पूरे राष्ट्र पर लागू होता है, किंतु बंगाल ने इसकी बड़े लंबे समय तक कीमत चुकाई ही। पुनर्जागरण की धरती पीड़ित रही अनेक कारणों से, सत्ता किसी की भी रही हो बंगाल के भद्रलोक का मन कोई न जान सका, अपने संकोच में, भद्र आवरण में वहां का लोकमानस भी मुखर नहीं हुआ, सत्ता किसी की भी हो, ममता बैनर्जी हो या बी जे पी की, बंगाल को एक और पुनर्जागरण की आवश्यकता है, अपने भौतिक विकास के लिए भी और अपने सांस्कृतिक ढांचे को बचाने के लिए भी, दक्षिणेश्वर काली के तेज को अनुभव करने के लिए, अपने बाउल के बैरागी स्वर को प्रखर करने की, दुर्गा पूजा के उस चैतन्य उत्सव की ऊर्जा को जागृत करने की, अपनी महान सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक, रचनात्मक, आध्यात्मिक पहचान और

बौद्धिकी को जीवंत रखने के लिए। यह पुनर्जागरण कोई राजनीतिक दल लेकर नहीं आएगा, यह वहां का जनमानस लाएगा, सत्ता किसी की हो, ममता आए या कोई और बंगाल बचा रहना चाहिए, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के साथ, भारत के एक अभिन्न अंग के रूप में, अपनी विचारधारा शुद्ध भारतीय पहचान के साथ।

चुनाव है हार जीत का गणित हमें नहीं पता, पक्ष विपक्ष हम नहीं जानते, हम भारत पंथी हैं, उस महान सभ्यता संस्कृति के विनाश को देखने को अभिशप्त रहें हैं, जो चाहते हैं कि विश्व की सबसे उदार संस्कृति अपने अस्तित्व को बचा सके, उसकी विकृतियों को समाप्त कर सके, हम इतना जानते हैं कि बंगाल उस संस्कृति का एक बहुत सशक्त स्तंभ है।

हम इतना जानते हैं कि बंगाल का जादू अदम्य है, उसका आकर्षण अतुलनीय है, उसका मोह अनिवर्चनीय है, उसे बचे रहना होगा ताकि साहित्य, कला, संस्कृति के वह स्तंभ भी बचे रहें जिन पर बंगाल की अस्मिता टिकी हुई है, प्रकारांतर से जिस पर भारतीय अस्मिता टिकी हुई है, कोई राजनीतिक दल उससे उसकी यह पहचान नहीं छीन सकता।

सोहागपुर में बरसात, तेज हवा के कारण गिरे झाड़

सोहागपुर। शाम को तेज आंधी के बरसात से क्षेत्र में कई स्थानों पर राज्य मार्ग 22 पिपरिया नर्मदापुरम पर झाड़ो के गिरने से रास्ते बंद हैं। पुलिस रास्तों सुलभ बनाने की कोशिश कर रही है।

प्रशिक्षण केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि यह कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व क्षमता को निखारने का सशक्त मंच है-संभाग प्रभारी रावत

भाजपा का दो दिवसीय जिला प्रशिक्षण वर्ग 22 व 23 मई को होगा आयोजित

धार। पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान के तहत जिला प्रशिक्षण वर्ग कार्य योजना बैठक का आयोजन भाजपा के जिला कार्यालय पर शनिवार को संपन्न हुई। बैठक का शुभारंभ भारत माता व पंडित दीनदयाल उपाध्याय तथा डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों समक्ष दीप प्रज्वलित कर और वंदे मातरम के साथ किया गया।

भाजपा के संभाग प्रभारी व प्रदेश उपाध्यक्ष रणवीरसिंह रावत, भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती,भाजपा जिला संगठन प्रभारी सुभाष कोठारी, जिला प्रशिक्षण वर्ग प्रभारी नानूराम कुमावत, धार विधायक नीना वर्मा, पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया, प्रशिक्षण अभियान के संभाग टोली प्रभारी दिलीप पटोंदिया, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष प्रभु राठौड़ व मनोज सोमानी, पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रदेश महामंत्री नरेद्र राठौड़ अतिथि रूप में मंचासीन थे।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि इसके पहले चरण में मंडलों को प्रशिक्षित किया गया है। अब इसी महीने जिला स्तर का प्रशिक्षण होना है। भारतीय जनता पार्टी की संगठनात्मक शक्ति को और अधिक सुदृढ़ बनाने का एक महत्वपूर्ण अभियान है। प्रशिक्षण ही वह धुरी है, जो कार्यकर्ता को राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार करती है। एक सशक्त, जागरूक और वैचारिक रूप से समृद्ध कार्यकर्ता ही संगठन को ऊंचाइयों तक ले जाता है।

प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष व संभाग प्रभारी रणवीर सिंह रावत ने कहा कि प्रशिक्षण महाभियान से प्रत्येक कार्यकर्ता को जोड़ने का प्रयास करें, जिससे संगठन की जड़ों को और अधिक मजबूती मिले। प्रशिक्षण केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि यह कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व क्षमता को निखारने का सशक्त मंच है। अब आगामी जिला प्रशिक्षण वर्गों को भी उसी ऊर्जा और गुणवत्ता के साथ सम्पन्न करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

भाजपा केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि राष्ट्रहित, सेवा, सुशासन और अंत्योदय की विचारधारा पर आधारित एक संगठन है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से पार्टी की नीतियों, सिद्धांतों और जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह किया।

जिला संगठन प्रभारी सुभाषचंद्र कोठारी ने कहा कि प्रशिक्षण वर्ग में सभी अपेक्षित पदाधिकारी समेत कार्यकर्ताओ का उपस्थित रहना अनिवार्य है। प्रशिक्षण वर्ग नए कार्यकर्ताओ को गढ़ने का सशक्त माध्यम है। 23 व 24 मई को मांडव में यह प्रशिक्षण वर्ग संपन्न होगा। जिला पदाधिकारी, जिला मोर्चा अध्यक्ष व महामंत्री, मंडल अध्यक्ष, मण्डल प्रभारी, प्रकोष्ठ जिला संयोजक, सांसद विधायक, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पालिका अध्यक्ष, प्रकोष्ठ व मोर्चे प्रदेश पदाधिकारी, स्थानीय स्तर पर जिले की टोली व अन्य कुछ नाम भी शामिल हो सकते। 150 से 200 लोग प्रशिक्षण लेंगे।

जिला प्रशिक्षण को लेकर भाजपा जिला कार्यालय पर हुई बैठक

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि जिला बैठक में भाजपा जिला पदाधिकारी जिले के सभी मंडल अध्यक्ष मंडल महामंत्री मोर्चा जिला अध्यक्ष महामंत्री,प्रकोष्ठ जिला संयोजक, प्रशिक्षण वर्ग जिला टोली समेत अपेक्षित भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहें। राष्ट्र गीत अल्पना जोशी व संगठन गीत को अक्षय शर्मा ने लिया। बैठक का संचालन भाजपा जिला महामंत्री राकेश पटेल ने किया आभार भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रेमचंद परमार ने माना।

स्व. खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्रॉफी मैच में 72 फाइटर्स क्लब जीता

सोहागपुर। रेल्वे ग्राउंड में शुक्रवार की रात स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता में तीन मैचों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि, भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। वहीं स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल के सुपुत्र यश खंडेलवाल विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने सभी आगुंतकों का पुष्पहारों से स्वागत किया।

जिसमें पहला 72 फाइटर्स 1ह्य जीपीएस के मध्य हुआ – जिसमें में 72 फाइटर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 84 रन बनाए। इसके जवाब में जीपीएस 67 रन ही बना पाई। मेन ऑफ द मैच सब्बीर शाह को पुरस्कार प्रदान किया गया।दूसरा मैच जीपीएस एवं चंद्रा इन्टरप्राइजेज के मध्य खेला गया। जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए जीपीएस ने 66 रन बनाए। इसके जवाब में चंद्रा इंटरप्राइजेज ने 8 ओवर में लक्ष्य प्राप्त कर लिया।मेन ऑफ द मैच अंकित ठाकुर को पुरस्कार प्रदान किया गया।तीसरे मैच में 72 फाइटर्स क्लब एवं चंद्रा इन्टरप्राइजेज की बीच खेला गया।जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए 72 फाइटर्स ने 98 रन बनाए। इसके विरुद्ध बल्लेबाजी करते हुए चंद्रा इंटरप्राइजेज ने अंतिम ओवर में मैच जीत लिया।मेन ऑफ द मैच मोहसिन खान को अतिथियों ने पुरूस्कार प्रदान किया गया।प्रतियोगिता की अंपायरिंग परिणय मालवीय ,शिवम दुबे शेख हैदर, राहुल ,अभिषेक ने की।स्कोरिंग गोल्डी ,आयुष पटेल, उत्सव जायसवाल ने की। खेल का आंखों देखा हाल तहसील पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान,अंकित श्रोती ,दीपक मंडल ने की। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि आज प्रतियोगिता के मुकाबले भारी बरसात के कारण स्थगित किए गए हैं।

भारी बरसात से विघुत व्यवस्था ठप्प – आज शाम करीबन चार बजे तक तेज आंधी एवं बादलों की गड़गड़ाहट से भारी बरसात होने से बिजली व्यवस्था ठप्प हो गई है। विघुत विभाग के कर्मचारी विघुत व्यवस्था सुचारू करने में लगे हुए हैं। इस बरसात से क्षेत्र के किसानों में चिंता की लकीरें खींच रही है। जिनकी उपज मंडी एवं खिलहानों में पड़ी हुई है। वहीं सोहागपुर एवं आस-पास के पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग 22 पर कई झाड़ गिरने के समाचार हैं।

नीमच में बेकाबू होकर पलटी तूफान गाड़ी, 2 की मौत

नीमच (नप्र)। नीमच-झालावाड़ मार्ग पर शनिवार दोपहर को एक तेज रफ्तार तूफान वाहन बेकाबू होकर पलट गया। इस दुर्घटना में वाहन चालक और एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक गंभीर घायल को नीमच रेफर किया गया है। हादसे में 7 लोग घायल हो गए। वाहन में करीब 10 लोग सवार थे।

मन्नत पूरी कर लौट रहे थे श्रद्धालु– शनिवार दोपहर को मनासा के सावन कुंड गांव में आयोजित मन्नत कार्यक्रम में शामिल होकर गायरी गुर्जर समाज के लोग भानपुरा के ग्राम अंतरालिया लौट रहे थे। इस दौरान पटेल श्री होटल के पास दोपहर करीब 2 बजे बैंसला घाट के पास वाहन अचानक बेकाबू होकर पलट गया।

दो की मौत, घायलों में दो मासूम– हादसे में 55 वर्षीय सोहन बाई और 40 वर्षीय चालक भारत चौहान की मौके पर ही जान चली गई। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई।

गैस बुकिंग के नाम पर आनलाइन धोखाधड़ी से बचें

सोहागपुर। अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी ने सोहागपुर ब्लाक के नागरिकों को सचेत किया है कि वर्तमान समय में गैस सिलेंडर बुकिंग के नाम पर साइबर ठगी, फर्जी कॉल एवं ऑनलाइन धोखाधड़ी की घटनाएं सामने आ रही हैं। अतः सभी उपभोक्ताओं से अपील है कि गैस बुकिंग एवं शिकायत हेतु केवल अधिकृत नंबरों का ही उपयोग करें। किसी अनजान कॉल, लिंक अथवा संदेश पर विश्वास न करें तथा ओटीपी, बैंक विवरण की जानकारी साझा न करें। सोहागपुर अनुविभाग क्षेत्र के समस्त एलपीजी गैस उपभोक्ताओं अधिकृत गैस एजेंसियों के गैस सिलेंडर बुकिंग एवं शिकायत के लिए आधिकारिक नंबर खनूजा एचपी गैस एजेंसीबुकिंग नंबर : 8888823456

टोल फ्री नंबर : 1800-2333-555 एवं राधिका भारत गैस एजेंसी, सेमरीहरचंद बुकिंग नंबर : 7715012345 एवं आदर्श भारत गैस एजेंसी, शोभापुर बुकिंग नंबर : 7718012345 सेमरी हरचंद एवं शोभापुर के लिए

टोल फ्री नंबर : 1800-22-4344 निर्धारित किया गया है।

सोहागपुर विधानसभा में कांग्रेस प्रदेश सह प्रभारी का आगमन आज

सोहागपुर

जिस प्रकार भाजपा नेता प्रदेश की करीबन 70 ऐसी विधानसभा क्षेत्रों का चयन किया है। जिसमें उसके प्रत्याशी कम मतों से विजयी हुए हैं।या पराजित हो चुके हैं। उन विधानसभा क्षेत्रों में की पिछले दिनों से दिल्ली एवं प्रदेश में भाजपा को सशक्त बनाने के लिए मंथन चल रहा है। तथा आगामी रणनीति को बनाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।ऐसे में सोहागपुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में कांग्रेस प्रदेश सह प्रभारी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सचिव श्रीमती उषा नायडू का आगमन सोहागपुर की वाटिका ग्रार्डन 3 मई को 11 बजे हो रहा है। इस बैठक में सोहागपुर विधानसभा के माखननगर ब्लाक एवं सोहागपुर ब्लाक के कांग्रेस पदाधिकारियों जिसमें नवनियुक्त मंगलम पदाधिकारी, निर्वाचित जनप्रतिनिधि, प्रत्याशी गण, वरिष्ठ कांग्रेस नेता,सेवादल, एनएसयूआई एवं कांग्रेस के समस्त विंगो के पदाधिकारियों को उपस्थित रहने की अपील ब्लाक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सुधीर ठाकुर एवं नगर कांग्रेस अध्यक्ष प्रशांत जायसवाल ने की है। इस बैठक में पूर्व विधायक जिला संगठन प्रभारी संजय शर्मा , विधानसभा प्रभारी कवींद्र रघुवंशी , जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्षशिवाकांत गुड्डन पांडेय भी उपस्थित रहेंगे।

सोहागपुर विधानसभा में प्रदेश स्तरीय नेता – सोहागपुर विधानसभा के बीते चुनाव में भाजपा के अजेय रहे विधायक विजयपालसिंह ने कांग्रेस के पुष्पराजसिंह पटेल को करीबन 1762 मतों से हराया था।इस चुनाव में इससे ज्यादा मत नोटा में जन-मानस ने दिए थे। सोहागपुर विधानसभा के बीते चुनाव में भाजपा को माखन नगर ब्लाक ने हारने से बचाया था। संभव तय इसी कारण मुख्यमंत्री मोहन यादव को दादा माखनलाल चतुर्वेदी की नगरी में बुलाकर लाड़ली बहना की राशि आवंटित की थी। वहीं अनेकों योजनाओं की घोषणाएं की गई थी।इधर कांग्रेस को सोहागपुर विधानसभा चुनाव में आदिवासी क्षेत्रों में काफी बढ़त दिलाई थी।इसी कारण नवनियुक्त ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर ने सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय के समीपवर्ती आदिवासी ग्राम कामती रंगपुर में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजयसिंह को बुलाकर सम्मेलन आयोजित किया था। वहीं कांग्रेस ने अपने कमजोर माखन नगर की नब्ज पकड़कर बाग्रतावा रेल्वे स्टेशन पर रेल्वे सुविधाओं को लेकर बड़ा आयोजन करके माखन नगर से लेकर बाग्रतावा रेल्वे स्टेशन तक पैदल यात्रा निकाली गई थी। जिसमें जिले भर के कांग्रेसी नेता एवं कार्यकर्ताओं के अलावा प्रदेश सह प्रभारी श्रीमती उषा नायडू भी शामिल हुए थी। यहां आयोजित आमसभा में कांग्रेस ने एक तीर से दो निशाने साधे थे। जिसमें उन्हीं दिनों बोहानी रेल्वे स्टेशन पर क्षेत्रीय सांसद चौधरी दर्शनसिंह के इन्टरसिटी एक्सप्रेस के ठहराव को लेकर मंचासीन नेता नेता उनको आड़े हाथों लेते व्यंग्यात्मक लहजे में टिप्पणियां करके कहा कि कहा सोहागपुर की जनता-जनार्दन सोहागपुर विधानसभा के मुख्यालय पर सालों से रेल स्टापेज को मांग करती आ रही थी। लेकिन क्या सोहागपुर से बोहनी बड़ा है यह सवाल जनता से पूछकर कई उल्लेखनीय टिप्पणियां करते कहा था कि सोहागपुर रेल्वे स्टेशन बुनियादी सुविधाएं से अछुता है। कांग्रेस ने माखननगर की दुखती रग पर हाथ रख कर माखननगर एवं सोहागपुर के कांग्रेस जनों के एक प्रतिनिधिमंडल ने जबलपुर जाकर माखन नगर की रेल सुविधाओं को लेकर एक ज्ञापन सौंपा कर रेल्वे सुविधाओं की दरकार की थी। हालांकि अभी आगामी विधानसभा चुनाव में समय है। भाजपा एवं कांग्रेस दोनों चाहेंगे कि सोहागपुर विधानसभा को फतह किया जा सके। हालांकि पिछले दिनों सोहागपुर विधानसभा के ग्राम ठीकरी में भाजपा एवं कांग्रेस सहित कई गणमान्य नागरिकों के बीच पूर्व विधानसभा अध्यक्ष सीताशरण शर्मा की उपस्थिति हुई थी। जिसमें ऐक्टिव भारत मंच को प्रभावशाली बनाने का मंथन किया गया था।जिसमें विशेष कार्य करने वालों को सम्मानित करने की योजना बनाई गई थी। लेकिन इस बैठक के कई अर्थ निकाले जा सकते हैं।

नागरिकों की दुखती रग –भाजपा एवं कांग्रेस दोनों के लिए आगामी विधानसभा चुनाव में मत पलटाने के लिए करने होंगे धरातल पर कार्य। जिसमें सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय पर प्रतिदिन बिजली की समस्या , रेल्वे स्टेशन पर सुविधाओं का अभाव, प्लेटफार्म नंबर दो अंग्रेजी के जमाने से नीचा है। यात्रियों को होती है परेशानी, दो वार्डो इंदिरा वार्ड एवं तिलक वार्ड सहित करीबन 30, आदिवासी ग्रामीणों के आवागमन के रास्ते में ओवर ब्रिज की आवश्यकता। इसके अभाव में नागरिक एवं छात्र घंटों सम्पार गेट खुलने के इन्तजार में खड़े रहते हैं। भाजपा की नगर पंचायत परिषद निर्वाचित होने के उपरांत से ही सफाई व्यवस्था का अभाव प्रतिदिन सोशल मीडिया पर कटाक्ष अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि गड्ढों को दुरुस्त करने की तरफ उदासीनता। पलकमती नदी प्रदुषित हो गई है।जिसमें नगर के क़रीबन दस से अधिक गंदे नालों के पानी ने नदी को हरी घास का नाला बना दिया है।

नपा की कोई योजना नहीं। अव्यवस्थित सब्जी मंडी। दो पहिया वाहनों के कोई नहीं है स्थान।पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग 22 फोर लाइन की महती आवश्यकता। आए दिन दुर्घटनाओं में इजाफा। पलकमती पुल पर नित्य प्रति जाम, ग्राम शोभापुर के राज्य मार्ग से भटगांव रास्ते पर लगभग रोज मार्ग अवरूद्ध होना।सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय के समीप ब्लैक स्पाट लांगा बम्होरी यहां है 90 कोणीय रास्ता आए दिन दुर्घटनाएं एक बस दुर्घटना में करीबन 18 यात्रियों की मौत के बाद जनप्रतिनिधियों की घोषणा लेकिन धरातल पर कुछ नहीं।करनपुर,रानी पिपरिया मोड़ दुर्घटना के स्थल। वहीं सोहागपुर में उद्योगों की महती आवश्यकता। ताकि युवकों को रोजगार मिला सकें। वर्तमान में किसानों की उपज शासकीय खरीदी। चिकित्सालय में संसाधनों की कमी अधिकांश मरीज जिला मुख्यालय भेजें जाते हैं। यही है सोहागपुर विधानसभा का मुख्यालय।

मई 2026

11 नई फिल्मों में हर रंग का मनोरंजन

मार्च में धुरंधर 2 और अप्रैल में भूत बंगला जैसी फिल्मों ने सिनेमाघरों की रौनक वापस लौटाई, तो अब मई 2026 इस उत्साह को और ऊंचाई देने जा रहा है। इस महीने बड़े पर्दे पर 11 नई फिल्में रिलीज हो रही हैं, जिनमें रोमांस, कॉमेडी, एक्शन, पॉलिटिकल ड्रामा और पौराणिक कथाओं तक का शानदार मिश्रण देखने को मिलेगा। दिलचस्प बात यह है कि जहां एक ओर नई जोड़ियां प्यार की कहानियां लेकर आ रही हैं, वहीं दिग्गज कलाकार दमदार भूमिकाओं में नजर आएंगे।

मई महीने की शुरुआत 'राजा शिवाजी' से हुई, जो 1 मई को रिलीज हुई। यह एक भव्य पीरियड एक्शन-ड्रामा है। इस फिल्म के जरिए रितेश देशमुख ने निर्देशन में कदम रखा है। वे खुद छत्रपति शिवाजी महाराज की भूमिका निभा रहे हैं। फिल्म में अभिषेक बच्चन, विद्या बालन, भाग्यश्री, सलमान खान (कैमियो), फरदीन खान और महेश मांजरेकर जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म शिवाजी महाराज के संघर्ष, युद्ध और 'स्वराज्य' की स्थापना की प्रेरक गाथा को दर्शाती है। इसी दिन रिलीज हुई फिल्म 'एक दिन' एक संवेदनशील रोमांटिक ड्रामा है, जिसे

आमिर खान ने प्रोड्यूस किया। इसमें उनके बेटे जुनैद खान के साथ साई पल्लवी नजर आएंगी, जो इस फिल्म से बॉलीवुड में डेब्यू कर रही हैं। फिल्म में कुणाल कपूर भी हैं। कहानी एक ऐसे युवक की है, जो एक दिन के लिए अपनी याददाश्त खो चुकी लड़की के साथ भावनात्मक रिश्ता बनाता है।

- 1 मई को ही 'पैट्रियट' भी रिलीज होगी, जो एक पॉलिटिकल स्पाई थ्रिलर है। इसमें मलयालम सिनेमा के दिग्गज ममूटी और मोहनलाल पहली बार साथ नजर आएंगे। फिल्म में फहाद फासिल और नयनतारा भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं।
- 7 मई को रिलीज होने वाली 'कृष्णावतारम पार्ट 1: द हार्ट भगवान श्रीकृष्ण' के जीवन के एक भावनात्मक चरण को दर्शाती है। जिसमें सिद्धार्थ गुप्ता, संस्कृति जयना और सुष्मिता भट्ट मुख्य भूमिकाओं में हैं।
- 8 मई को 'दादी की शादी' एक हल्की-फुल्की फैमिली कॉमेडी के रूप में दर्शकों को हंसाने आएगी। इसमें नीतू कपूर, कपिल शर्मा, रिद्धिमा कपूर साहनी, सादिया खतीब और आर सरथकुमार नजर आएंगे। कहानी एक बुजुर्ग महिला के दोबारा शादी करने के फैसले के इर्द-गिर्द घूमती है।
- इसी दिन 'आखिरी सवाल' भी रिलीज होगी, जो एक गंभीर पॉलिटिकल ड्रामा है। इसमें संजय दत्त, अमित साध और नमाशी चक्रवर्ती मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म एक शैक्षणिक विवाद से शुरू होकर राष्ट्रीय बहस तक पहुंचने वाली कहानी को दिखाती है।
- 14 मई को 'कट्टालन' रिलीज होगी, जिसमें एंटनी वर्गीज लीड रोल में हैं। यह एक एक्शन थ्रिलर है, जो जंगल और अवैध हाथी दांत के व्यापार के इर्द-गिर्द घूमती है।
- 15 मई को 'पति पत्नी और वो दो' दर्शकों को हंसाने आएगी। इसमें आयुष्मान खुराना, सारा अली खान, वामिका गब्बी, रकुल प्रीत सिंह और विजय राज नजर आएंगे। यह फिल्म रिश्तों की उलझनों और हास्य का दिलचस्प मिश्रण है।
- 22 मई को रिलीज होने वाली 'चांद मेरा दिल' में अनन्या पांडे और लक्ष्य लालवानी की जोड़ी है। यह कॉलेज लाइफ और युवा प्रेम की कहानी है, जिसमें भावनात्मक उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं।
- इसी दिन 'है जवानी तो इश्क होना है' भी रिलीज होगी। डेविड धवन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में वरुण धवन, मृणाल ठाकुर, पूजा हेगड़े और मनीष पॉल नजर आएंगे। यह फिल्म रिश्तों, प्यार और जीवन की उलझनों पर आधारित है।
- 22 मई को ही 'तेरा यार हूं मैं' भी सिनेमाघरों में आएगी। मिलाप जावेरी के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अमन इंद्र कुमार, परेश रावल और आकांक्षा शर्मा मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह दोस्ती, प्यार और दिल टूटने की कहानी है।

कुल मिलाकर, मई 2026 का महीना फिल्म प्रेमियों के लिए किसी उत्सव से कम नहीं है। हर हफ्ते अलग-अलग जॉनर की फिल्में रिलीज हो रही हैं, जो न सिर्फ मनोरंजन का भरपूर डोज देंगी, बल्कि दर्शकों को भावनात्मक, ऐतिहासिक और सामाजिक स्तर पर भी जोड़ने का काम करेंगी।

रियल बॉक्स

फिल्मों में 'राम' का चेहरा और विवाद

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भारतीय सिनेमा में रामायण जैसे पौराणिक महाकाव्यों को चित्रित करने की परंपरा शुरुआती दौर से चली आ रही है। लेकिन, हर दौर से ऐसे प्रयास विवादों की भेंट चढ़ते रहे। नितेश तिवारी की आने वाली मेगा बजट फिल्म 'रामायण' के टीजर से उपजे विवाद इसकी ताजा मिसाल हैं, जहां रणबीर कपूर को 'राम' बनाने पर उनके पुराने बयानों और फ़िल्मी लुक को लेकर बहस छिड़ गई। ब्लैक एंड व्हाइट दौर से लेकर आज तक आस्था, व्याख्या और कलाकारों की पृष्ठभूमि ने इन विवादों को और गहरा दिया। शुरुआती सालों में पौराणिक फिल्मों का विशेष स्थान था। 1930 से 1950 के बीच बनी फिल्मों में राम, कृष्ण और शिव जैसे किरदारों को निभाने वाले कलाकारों को दर्शक सचमुच देवता मान बैठते थे। फिल्म 'राम राज्य' इसका सबसे बड़ा उदाहरण कहा जाता है। इस फिल्म में प्रेम अदीब ने राम की भूमिका निभाई थी। कहा जाता है कि लोग उन्हें सचमुच भगवान मानकर उनके चरण छूते थे। महात्मा गांधी ने भी इस फिल्म को देखा था जो अपने आप में इसकी सांस्कृतिक स्वीकार्यता को दर्शाता है। जब किसी अभिनेता की निजी जिंदगी में कोई असंगत बात सामने आती, तो लोग उसे उस पवित्र छवि के खिलाफ मानते।

विवाद का बीज तब से आज तक वही है कि देवता का किरदार निभाने वाला व्यक्ति खुद कितना 'देवत्व' रखता है! 1987 में 'रामायण' के प्रसारण ने इस भाव को चरम पर पहुंचा दिया। अरुण गोविल राम के रूप में इतने लोकप्रिय हुए कि लोग उन्हें सड़कों पर भी भगवान की तरह पूजते थे। यही वह दौर था, जिसने एक फिक्स्ड इमेज बना दी। राम का चेहरा कैसा होना चाहिए, उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए। आज जब रणबीर कपूर को इस भूमिका में देखा जाता है, तो तुलना अनिवार्य हो जाती है। भारतीय सिनेमा की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' (1913) से ही पौराणिक किरदारों पर ऐसा विवाद शुरू हो गया था, जहां सत्यनिष्ठा की कथा को लेकर धार्मिक समूहों ने सत्यनिष्ठा पर सवाल उठाए और मामला अदालत तक पहुंचा। 1920-30 के दशक में रामायण प्रेरित फिल्में जैसे 'वीर रामायणम' (1923) आईं, लेकिन इनकी व्याख्या पर पारंपरिक विद्वानों ने आपत्ति जताई। क्योंकि, महाकाव्य की घटनाओं को नाटकीय रूप देने को अपमान माना गया। ब्लैक एंड व्हाइट दौर में 'भक्त विदुर' (1921) को ब्रिटिश सरकार ने बैन कर दिया था, क्योंकि विदुर का चरित्र महात्मा गांधी से मिलता-जुलता था, जो राजनीतिक संवेदनशीलता का उदाहरण था।

1943 में रिलीज हुई 'राम राज्य' एक सफल रामायण-अनुकूलन फिल्म थी। लेकिन, कुछ धार्मिक समूहों ने राम-राज्य की अवधारणा को राजनीतिक रूप देने का आरोप लगाया। 1948 की 'राम राज्य' (विजय भट्ट निर्देशित) में प्रेम अधिकारी राम बने, लेकिन सती प्रथा या सीता के त्याग जैसे दृश्यों पर सामाजिक बहस छिड़ी। इस दौर में पौराणिक फिल्में लोकप्रिय तो हुईं, पर आस्था के नाम पर सेंसरशिप और सामाजिक बहिष्कार आम थे, जो सिनेमा को धार्मिक मान्यताओं के दायरे में बांधने का प्रयास था। ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों में भी अभिनेताओं का चयन आस्था से जुड़ा रहा। 1987 के रामानंद सागर के धारावाहिक 'रामायण' ने अरुण गोविल को अमर कर दिया। लेकिन, सीता के धरती में समा जाने के बाद आगे की कथा दिखाने से इनकार पर दर्शकों ने विरोध किया, जो 10 साल चला। 'आदि पुरुष' (2023) में प्रभास के राम के किरदार और वीएफएक्स पर भारी विवाद हुआ था। यहां तक कि फिल्म के डायलॉग तक बदलने पड़े और बॉक्स ऑफिस पर भी फिल्म को भारी असफलता मिली। यहां तक कि सीता को 'भारत की बेटी' दिखाने पर नेपाल में फिल्म पर बैन की मांग उठी, जो सीता-जन्मस्थली विवाद को उजागर करता है।

नितेश तिवारी की 'रामायण' (बजट 4000 करोड़) का टीजर हनुमान जयंती पर रिलीज होने से पहले ही विवादास्पद हो गया। रणबीर कपूर के

राम लुक पर सुनील लहरी (पुराने लक्ष्मण) ने कहा कि 'एनिमल' की क्रूरता के बाद उनमें राम की मासूमियत नहीं है। रणबीर का पुराना 'बीफ लवर' वाला बयान भी वायरल हुआ, जिस पर सोशल मीडिया ने उन्हें अयोग्य ठहराया। फिल्म का टीजर भारत से पहले अमेरिका में पहले दिखाए जाने पर भी भारतीय दर्शकों ने भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप लगाया। वीएफएक्स और मोशन कैप्चर पर सवाल उठे। फिल्मकार को 'आदि पुरुष' जैसे फूहड़ प्रयोग से सबक लेने की मांग की गई। सदुरु ने रणबीर पर अतीत का हवाला देकर सवाल किया, लेकिन यश (रावण) की प्रशंसा की। रणबीर ने स्वीकारा कि भूमिका से पहले इनकार किया था, लेकिन पिता बनने और निर्देशक के विजन से वे राजी हुए और उन्होंने मांसाहार छोड़ दिया। आज की 'रामायण' सिर्फ कहानी नहीं, एक विजुअल स्पेक्टेकल बनने जा रही है। मोशन कैप्चर, एआई और हाई-एंड वीएफएक्स का उपयोग इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाता है। लेकिन, भारतीय दर्शक अभी भी भावनात्मक जुड़ाव को तकनीकी चमत्कार से ऊपर रखते हैं। यही कारण है कि 'आदि पुरुष' में तकनीक होने के बावजूद भावनात्मक कनेक्ट की कमी खल गई। फिल्म की कास्ट में साई पल्लवी सीता, सनी देओल हनुमान, रवि दुबे लक्ष्मण बने हैं। फिल्म का पहला पार्ट दिवाली 2026 और पार्ट-2 की अगले साल रिलीज संभावित है।

ब्लैक एंड व्हाइट दौर में फिल्म 'कर्मा' (1933) के सीन पर भी बवाल हुआ था, वहीं पेरियार की 'सच्ची रामायण' पर बैन लगा दिया गया था। 'पद्मावत' में सती-गौरवर्ण पर विवाद आधुनिक उदाहरण है। ये विवाद आस्था बनाम अभिव्यक्ति की टकराहट दिखाता हैं। रामानंद सागर के पुत्र मोती सागर ने नई 'रामायण' से तुलना को गलत ठहराया। रणबीर कपूर के मामले में विवाद का एक बड़ा कारण उनकी पिछली फिल्मों की छवि भी है। 'एनिमल' जैसी फिल्म में उनके आक्रामक किरदार को देखकर दर्शकों को उनके 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के किरदार में देखना भी कठिन लग रहा है। लेकिन, यही अभिनय की मूल प्रकृति है। एक कलाकार कई रूपों में ढल सकता है। इस पर सदुरु का दृष्टिकोण उल्लेखनीय है, जिसमें वे कहते हैं कि अभिनेता को उसके पिछले किरदारों से बांधना उचित नहीं है। ये विवाद सिनेमा को सेंसरशिप और सोशल मीडिया ट्रोलिंग के जाल में फंसा देते हैं।

ब्लैक एंड व्हाइट से आज के डिजिटल युग तक, पौराणिक किरदारों की व्याख्या आस्था की कसौटी पर कसी जाती है। नितेश तिवारी जैसे निर्देशक 'दंगल' की सफलता से प्रेरित होकर भव्यता लाएं, तो दर्शक स्वीकार करेंगे। सिनेमा को धार्मिक ग्रंथों से प्रेरणा लेनी चाहिए, लेकिन संवेदनशीलता भी बनाए रखना होगी। दरअसल, आज का दर्शक दो हिस्सों में बंटा है। एक वर्ग परंपरा और आस्था को प्राथमिकता देता है, दूसरा वर्ग तकनीक और नए प्रयोगों को स्वीकार करता है। नमित मल्होत्रा और नितेश तिवारी की चुनौती यही है, कि वे इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित करें। इतिहास गवाह है कि हर दौर में पौराणिक किरदारों को लेकर विवाद हुए। चाहे वह राम राज्य हो, रामायण हो या आज की 'रामायण।' समय ही तय करता है कि कौन-सा चित्रण दर्शकों के दिल में बसता है। हो सकता है कि आज जिस रणबीर कपूर को लेकर विवाद हो रहा है, वही आने वाले समय में राम के एक नए, आधुनिक और स्वीकार्य चेहरे के रूप में स्थापित हो जाएं। सिनेमा बदल रहा है, तकनीक बदल रही है, लेकिन आस्था का मूल भाव वही है और शायद यही इस बहस की असली खूबसूरती भी! इस विवाद का अंत तभी होगा, जब दर्शक रणबीर कपूर को 'रामायण' में देखेंगे। तभी पता चलेगा कि दर्शकों ने उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में स्वीकारा या रणबीर कपूर की तरह ही देखा!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

शाहरुख़ की सल्तनत पर रणबीर भारी

रणवीर सिंह इन दिनों अपनी फिल्म 'धुरंधर 2' के साथ बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त प्रदर्शन कर रहे हैं। खास बात यह है कि उनकी यह सफलता सिर्फ भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि इंटरनेशनल मार्केट खासतौर पर यूनाइटेड किंगडम में भी उन्होंने बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 'धुरंधर 2' ने यूके में करीब 4.388 मिलियन पाउंड की कमाई कर ली है, जो शाहरुख खान की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'पठान' (4.380 मिलियन पाउंड) से भी ज्यादा है। दिलचस्प बात यह है कि फिल्म अभी भी सिनेमाघरों में चल रही है, यानी इसकी कमाई आगे और बढ़ने की संभावना है।

यूके बॉक्स ऑफिस पर यह उपलब्धि इसलिए भी अहम मानी जा रही है। क्योंकि, पिछले दो दशकों से वहां का मार्केट खान सुपरस्टार्स खासतौर पर शाहरुख खान के दबदबे में रहा है। ऐसे में रणवीर का इस रिकॉर्ड को पार करना इंडस्ट्री में एक बड़े बदलाव का संकेत माना जा रहा है। सिर्फ यूके ही नहीं, रणवीर सिंह की यह फिल्म अन्य अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी मजबूत पकड़ बना रही है। नॉर्थ अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप के कई हिस्सों में फिल्म ने शानदार प्रदर्शन किया है। ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि रणवीर की ग्लोबल अपील तेजी से बढ़ रही है, और वह अब सिर्फ बॉलीवुड स्टार नहीं बल्कि इंटरनेशनल बॉक्स ऑफिस पर भी एक बड़ा नाम बनते जा रहे हैं।

भारत में भी रणवीर सिंह की सफलता का सिलसिला लगातार मजबूत हुआ है। वह उन चुनिंदा अभिनेताओं में शामिल हो चुके हैं जिन्होंने 1000 करोड़ रुपये के क्लब को नई पहचान दी है। उनकी फिल्मों का स्केल, कंटेंट और मार्केटिंग तीनों का संतुलन उन्हें अपने समकालीन कलाकारों से अलग बनाता है। कुल मिलाकर, 'धुरंधर 2' की सफलता ने यह साफ कर दिया है कि रणवीर सिंह अब एक ऐसे स्टार बन चुके हैं जिनकी पकड़ घरेलू ही नहीं, बल्कि वैश्विक बॉक्स ऑफिस पर भी मजबूत होती जा रही है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि वह इस रफ्तार को किस तरह आगे बढ़ाते हैं और क्या नए रिकॉर्ड अपने नाम करते हैं।

आकाशदीप की कास्टिंग लोगों को रास नहीं आई

टीवी इंडस्ट्री के चर्चित शो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' के नए सीजन को दर्शकों का अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। यह टीआरपी में भी आगे बना हुआ है। लेकिन, हाल ही में हुई एक कास्टिंग ने सोशल मीडिया पर बहस छेड़ दी है। शो में आकाशदीप सैगल की एंट्री को लेकर कई दर्शक खुश नहीं हैं। पहले सीजन में वे तुलसी के बागी बेटे अंश के किरदार में नजर आए थे, लेकिन अब रीबूट में वे उसी अंश के बेटे यानी तुलसी के पोते का रोल निभा रहे हैं। इस ट्विस्ट को जहां मेकर्स ने क्रिएटिव फैसला बताया है, वहीं दर्शकों को यह कास्टिंग कुछ हद तक असंगत लग रही है। लोगों का कहना है कि आकाशदीप की उम्र इस नए किरदार से मेल नहीं खाती। सोशल मीडिया पर यूजर्स यह भी कह रहे हैं कि वे अपने ऑन-स्क्रीन पिता से भी बड़े दिखाई देते हैं। शो में उनके पिता का किरदार निभा रहे हितेन तेजवानी उनसे सिर्फ एक साल बड़े हैं, जबकि तुलसी का किरदार निभाने वाली स्मृति ईरानी दोनों से छोटी हैं, जिससे दर्शकों को कहानी का यह पहलू थोड़ा अटपटा लग रहा है। हालांकि, आकाशदीप सैगल ने इन आलोचनाओं पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि यह बदलाव कहानी को नया आयाम देने के लिए किया गया है और दर्शकों को इसे एक अलग नजरिए से देखना चाहिए। गौरतलब है कि क्योंकि सास भी कभी बहू थी का पहला दौर 2000 से 2008 तक चला था और उस समय यह भारतीय टेलीविजन का सबसे लोकप्रिय शो बन गया था। नए सीजन में पुराने कलाकारों के साथ-साथ कई नए चेहरे भी जुड़े हैं, जिससे कहानी को एक नई दिशा देने की कोशिश की जा रही है।

सिनेमा में भी चलता है हार जीत का खेला

अशोक जोशी

देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव की मतगणना की तैयारी जारी है। इसी से हार जीत का सही निर्णय होगा। जब से एक्जिट पोल के परिणाम सामने आए, हार और जीत की बातें कुछ ज्यादा ही चर्चाओं

में है। हार जीत का खेला होने के दावे सभी पक्ष कर रहे हैं। ऐसा नहीं कि केवल चुनावों या समाज में हार या जीत जैसी घटनाएं होती हैं। सिनेमा के कथानकों का तो मूल आधार ही हार-जीत होता है। नायक ऐसा कैरेक्टर होता है, सारी परिस्थितियों से जूझकर अंत में जीत ही जाता है।

हिंदी फिल्मों का आधार ही हार और जीत पर टिका है। फिल्मों का एक बंधा बंधाया फार्मूला है कि हार और जीत की इस जंग में जीत अक्सर नायक या नायिका की ही होती है। ऐसी फिल्मों का अंत प्रायः सुखांत ही होता है। लेकिन, हमारे फार्मूलेबाज निर्माताओं ने ऐसी फिल्में भी बनायी है जिसके अंत में प्यार हार जाता है और नायक के हाथ नायिका या नायिका के हाथ नायका नहीं लगती, बल्कि हार लगती है। ऐसी दुखांत फिल्मों को भी दर्शकां ने बेहद पसंद किया है। देखा जाए तो हार और जीत पर आधारित शीर्षक वाली फिल्मों की संख्या मुट्ठी भर से ज्यादा नहीं हो सकती।

आजादी के तुरंत बाद 1949 में देव आनंद और सुरैया की फिल्म 'जीत' का प्रदर्शन हुआ था। यह दो भाईयों और भारत के विकास से जुड़ी फिल्म थी जिसमें जीत का मतलब फिल्म की नायिका सुरैया का नाम था। इस फिल्म के गीत बन जाओ हिन्दुस्तानी बाबू, चाहे कितनी डगर हो और हंस ले गा ले ओ चांद मेरे बहुत हिट हुए थे और यह फिल्म भी सुपर हिट थी। 1972 में रणधीर कपूर और बबीता की फिल्म 'जीत' प्रदर्शन हुआ था। इस फिल्म के निर्देशक ए सुब्बाराव थे। यह 1967 की तेलुगू फिल्म 'पूला रंगाडू' की रिमेक थी। वह फिल्म भी एजे क्रोनिन के उपन्यास 'बियॉण्ड दिस प्लेस' पर आधारित थी। जिस समय यह फिल्म बनी, उस समय रणधीर कपूर और बबीता के प्रेम प्रसंग की चर्चा जोरों पर थी। निर्माता ने भी इसे भुनवाने का ही प्रयास किया था, वर्ना लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के संगीत से सजी इस फिल्म में शीशी भरी गुलाब की, दूल्हन बनती है नसीबों वालियां, चल प्रेम नगर जाएगा बतला ओ तांगेवाले और के मुंडे का मैं मामा बन गया जैसे गीत के अलावा हार जीत जैसी कोई बात नहीं थी । यह महज एक अपराध ड्रामा फिल्म थी।

1976 में फिर एक बार 'जीत' फिल्म का निर्माण हुआ जिसे साजिद नडियादवाला ने बनाया

था और इसका निर्देशन में राज कंवर ने किया था। इस फिल्म में बबीता की बेटी करिश्मा नायिका बनी। उनके साथ फिल्म में सलमान खान, सनी देओल, अमरीश पुरी और दिलीप ताहिल की भूमिका थी। इसका एक नायक सनी देओल अपराधी है, जो नायिका से प्यार करता है और वह भी उससे प्यार करने लगती है, तभी लंदन से दूसरे नायक सलमान की एंट्री होती है जिसके लिए वह सनी को छोड़ देती है। फिल्म के नाटकीय घटनाक्रम में सनी देओल को मारने की सुपारी दी जाती है। लेकिन, जब उसे पता चलता है कि वह उसकी प्रेमिका का पति है तो वह न केवल उसे बचाता है बल्कि उसे करिश्मा से मिलवाकर जिंदगी हारकर भी त्याग में जीत जाता है। नदीम-श्रवण ने इस फिल्म में यारा ओ यारा, साजन घर आना, अभी सांस लेने की और वादों से नहीं जैसे हिट गाने देकर फिल्म को सुपर हिट बना दिया था।

इसके बाद जीत से मिलती जुलती फिल्म 'प्यार की जीत' और 'होगी प्यार की जीत' जैसी फिल्में भी बनी। लेकिन, वह दर्शकों का दिल नहीं जीत पायी। 'जो जीता वो सिकंदर' और 'जीत लेंगे बाजी' जैसी फिल्मों में भी जीत केवल एक शब्द ही था। और जहां तक हार का सवाल है उस पर केवल एक ही नाम से चार फिल्म ही बनी है । यह फिल्म है 1940,1954 ,1972 और 1990 में प्रदर्शित 'हार-जीत!' पहली दो फिल्में समय के साथ अपनी पहचान गुम कर चुकी है और याद रहती है 1972

और 1990 की हार जीत। इसमें से पहली फिल्म में रेहाना सुलतान, राधा सलूजा, अनिल धवन और महमूद की भूमिका थी।

सीपी दीक्षित निर्देशित इस फिल्म का संगीत लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने दिया था। यह तमिल फिल्म 'थमाराई नेंजम' की रिमेक थी। दूसरी फिल्म में पुनित इस्सर, कबीर बेदी, कंवलजीत माधवी और शफी इनामादार थे। अवतार भोगल निर्देशित इस फिल्म को बप्पी लहरी का संगीत भी जिता नहीं पाया और बॉक्स ऑफिस पर इसकी हार हुई थी। हकीकत तो यह है कि फिल्मों में हार और जीत के शीर्षक से ज्यादा इस विषय पर बने गीत ज्यादा लोकप्रिय हुए। इन गीतों में पुरानी फिल्म 'अंदाज' का आज किसी की हार हुई है आज किसी की जीत, 'शगुन' का जीत ही लेंगे बाजी हम तुम, 'आरपार' का ए लो मै हारी पिया हुई तेरी जीत रे, 'अपना देश' का गीत सुन चंपा सुन तारा कोई जीता कोई हारा आज भी लोकप्रिय हैं।

फिल्मों में हार और जीत का एक सेट फार्मूला होता है। यदि कॉलेज जीवन पर आधारित फिल्म है, तो कॉलेज के चुनाव और मारपीट से हारजीत का फैसला होता है। गुलजार की 'मेरे अपने' इस तरह की श्रेष्ठ फिल्म थी। पुरानी फिल्मों मे कॉलेज के वार्षिकोत्सव में गीत गजल या पहेली की प्रतियोगिता होती थी। जिसमें नायक-नायिका आमने-सामने होते थे। पहले नायक जीतता रहता है, लेकिन जब वह हारती नायिका को रूआंसी देखता है तो जानबूझकर हार जाता है और हारकर नायिका का दिल जीत लेता है। इस अवसर पर एक दो गाना जरूरी माना जाता था। इस तरह की गीतों और फिल्मों में तेरे प्यार का आसरा चाहता हूं (धूल का फूल), एक सवाल मैं करूं एक सवाल तुम करो (ससुराल), वो कौन है वो कौन है (अंजाना), मेरे मेहबूब तुझे (मेरे मेहबूब) और तेरी रातो के लिए दिल को जलाया हमने (फिर वही दिल लाया हूं) शामिल है।

ऐसी भी कई फिल्में हैं जिनमें नायक और नायिका के बीच नाच और गाने की हार जीत होती है। यदि फिल्म राजधराने की है तो नायक सितार पर होता है और नायिका घुंघरू बांध कर नाचती है। आखिरी में घुंघरू टूट जाते हैं या नायिका चक्कर खाकर गिर पडती है। इस हार के साथ उसका घमंड टूट जाता है। 'कोहिनूर' और 'पारसमणी' सहित दर्जनों फिल्मों में इस तरह के सीन फिल्माए गए थे। नासिर हुसैन की फिल्म में इस तरह की हार जीत की सिचुएशन निश्चित रूप से होती थी, जो 'दिल देके देखो' से लेकर 'हम किसी से कम नहीं' तक जारी रही। कुछ फिल्मों में नायिका और खलनायिका के बीच नाच गाने की हार जीत होती थी। इसमें खलनायिका पाश्चात्य संगीत पर नाचती और नायिका शास्त्रीय गीत नृत्य से उसे हरा देती है।

फिल्मों में प्यार की हार जीत के अलावा खानदानी दुश्मनी के चलते हार-जीत के प्रसंग जोड़े जाते रहे है। स्टंट फिल्मों में नायक को कभी तलवारबाजों से तो कभी शेर को हराकर जीतते दिखाया, तो कभी यह हार-जीत घुड़दौड़ और कार रेस तक आगे बढ जाती है। चोरों की गैंग पर बनी फिल्में होती है, तो बैंक का लॉकर तोड़कर या म्यूजियम में रखो हीरा चुराकर हार-जीत का फैसला किया जाता रहा है। 'नया दौर' में यह हार-जीत कार और तांगे की दौड़ से तय होती है, तो 'जो जीता वो सिकन्दर' में साइकिल रेस तो 'लगान' में गेंद और बल्ले से तो 'चक दे इंडिया' में हॉकी की स्टिक से हार जीत का फैसला करते हुए हमारी फिल्में दर्शकों को गुदगुदाती रही है। यह तो तय है कि न तो चुनावों में और न फिल्मों हार-जीत का यह सिलसिला कभी खत्म होने वाला नहीं है।

'कोऊ नृप होई... हमें ही हानि ...!'

बाखबर

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

व्यंग्यकार परसाई जी की रचना..., सरकारी दफ्तर के मुलाजिम को सरकारी काम से दूसरे शहर भेजा गया। लौट कर उसने टीए-डीए बिल हेड ऑफिस को भेज दिया। वहां से ऑब्जेक्शन आ गया कि आपके शहर से, दूसरे शहर की दूरी छब्बीस मील है, जबकि टीए- डीए तो सत्ताइस मील पर दिया जाता है, इसलिए आपका बिल नामंजूर किया जाता है। कुछ दिन बाद उस दफ्तर में बड़ा-सा पार्सल आया। जब खोला गया तो उसमें से मील का पत्थर निकला, जिस पर दोनों शहर के बीच दूरी सत्ताइस मील लिखी थी। चूंकि मील का पत्थर सरकारी था तो कर्मचारी का बिल पास करना पड़ा और उसे पैसा मिल गया!

शहर के सरकारी अनाज गोदाम में चूहों का परिवार इतना बढ़ गया कि अनाज बचाना मुश्किल हो गया। तब अधिकारी ने हेड ऑफिस से इजाजत ली कि चूहों को खत्म करने के लिए बिल्ली पालने की इजाजत दी जाए। उस दौर में चूहों को आज की तरह जहर देकर मारने का रिवाज नहीं था। जैसे आज गाय की साख है, वैसे ही उन दिनों चूहों की थी कि 'गणेश-उत्सव' का बोलबाला और नवरात्रि का गरबा उतना चलन में नहीं था। मूषक को गणेश का वाहन समझा जाता था। सनातन धर्म वालों से उस समय भी सरकारी अधिकारी आज जितने ही डरते थे। तब बिल्ली को यह यह हक था कि लंच या डिनर में चूहों से काम चला ले।

हेड आफिस से इजाजत मिल गई और बाजार से बिल्ली ला कर अनाज के गोदाम में छोड़ दी गई। एक माह बाद गोदाम अधिकारी ने बिल्ली के खाने-पीने का बिल हेड आफिस भेज दिया कि इतना दूध पिलाया और इतना खाना हुआ। हेड आफिस से ऑब्जेक्शन आ गया कि जब बिल्ली को चूहे खाने के लिए ही पाला गया है तो फिर सरकारी खाना-खुराक क्यों दी जा रही है! बिल्ली का भोजन तो चूहा ही होता है तो फिर ये फिजूलखर्ची क्यों ! अगर चूहे नहीं हैं तो बिल्ली को हेड-आफिस में जमा करें, ताकि और चूहों से बर्बाद किसी और गोदाम में उसकी सेवा ली जा सके। यदि चूहे अभी हैं तो फिर बिल्ली को चूहे ही खाने दीजिए, बेकार चीजें उसे ना खिलाएं और जो बिल आपने दिया है, सरकारी खजाने से मंजूर नहीं होगा। अपनी गलती का दंड आप ही अदा करें। यानी बिल्ली का बिल सरकार नहीं देगी।

यह रचना करीब चालीस साल पहले लिखी थी, यानी देश की आजादी को ज्यादा समय नहीं हुआ था, तो मान सकते हैं कि अनुभव की कमी से ऐसी हरकतें हुई होंगी, लेकिन अभी बिहार से ही खबर है कि शराबबंदी के लिए कुख्यात बिहार के पुलिस थाने में जब्त की गई सैकड़ों बोतल शराब जब्त कर मालखाने में रख दी गईं। जब केस चला और सबूत के तौर पर बोतलें लेने के लिए पुलिस गई तो पता चला बोतलें तो पूरी हैं, लेकिन शराब गायब है। जब जनता को शराब पीने की इजाजत नहीं है तो पुलिस तो पीने से रही... तो फिर सैकड़ों बोतलों में से शराब कैसे गायब हो गई। ये सीलबंद बोतलें थीं। बोतल खुद तो पी नहीं सकती। जांच करना पुलिस के जिम्मे था तो यह पता लगा कि थाने के चूहे, बोतल खोल कर शराब पी गए और फिर ढक्कन भी लगा गए। पुलिस ने परसाईजी को पढ़ लिया होता तो बिल्ली ही पाल लेते कि चूहे, शराब तो चट नहीं कर पाते। ये सारे सरकारी कमाल के किस्से आज इसलिए याद आ रहे हैं कि एक भाई जब बैंक में जमा बीस हजार रुपए निकालने के लिए गया तो अधिकारियों ने उससे सबूत चाहा कि साबित करे कि अब उसकी बहन जिंदा नहीं है, मर चुकी है। उसने अपनेतईं पूरी कोशिश कर ली,लेकिन बैंक को भरोसा नहीं हुआ। आखिरकार भाई कब्रिस्तान गया और बहन की कब्र खोद कर कंकाल निकाल लाया। पूरे शहर ने यह भयावह दृश्य देखा कि कोई कंकाल लिए चला जा रहा है। भाई ने बैंक अधिकारियों के सामने कंकाल रख दिया, तब जाकर सरकारी नींद उड़ी और उसे रुपए मिले।

सोचिये, यदि भाई ने बहन का दाह-संस्कार कर दिया होता तो क्या करता? क्या अस्थियां लेकर जाता या उस पर भी यह आपत्ति दर्ज की जाती कि कैसे मान लें यह बहन की ही अस्थियां हैं। बीस हजार रुपए निकालने के लिए उसे डीएनए टेस्ट तक करवाना पड़ता। इसमें कितना समय और पैसा खर्च होता, कल्पना नहीं कर सकते। तो बताइए, आजादी की पौन सदी के बाद भी हम वहीं नहीं हैं, जहां अंग्रेजन हमें छोड़ कर गए थे? कहां बदलाव आया है? सरकारी मानसिकता तो जस की तस ही है!

आज तो दौर ऐसा है कि जिंदा से भी 'कागज' मांग रहे हैं कि साबित करो कि तुम जिंदा हो! ना यहां मरना आसान है... और ना ही जीना... क्योंकि कागज दिखाए बगैर सरकार यकीन नहीं करती !

राजा शिवाजी: ऐतिहासिक कहानी की कमज़ोर पटकथा

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

1 मई का मुझे बेसब्री से इंतज़ार था क्योंकि मुझे ऐतिहासिक फिल्मों को देखने का बड़ा चाव है और बरसों की रिसर्च और मेहनत के बाद अभिनेता, लेखक निर्देशक रितेश देशमुख अपना ड्रीम प्रोजेक्ट 'राजा शिवाजी' सिल्वर स्क्रीन पर प्रदर्शित करने जा रहे थे। मैंने इस मूवी को एक आम दर्शक की दृष्टि से देखने का प्रयास किया जिसे शिवाजी से जुड़ी राजनीतिक बातों उनकी योजनाओं का पता नहीं है। इस दृष्टि से शुरूआत में शिवाजी के जन्म के बाद उनके बालपन में उनके पिता ने किस तरह भिन्न भिन्न राज्यों से संधि और गुलामी की (इस पूरे ख्याल का ताना-बाना ठीक से बुन नहीं पाये, हम आम दर्शक उलझ कर रह गये। अफ़जल खॉ बीजापुर दरबार का श्रेष्ठ नायक व असाधारण योद्धा था उसे बीजापुर राज्य की असाधारण सेवा के लिये वह गांव दिया गया था। इतिहास बताता है अफ़जलखॉ अय्याश, क्रूर इंसान था उसने तुलजा भवानी का मंदिर तोड़ा शिवाजी को मारने का प्रण लेकर अफ़जल ने कई बार युद्ध किये। सबसे प्रसिद्ध अंतिम युद्ध वाघनखा युद्ध था जिसमें शिवाजी ने अफ़जल के वार्ता प्रस्ताव में धोखे की संभावना को देखते वाघनखा से अफ़जल के प्राण लिये। अफ़जल के साथ शिवाजी की दुश्मनी पर एक अलग से फिल्म बन सकती थी। अफ़जल का चरित्र सिल्वर स्क्रीन पर संजय दत्त ने निभाया। ऐसा लगा मानों धुरंधर की शूटिंग करते करते संजय दत्त शिवाजी की फिल्म करने आ गए, अपनी ही छवि से प्रेरित संजय दत्त मोनोटोनस हो गये हैं।

राजा शिवाजी में शिवाजी के बाल चरित्र को रॉयल देशमुख ने बखूबी निभाया है। वे रितेश के पुत्र है। रितेश देशमुख ने शिवाजी का अभिनय किया। अभिषेक बच्चन ने संभाजी शाह भौंसले शिवाजी के बड़े भाई के रोल में खूब जंचे हैं उनका अभिनय काबिले तारीफ है। जीजाबाई के चरित्र को भाग्यश्री ने निभाया है, जिया नहीं। जीजाबाई एक ऐसा नाम है जिसने शिवाजी को पूरी निष्ठा व मेहनत से गढा था। भाग्यश्री इस रोल के लिए नाजुक लगी वैसे भी इतिहास में उनका चरित्र बहुत प्रबल था जो फिल्म में सिर्फ होने को दर्शा रहा था। जेनेलिया ने शिवाजी की पत्नी का रोल निभाया शायद शिवाजी की मजबूत स्त्री की तरह नहीं जिसने छावा को जन्मा था बल्कि रितेश की पत्नी

की तरह। सचिन खेड़ेकर मंझे हुये मराठी फिल्मों के अभिनेता है उन्होंने अपने चरित्र के साथ न्याय किया है। विद्या बालन जैसी अभिनेत्री को आदिल शाह की बड़ी बेगम का रोल निभाने का अवसर मिला। अभिनय में उनका कोई सानी नहीं पर उनके कद के हिसाब से कोई बड़ा रोल दिया जाता शायद जीजाबाई का। बोमेन ईरानी, मांजरेकर, जितेंद्र जोशी अपने भूमिका के साथ न्याय करते हैं। फरदीन ने हमेशा की तरह शाहजहां का चरित्र व्यर्थ किया मानों थोड़ी-थोड़ी देर में उन्हें अपना चेहरा दिखाना था

शिवाजी योजनाएं बनाने में, कम सैनिकों के साथ अच्छा कार्य कैसे किया जाये, अपने सलाहकारों को सम्मान देने में अग्रणीय थे शिवाजी की पहचान एक अच्छे योजनाकार के रूप में देखी गई जिसका फिल्म में अभाव था। शिवाजी को हमेशा ऊंचा-पूरा, भव्य, शारीरिक रूप से बलवान, तेजवान दिखाया गया है। रितेश देशमुख उस रूप में फिट नहीं लगे चेहरे पर थोड़ा असमंजस का भाव भी दिखा।

शिवाजी की एक बेहतरीन किताब शिवाजी सुराज (अनिल माधव दवे की लिखी पुस्तक थी), पढ़ने योग्य है रितेश की कहानी में उस शिवाजी का अभाव है।

दरअसल शिवाजी इतना विस्तृत विषय है जिसे मूवी के लिये किसी पेशेवर लेखक से लिखवाना था। यहां पर मैं शिवाजी की ऐतिहासिक कहानी नहीं बता पाऊंगी, पर ये फिल्म क्यों और क्यों नहीं देखी जाये बता सकती हूँ।

शुरू में लड़ाई के दृश्यों और चैप्टर्स के ज़रिये कहानी बताने के तरीके से लगा मैं धुरंधर पार्ट 3 देख रही हूँ

फिल्म के सेट भव्य है, पारंपरिक वेशभूषा का तो कहना क्या। एआई और टेकनीक के जरिये, जानवरों और युद्ध के बड़े सेट दिखाये गये जो शिवाजी के छापामार युद्ध को धता बताते हैं। बैकग्राउंड म्यूजिक धमाकेदार है। पटकथा थोड़ी कसावट मांगती है। रितेश देशमुख तीन की जगह एक भूमिका निभाते तो शायद अपनी भूमिका से न्याय कर पाते कहानी में कोई नया प्रस्तुतीकरण नहीं था। जैसे-- जैसे कहानी आगे बढ़ती है पकड़ ढीली हो जाती है घटनायें जल्दी-जल्दी बदली गई है क्योंकि प्लाट बड़ा था सब कुछ एक ही फिल्म में समेटने की जगह, कोई एक हिस्सा फोकस करते या तो शिवाजी का प्रबंधन या युद्ध कौशल। इस सब में घरेलू स्तर पर शिवाजी का जीजाबाई से प्रेरित जीवन छूटा सा लगता है, हालांकि रितेश देशमुख ने फिल्म को संभालने की पूरी कोशिश की है पर फिल्म निर्देशक का रोल उन पर हावी था। निर्देशन, सिनेमेटोग्राफी फिल्म को भव्य रूप देते हैं।

कुल मिलाकर इस फिल्म में क्षमता तो बहुत थी पर इतनी मजबूत ऐतिहासिक कहानी को, कमज़ोर पटकथा के चलते प्रभावहीन होना पड़ा। जिन्हें इतिहास में दिलचस्पी है वह जरूर देखें और स्वयं निर्णय करें।

जीवन क्या है?

नितिन वैद्य

यह प्रश्न जब हृदय में उठता है, तो केवल बुद्धि नहीं, आत्मा भी उत्तर खोजने लगती है। जीवन उन लोगों के लिए अनुपम वरदान है, जो हर क्षण को प्रसाद मानकर स्वीकार करते हैं, जो छोटे-छोटे पलों में भी आनन्द ढूँढ लेते हैं। परन्तु वही जीवन उन लोगों के लिए बोझ बन जाता है, जो हर घटना को तौलते हैं, हर रिश्ते को परखते हैं और हर परिस्थिति का अत्यधिक विश्लेषण करते रहते हैं।जीवन कोई पहेली नहीं, जिसे बैठकर सुलझाया जाए। जीवन तो एक अनुभूति है जिसे केवल जिया जा सकता है, महसूस किया जा सकता है। इसे शब्दों में बाँधने का प्रयास अवश्य किया जा सकता है, पर इसकी सम्पूर्णता को शब्द कभी व्यक्त नहीं कर सकते। जीवन एक रहस्य है और यह रहस्य धीरे-धीरे खुलता है, तब जब मनुष्य संघर्षों को स्वीकार करता है। जीवन प्रश्न नहीं, एक अभियान है।जीवन सवाल नहीं, एक चुनौती है। जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य रखता है, जो आँधियों में भी दीपक की तरह जलता रहता है, जो टूटकर भी बिखरता नहीं बल्कि स्वयं को फिर से सँजो लेता है , वही जीवन के वास्तविक अर्थ को समझ पाता है।कई लोग जीवन को समझने के लिए प्रबंधन की पुस्तकों का सहारा लेते हैं, ज्ञानीजनों के चरणों में बैठते हैं। वहाँ से उन्हें सांत्वना मिलती है हृदय को क्षणिक शांति मिलती है। किन्तु सांत्वना और समाधान में बहुत अंतर होता है। सांत्वना आँसुओं को पोंछ देती है, पर समाधान उन आँसुओं का कारण मिटा देता है। और जीवन का सच्चा मार्ग समाधान से ही प्रशस्त होता है।

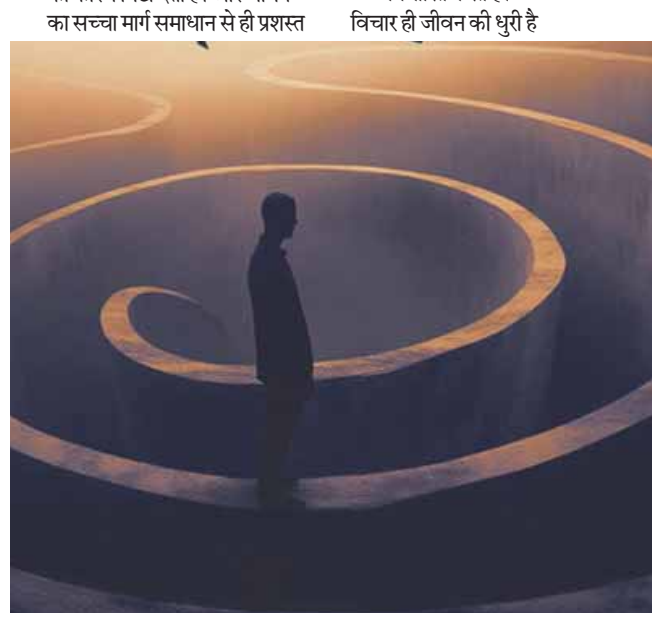

जीवन का सबसे सूक्ष्म और प्रभावशाली तत्व है संगति।

मनुष्य जैसा देखता है, जैसा सुनता है, जैसा वातावरण उसे घेरता है ,वैसा ही वह बनने लगता है। हम जिन लोगों के साथ समय बिताते हैं, जिनके साथ अपने सुख-दुःख बाँटते हैं, उनके विचार अनजाने ही हमारे भीतर घर बना लेते हैं। यही विचार हमारे कर्म बनकर हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं।

विचार ही जीवन की धुरी है

यदि वे प्रेम, करुणा, सकारात्मकता और विकास से जुड़े हों, तो वे हमें ऊँचाइयों तक पहुँचा देते हैं। किन्तु यदि वही विचार ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार और नकारात्मकता से जुड़ जाएँ, तो मनुष्य का पतन निश्चित है। संगति से उपजे यही विचार जीवन के रहस्य की कुंजी हैं। जीवन सरल नहीं है।बिना संघर्ष के कोई महान नहीं बनता। पत्थर जब तक हथौड़े और छेनी के आघात नहीं सहता, तब तक वह पूजनीय प्रतिमा नहीं बनता। उसी प्रकार मनुष्य भी कठिनाइयों की अग्नि में तपकर ही कुन्दन बनता है।

दुःख हमें तोड़ने नहीं आते, वे हमें गढ़ने आते हैं।

जीवन हर दिन हमें कुछ सिखाता है कभी मुस्कुराकर, कभी रुलाकर।जो विनम्रता से सीख लेता है, वही आगे बढ़ता है। जो झुकना जानता है, उसी में जीवन की सच्ची शक्ति होती है। अकड़ और अहंकार तो निर्जीवता के प्रतीक हैं; जीवन तो प्रवाह है, लचीलापन है, समर्पण है अतः जीवन को केवल जीना नहीं, उसे महसूस करना चाहिए। *हर सुबह को एक नयी आशा की तरह, हर संघर्ष को एक अवसर की तरह और हर सम्बन्ध को ईश्वर के वरदान की तरह स्वीकार करना चाहिए। जीवन तब सुंदर बनता है, जब हम उसे शिकायत नहीं, कृतज्ञता के साथ जीते हैं।जब हम परिस्थितियों को दोष नहीं देते, बल्कि स्वयं को सशक्त बनाते हैं।आइए, जीवन को जिंदादिली, श्रद्धा और संवेदनशीलता के साथ जियें

*क्योंकि जीवन क्षणभंगुर अवश्य है, पर उसकी अनुभूति अमर है।श्री कृष्ण शरणम् मम।

दृष्टिकोण

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

खुद से मिलाती है... कला !

वेनिस यानी पानी में तैरता शहर इतिहास में दिलचस्पी रखने वालों के लिए खास जगह है, लेकिन कला की दुनिया में मुकाम बहुत ऊंचा है। वेनिस का बिएनाले दुनिया का सबसे पुराना आर्ट फेस्टिवल है। इसमें आर्ट, डांस, आर्किटेक्चर, सिनेमा और थिएटर शामिल हैं। कला के इस महासम्मलेन में कला और आर्किटेक्चर पर प्रदर्शनियां हर साल लग रही हैं। आर्किटेक्चर से जुड़ा काम एक साल छोड़ कर पेश किया जाता है। अप्रैल की शुरुआत में इयू ने कहा था कि वह बिएनाले में रूस की वापसी पर बीस लाख यूरो का ग्रांट वापस ले रहा है, जिसे उसने गलत माना, क्योंकि मॉस्को, 'यूक्रेनी कला को मिटाना चाहता है। बिएनाले ने पहले इस बात पर जोर दिया था कि किसी भी बहिष्कार या सेंसरशिप को खारिज करता है। वह किसी भी हालत में रूस को रोक नहीं सकता, क्योंकि देश का अपना पैवेलियन है।

जूरी ने कहा कि उन देशों के कलाकारों को अवॉर्ड नहीं देगी, जिनके नेताओं पर आपराधिक मामले हैं। यह फैसला रूस और इजराइल को लेकर था। बिएनाले की जूरी हिस्सा लेने वाले एक सौ दस कलाकारों में से गोल्डन और सिल्वर लायन अवॉर्ड के विजेताओं को चुनने के लिए ज़िम्मेदार है, जो 9 मई को शुरू होगा। विदेश मंत्रालय ने कहा कि इजराइली कलाकारों को बाहर रखने से बिएनाले बेहिसाब विचारों की खुली कलात्मक जगह से बदलकर झूटे इजराइल विरोधी राजनीतिक शिक्षा के तमाशे में बदल गया है। वेनिस आर्ट बिएनाले शुरू (2024) हुआ तो

इजराइल नहीं था। देश के बंद पैवेलियन के दरवाजे पर लिखा था यह तभी खुलेगा, + जब सीजफायर-बंधकों पर समझौता होगा। इजराइल ने पिछले साल बिएनाले में हिस्सा नहीं लिया था। इजराइल का पैवेलियन फिलहाल बंद है।

बिएनाले में इजराइल वापसी कर रहा है, जिससे बॉयकॉट की नई मांगें उठ रही हैं और कार्रवाई का वादा किया जा रहा है। इजराइल के आर्टिस्ट बेलू-सिमियन फैनारू का कहना है- कला, उम्मीद और खुलेपन का जरिया है। यह ऐसी जगह है जहां इंसानियत मुश्किलों और उलझनों में भी खुद से मिल सकती है। दूसरे से बातकरने की जगह होना चाहिए, न कि अलग-थलग करने का तरीका।

जूरी की गैर-मौजूदगी में टॉप आर्टिस्ट और बेस्ट नेशनल पैवेलियन को दो गोल्डन लायन पुरस्कार दिए जाएंगे। जिन टिकट होल्डर्स ने बिएनाले गार्डन्स और आर्सेनल को देखा है, वोट कर सकेंगे।